आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11.
वर्ष : 66 ★ अंक : 7 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जुलाई, 2009 ★ श्रावण 2066

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

मंगल-मूल, धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'॥

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

जयगुरु हस्ती **जयगुरु हीरा** **जयगुरु मान**

पीयें धोवन पानी, बोले मीठी वाणी यही कहे जिनवाणी ।

गहने
अलंकार
नक्काशीवाले
चमकिले
तेजस्वी
ओजस्वी

॥ स्वर्णतीर्थ ॥

प्रभावी
अदभूत
अक्षय
अर्थपूर्ण
अष्टपैलू
अगम्य
मोहर
अनमोल
अप्रतिम
माणिक

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स
सोने ◆ चांदी हिरा ◆ मोती
०२५७-२२२५९०३,३९०३ जलगाँव ◆ औरंगाबाद ०२४०-२२४४५२०,२२

जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,

जयपुर-302003(राज.)

फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड

जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081

E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57

डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2009-11

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

मंदा य फासा बहु-लोहणिज्जा,
तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा।
रक्खेज्ज कोहं, विणएज्ज माणं,
मायं न सेवे, पयहेज्ज लोहं।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 4.12

अनुकूल स्पर्श मन ललचाते,
उन पर मन में न प्रीति धरे।
कर क्रोध दूर और मान हटा,
माया सेवे न लोभ हरे।।

जुलाई 2009
वीर निर्वाण संवत् 2535
श्रावण 2066

वर्ष 66 अंक 7

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 11000/-
आजीवन देश में : 500 रु.	संरक्षक सदस्यता : 5000/-
आजीवन विदेश में : 5000 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 3000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail: jinvani@yahoo.co.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	परिग्रह-विरमण-व्रत और नैतिकता	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	सुदृढ़ हो विनय एवं संस्कारों की नींव	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
शोधालेख -	'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' और आधुनिक समाज	-डॉ. श्वेता जैन	17
चिन्तन -	चिन्ता, चिन्तन एवं चिन्दानन्द	-श्रीमती सुशीला बोहरा	27
जीवन व्यवहार-	अशान्ति के बीज से शान्ति का फल नहीं	-श्री जितेन्द्र चोरड़िया 'प्रेक्षक'	32
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Jñānāticāra	-Dr. Priyadarshana Jain	35
विशिष्ट प्रश्नोत्तर-	उपासकदशांग सूत्र से पाएँ तात्त्विक बोध(16)	-संकलित	41
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (62)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	44
उपन्यास-	सुबह की धूप (5)	-श्री गणेशमुनि जी शास्त्री	51
नारी-स्तम्भ-	पानी की कहानी हमने कितनी जानी	- श्रीमती अभिलाषा हीरावत	56
युवा-स्तम्भ-	देह भोग का साधन नहीं	-श्री पदमचन्द गाँधी	60
बाल-स्तम्भ-	बहन मिल गयी	- श्री दिनेश मुनि जी म.सा.	63
स्वास्थ्य-विज्ञान-	रिफ्लेक्सोलॉजी एक्यूप्रेशर से उपचार	- डॉ. चंचलमल चोरडिया	67
विचार-	Head & Heart	-Miss Minakshi Surana	16
	चिन्तन-कण	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	73
गीत/कविता-	हो सफल मनोरथ मेरा	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	31
	खण्ड-खण्ड होती मानवता	- डॉ. सागरमल जैन	39
	पायें मुक्ति पथ की धारा	- श्री मनमोहनचन्द बाफना	50
प्रेरक प्रसंग-	वह पानी मुल्तान गया	- श्री जशकरण डागा	49
प्रतियोगिता-	आओ स्वाध्याय करें त्रैमासिक प्रतियोगिता (22)		74
परिणाम-	आओ स्वाध्याय करें (21) प्रतियोगिता परिणाम		76
संवाद-	समस्या-समाधान (25)		80
साहित्य समीक्षा-	नूतन साहित्य		83
चातुर्मास सूची-	रत्नसंघ के सन्त-सतियों के चातुर्मास		85
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		93
	साधार-प्राप्ति-स्वीकार		111

सम्पादकीय

परिग्रह-विरमण-व्रत और नैतिकता

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

मनुष्य को परिग्रह प्रिय है, क्योंकि इसमें उसे जीवन सुरक्षित अनुभव होता है। यही नहीं, समाज में मान, प्रतिष्ठा का भी वह एक मुख्य आधार माना जाता है। परिग्रह-प्राप्ति का एक नशा होता है जो व्यक्ति को जीवन की सनातन सच्चाई से दूर कर परिग्रह के अर्जन में ही सफलता एवं आत्मतुष्टि का अनुभव कराता है। किन्तु परिग्रह बढ़ने के साथ मनुष्य में तनाव, आकांक्षा, सुखभोग की रुचि, परवस्तु की दासता, अहंकार, परमुखापेक्षिता आदि की वृद्धि होती है, जो मनुष्य को दुःख की ओर धकेलती है। परिग्रह एवं उसकी लोलुपता मनुष्य को दासता में आबद्ध करती है।

भगवान् महावीर ने परिग्रह को पाप की कोटि में प्रस्तुत किया है। वस्तु, क्षेत्र, सम्पत्ति आदि को अपनी मानना एवं उसमें आसक्ति भाव में आबद्ध होना परिग्रह है। यह परिग्रह मनुष्य को चारों ओर से जकड़ लेता है। इसीलिए इसे परिग्रह कहा जाता है। जो जड़ पदार्थों में अपनी सुरक्षा एवं मान-प्रतिष्ठा की तलाश करता है, वह सामाजिक स्तर पर भले ही मान्य होता हो, किन्तु आध्यात्मिक स्तर पर वह मिथ्यात्व से ग्रस्त होता है। उसकी चेतना जड़ता एवं पराधीनता की ओर अग्रसर होती है।

तत्त्वार्थ सूत्र में मूर्च्छा को परिग्रह कहा गया है। यह मूर्च्छा एक प्रकार की वह बेहोशी है जो आत्म-चेतना के अनुभव को कुण्ठित कर जड़ पदार्थों में जीवन का आभास कराती है। मूर्च्छा का अर्थ आसक्ति किया जाता है। अर्थात् जो भी संचित द्रव्य है उसमें आसक्ति होना परिग्रह है। बिना आसक्ति के द्रव्य का संचय कठिन है। आसक्ति है, इसीलिए उसके विनाश पर खेद या दुःख होता है। सूत्रकृतांग के अनुसार मनुष्य को बंधन में डालने वाला परिग्रह ही है-

बुज्झिज्ज तिउट्टेज्जा, बंधणं परिजाणिया।
किमाह बंधणं वीरो? किं वा जाणं तिउट्टई।।
चित्तमंतमचित्तं वा, परिगिज्झ किसामवि।

अन्नं वा अणुजाणाति, एवं दुक्खा ण मुच्चइ।।

-सूत्रकृतांग सूत्र, प्रथम अध्ययन, प्रथम उद्देशक, गाथा 1-2

बंधन को जानकर ही बंधन से मुक्त हुआ जा सकता है। प्रभु वीर ने बंधन किसे कहा है तथा क्या जानकर उसे तोड़ा जा सकता है? चेतन अथवा अचेतन किसी का भी परिग्रह बंधन है, जो परिग्रह का अनुमोदन करता है वह भी दुःख से मुक्त नहीं होता है, क्योंकि उसकी मान्यता ही ठीक नहीं है।

बंधन का सबसे बड़ा कारण परिग्रह है। जिसके पास मकान है वह उस मकान से बंधा हुआ है। जिसके पास धन है वह धन से बंधा हुआ है। जिसके पास जमीन है वह जमीन से बंधा हुआ है। जिसके पास कुछ नहीं है तथा जिसके मन में उसको पाने की इच्छा भी नहीं है, वह कहीं बंधा हुआ नहीं है। साधु-साध्वी इसी कोटि में आते हैं। न उनका अपना मकान है, न धन-धान्य है, न जमीन जायदाद है, इसलिए वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर निर्भय होकर विचरण करते रहते हैं।

परिग्रह रखना नैतिक है या अनैतिक यह एक बड़ा महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। आध्यात्मिक स्तर पर तो परिग्रह से पूर्ण विरमण ही उपादेय है। किन्तु नैतिक दृष्टि से चिन्तन किया जाय तो ज्ञात होता है कि दूसरे के अधिकार की वस्तु को बलात् अपनी बनाना अनैतिक है। यही नहीं दूसरों के लिए आवश्यक हिस्से पर अपना अधिकार कर लेना भी अनैतिक है। उदाहरण के लिए परिवार में आठ व्यक्ति एक साथ रहते हैं और घर में 16 आम आए हैं। इनमें से यदि दो-दो आम सभी को दिए जाए तो सम्यक् वितरण होगा। कहीं बालक, रोगी, वृद्ध आदि को ध्यान में रखकर भी अलग वितरण किया जा सकता है। किन्तु एक-दो व्यक्ति मिलकर ही सारे आम खा जाएं और दूसरों को कुछ भी देने से मना करें तो यह अनैतिक आचरण होगा। इसी प्रकार एक पिता की सम्पत्ति पर कोई पुत्र अपना अधिकार जता कर दूसरे को उपयुक्त अंश न दे तो यह भी अनैतिक आचरण है। इसी प्रकार धरती पर सबके लिए भक्षणीय अन्न पर कुछ व्यक्ति ही अधिकार कर लें एवं दूसरों को उनकी प्राप्ति से वंचित रखें तो यह भी अनैतिक आचरण कहा जाएगा।

हम अपने जीवन के लिए संघर्ष कर सकते हैं, किन्तु दूसरों को उनके प्राथमिक अधिकारों से वंचित नहीं कर सकते। प्रभु महावीर ने जो परिग्रह विरमण व्रत का विधान किया है, उससे व्यक्ति को स्वयं को तो दुःख से मुक्ति

मिलती ही है, साथ ही अन्य प्राणियों के प्राथमिक अधिकारों की भी रक्षा होती है। मैं यदि परिग्रह का परिमाण करता हूँ तो एक सीमा के पश्चात् संचय की वृत्ति से विराम पाता हूँ। यह विराम तभी हो सकता है जब परिग्रह को पाप समझा जाय तथा दूसरों के अधिकारों का भी चिन्तन किया जाय। मैं न्याय-नीति से अथवा अनीति से अर्जन करके यदि समस्त वस्तुओं का स्वामी बन जाता हूँ तो क्या मेरा कर्त्तव्य नहीं होता कि मैं दुनिया के हर प्राणी की रक्षा करने में उन वस्तुओं का सदुपयोग करूँ ?

शान्ति का मार्ग परिग्रह रखना नहीं, अपितु उसका परिमाण कर उससे पूर्ण रूप से विरत होना है। जो वस्तु या धन को अधिक महत्त्व देता है वह अन्य मनुष्य का मूल्यांकन उन वस्तुओं एवं धन के आधार पर करता है। जो व्यक्ति के चारित्रिक गुणों को महत्त्व देता है वह व्यक्ति का मूल्यांकन भी उन गुणों के आधार पर करता है। वस्तु एवं धन को अधिक महत्त्व देने वाला व्यक्ति मानवता से भी विलग हो जाता है। वह दूसरों का शोषण करके, उन्हें पीड़ित करके, न्यायोचित पारिश्रमिक न देकर धनपति बनने का प्रयास करता है, जो नैतिक आचरण नहीं कहा जा सकता। अपने समान दूसरों को महत्त्व देने वाला, उनमें भी जीवन की आकांक्षा को समझने वाला व्यक्ति परिग्रह के उन्माद में नहीं जीता, वह धन-सम्पत्ति वाला होकर भी परहित में निरत रहता है। कई बड़े उद्योगपति दूसरों को रोजगार प्रदान करते हैं, किन्तु जब स्वयं अधिकाधिक धन हड़पने की एवं सुविधाओं का उपभोग करने की लालसा में रहते हैं तो यह भी नैतिक आचरण नहीं कहा जा सकता।

शरीर की, परिवार की आवश्यकताएँ उतनी नहीं होती, जितनी मनुष्य की तृष्णा होती है। यह तृष्णा दुःख के सागर में डूबोती रहती है। परिग्रह का ऐसा जंजाल होता है कि जिसको व्यक्ति छोड़ना चाहते हुए भी सरलता से नहीं छोड़ पाता है। उसके लिए बड़ी हिम्मत की आवश्यकता होती है। राजपाट को छोड़कर दीक्षित होने वाले राजकुमारों एवं राजाओं की कमी नहीं रही। आज भी कतिपय श्रेष्ठी सम्पूर्ण धन-सम्पत्ति का त्याग कर संयम जीवन अंगीकार कर रहे हैं। फिर भी इसे एक कठिन मनोबल ही कहा जाएगा।

परिग्रह के दो रूप हैं- द्रव्य परिग्रह और भाव परिग्रह। भाव परिग्रह कषाय रूप है और द्रव्य परिग्रह बाह्य क्षेत्रवास्तु, धन-धान्य, हिरण्य-सुवर्ण,

द्विपद-चतुष्पद, कुविय धातु आदि है। शेयर का धन्धा हो या बैंक में जमा राशि, वह भी बाह्य परिग्रह में ही आएगा। गृहस्थ के लिए बाह्य परिग्रह एक अनिवार्य आवश्यकता है। क्योंकि उसके बिना जीवन का संचालन नहीं होता। गृहस्थ के पास कौडी न हो तो उसे कौडी का माना जाता है। किन्तु धन-सम्पत्ति आदि में अनासक्त भाव से व्यवहार करना साधक जीवन में सम्भव है। आज परिग्रह की दौड़ में हर व्यक्ति आगे निकलना चाहता है। परिमाण करने का मन में भाव लाना कठिन प्रतीत होता है। किन्तु सुखी जीवन का राजमार्ग परिग्रह का परिमाण है और यह नैतिकता का तकाजा भी है। अमेरिका जैसा देश यदि भूमि के अधिकतम संसाधनों का दोहन कर दूसरे देशों के लिए कुछ भी नहीं छोड़ता है तो यह भी अनैतिक आचरण कहा जाएगा।

परिग्रह हिंसा को बढ़ावा देता है। आरम्भ और परिग्रह का युग्म है। जहाँ परिग्रह है वहाँ आरम्भ अवश्य है। हिंसा के लिए आरम्भ शब्द का भी प्रयोग होता है। प्रभु महावीर ने परिग्रह को धर्माचरण में बाधक निरूपित किया है। हम धन के व्यवस्थापक मात्र हैं, गृहस्थ जीवन चलाने के लिए उसकी व्यवस्था करते हैं, किन्तु उसके प्रति अनावश्यक रूप से गृद्धता हमें दुःखी बनाती है। वह धन सुख का साधन न होकर दुःख का निमित्त बनता है। परिवार, समाज और धर्म स्थानों में भी धन को लेकर झगड़े होना आम बात है। जहाँ धन है वहाँ लूट-खसोट है, ईर्ष्या-द्वेष है। किन्तु अनासक्ति भाव से जहाँ धन का सदुपयोग है वहाँ धर्म भी निवास करता है, वहाँ सबका सद्भाव और सबकी शुभकामनाएँ स्वतः प्राप्त होती हैं।

गांधीजी का ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त इसमें उपयोगी है। ट्रस्ट का कोई मालिक नहीं होता, अपितु वह व्यवस्थापक होता है, इसी प्रकार हम परिवार हेतु संगृहीत धन के व्यवस्थापक हैं। पारिवारिक कार्यों के लिए अथवा सामाजिक कार्यों के सम्पादन के लिए न उतनी आसक्ति की आवश्यकता होती है और न ही धन की। यह आसक्ति ही है जो व्यक्ति को अनैतिक आचरण करने के लिए प्रेरित करती है। श्रावक न्याय-सम्पन्न वैभव वाला होता है, किन्तु अनैतिकता के धरातल पर उतर कर अर्जन के लिए तत्पर नहीं होता। परिग्रह-परिमाण रूप नैतिकता को सामाजिक न्याय की दृष्टि से भी उपादेय माना जा सकता है, क्योंकि परिग्रह-परिमाण सबके प्रति न्याय का मार्ग प्रशस्त करता है।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

(स्कन्ध-निरुपण के प्रकार)

से किं तं खंधे?

खधे चउव्विहे पण्णत्ते। तं जहा- 1नामखंधे 2ठवणाखंधे 3 दव्वखंधे 4भावखंधे।

से किं तं नामखंधे?

नामखंधे जस्स णं जीवस्स वा अजीवस्स वा जाव खंधे त्ति णामं कज्जति। से तं णामखंधे।

से किं तं ठवणाखंधे?

ठवणाखंधे जण्णं कट्ठकम्मे वा जाव खंधे इ ठवणा ठविज्जति। से तं ठवणाखंधे।

से किं तं दव्वखंधे?

दव्वखंधे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा- 1आगमतो य 2नोआगमतो य।

से किं तं भावखंधे?

भावखंधे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा- 1आगमतो य 2 नोआगमतो य।

-अनुयोगद्वारसूत्र, स्कन्ध निरूपण, सूत्र 52-54, 56, 69

प्रश्न : भगवन्! स्कन्ध का क्या स्वरूप है?

उत्तर : आयुष्मन्! स्कन्ध के चार प्रकार हैं। वे इस तरह- 1.नामस्कन्ध, 2.स्थापनास्कन्ध, 3. द्रव्यस्कन्ध, 4. भावस्कन्ध।

प्रश्न : भगवन्! नामस्कन्ध का क्या स्वरूप है?

उत्तर : आयुष्मन्! जिस किसी जीव या अजीव का यावत् स्कन्ध यह नाम रखा जाता है, उसे नामस्कन्ध कहते हैं।

प्रश्न : भगवन्! स्थापनास्कन्ध का क्या स्वरूप है?

उत्तर : आयुष्मन्! काष्ठादि में 'यह स्कन्ध है' इस प्रकार का जो आरोप किया जाता है, वह स्थापनास्कन्ध है।

प्रश्न : भगवन्! द्रव्यस्कन्ध का क्या स्वरूप है?

उत्तर : आयुष्मान्! द्रव्यस्कन्ध दो प्रकार का है। यथा- 1. आगमद्रव्य-स्कन्ध और 2. नोआगमद्रव्यस्कन्ध।

प्रश्न : भगवन्! भावस्कन्ध का क्या स्वरूप है?

उत्तर : आयुष्मन्! भावस्कन्ध दो प्रकार का कहा है। वह इस तरह है-

1. आगमभावस्कन्ध, 2. नोआगमभावस्कन्ध।

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- धर्म से पहले इहलोक सुधरता है, फिर परलोक। धर्म से पहले इस जीवन में शान्ति मिलती है, फिर आगे।
- धर्म मानव जीवन के लिए उतना ही आवश्यक है, जितना वायुसेवन।
- कामना के जाल को वही काट सकता है, जिसके पास ज्ञान का बल है।
- मनुष्य जीवन का महत्त्व व्रत-नियम से है।
- राजनीति दण्ड से जीवन-सुधार चाहती है और धर्मनीति प्रेम से मन बदल कर।
- अनर्थदण्ड के प्रमुख कारण हैं- 1. मोह, 2. प्रमाद और 3. अज्ञान।
- किसी की उन्नति देखकर ईर्ष्या करना या उसकी हानि की सोचना अनर्थदण्ड है।
- अपध्यान में बाहरी हिंसा नहीं दिखती, परन्तु वहाँ अन्तरंग हिंसा है।
- अपध्यान वहाँ होता है, जहाँ तीव्र आसक्ति है।
- मनुष्य को ज्ञान का तीर लगे तो एक ही काफी है और नहीं लगे तो जन्मभर सुनते रहने पर भी कोई लाभ नहीं होता।
- मनुष्य के मन पर माया की झिल्ली आने से वह सत्तत्त्व को नहीं देख पाता और सत्कर्म में चल भी नहीं सकता।
- पारिवारिक प्रार्थना, साप्ताहिक स्वाध्याय सुसंस्कार के साधन हैं। इनके साथ निर्व्यसनी, प्रामाणिक और शुद्ध व्यवहार वाला होना आवश्यक है।
- जिसके द्वारा हित-अहित, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य और धर्माधर्म का बोध हो, वही सच्चा ज्ञान है। ज्ञान के बिना विज्ञान जीवन में हितकारी नहीं हो सकता।
- तप के साथ क्रोध आदि विकारों का त्याग करना उसका भूषण है। कहा है- ''सोहा भवे उग्गतवस्स खंती।'' अर्थात् क्षमाभाव से उग्र तपस्या की शोभा है।
- बाहरी विषमता दूर करने से शान्ति नहीं होगी। उससे कुछ समस्याएँ हल हो सकती हैं, पर शान्ति के लिए समता आवश्यक है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

सुदृढ हो विनय एवं संस्कारों की नींव

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

जैनाचार्य पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा बालकेश्वर, मुम्बई में मंगलवार 20 अगस्त, 2002 को फरमाए गए प्रवचन के प्रस्तुत अंश का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता द्वारा किया गया है।-सम्पादक

तीर्थंकर भगवान् महावीर की आदेय-अंतिम वाणी में मोक्ष के मार्ग स्वरूप ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना करने के लिए विनय की चर्चा की जा रही है। जैसे नदी और तालाब में उतरने के लिये घाट होते हैं, जंगल में प्रवेश के लिये पगडंडी होती है, ऊपर की मंजिल में चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ होती हैं, नगर में प्रवेश करने के लिये दरवाजे होते हैं उसी तरह ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना के लिये विनय गुण की आवश्यकता होती है।

विनय अर्थात् समर्पण। विनय अर्थात् श्रद्धा। जिसके जीवन में विनय गुण पाया जाता है, वह अपनों में आत्मीयता रखे, उसमें तो क्या आश्चर्य? वह अपने आचरण से परायों को भी अपना बना लेता है।

स्कूल में पढ़ने वाले एक विद्यार्थी को सारे अध्यापक चाहते हैं। वह कापी में लिखने बैठता है तो अक्षर उतने सुन्दर नहीं, उद्यम करने बैठता है तो मुश्किल से पचास से ऊपर कभी नम्बर नहीं आये। बुद्धि मन्द है, अक्षर मोती जैसे नहीं हैं। चतुराई भी नहीं है, पर उसके मन में बड़ों के प्रति सम्मान है, आदर है। बड़ों के प्रति ही नहीं किसी विद्यार्थी की कभी-कोई सेवा करने का मौका आया तो वह जांत-पांत भुलाकर, अपने पराये की बिना भेदरेखा खींचे सेवा करता है। नतीजा है कक्षा के जितने सहपाठी हैं उसको चाहते हैं, स्कूल में जितने शिक्षक हैं उसको पसन्द करते हैं।

एक दूसरा विद्यार्थी है। वह कक्षा में प्रथम आता है, विचक्षण है, बुद्धि सम्पन्न है। हर बात को इशारे में समझता है ऐसी प्रतिभा है। अच्छे नम्बर लाता

है, पर एक दुर्गुण है वह अहंकारी है। हर व्यक्ति की हंसी उड़ाता है, किसी का उपहास करता है। हर किसी की चमड़ी खराब है तो उसे उपालम्भ देता है, किसी के कपड़ों में सलवट है, तो उसका तिरस्कार करता है। सहपाठियों की बात जाने दीजिये शिक्षक से कभी बोलते-बोलते चूक हो जाय तो उसकी हंसी उड़ाते देर नहीं करता। वह उद्दण्ड है इसलिये परीक्षा के पहले स्कूल से एक पत्र दिया गया कि आपको स्कूल से बहिष्कृत कर दिया गया है, स्कूल आने की जरूरत नहीं।

मतलब क्या? बुद्धि की मंदता क्षम्य है, शरीर नहीं संभाल पाता वह क्षम्य है, पुरुषार्थ में कमी भी सहन कर ली जाती है, पर उद्दण्डता, बड़ों का अविनय करना, उनकी आशातना करना, उनका तिरस्कार करना क्षम्य नहीं है। इसीलिये शास्त्रकार कह रहे हैं-अबोहि कलुसं कडं।

जो बड़ों की आशातना करता है, उनका तिरस्कार करता है, उन्हें नीचा गिराने की चेष्टा करता है उसे ज्ञान नहीं मिलता। कदाचित् ज्ञान मिल जायेगा तो वह अहंकार बढ़ायेगा। वह अपना भी नाश करने वाला होगा, दूसरों को भी असमाधि उत्पन्न करने वाला होगा। ऐसे ज्ञान वाले को मोक्ष नहीं है।

पूर्वधर भी अध्ययन करते थे, पर जिनकी वृत्ति आग्रह वाली थी उन्हें ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् भी अज्ञानी कह दिया गया। नौ पूर्व तक का ज्ञान जानने वाला भी अज्ञानी हो सकता है। अगर उसके जीवन में तीव्र विषय की आकांक्षा है। अगर वह कषाय की मात्रा को रोक नहीं पा रहा है, तीव्रता में कमी नहीं करता है तो ऐसे पूर्वों के ज्ञानी भी डूबते रहे हैं।

जीवन निर्माण के लिए विनय चाहिये। विनयशील व्यक्ति अपने आपका दमन करने में समर्थ होता है। यही बात वीतराग वाणी में कही जा सकती है-

अप्पाचेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो।
अप्पा दंतो सुही होइ, अस्सिं लोए परत्थ य॥

कहते हैं- अपनी इन्द्रियों का, अपने कषायों का, अपनी विकृतियों का स्वयं दमन करना श्रेष्ठ है। अगर आप अपने आचरण को स्वयं नहीं सुधारेंगे तो दूसरों के द्वारा दण्डित किये जायेंगे।

विनय का एक अर्थ अनुशासन भी किया जाता है। हर समाज में, संघ में और समूह को चलाने में अनुशासन आवश्यक होता है। जब नियम से-कर्त्तव्य से समझकर उसकी आराधना कर ली जाती है तो फिर दण्डित होने का काम नहीं। और यदि व्यक्ति स्वयं अनुशासन नहीं पालता तो उस स्थिति में दंडित किया जाता है। अपना कई दिनों से विषय चल रहा है- सारणा, वारणा, धारणा।

हर समाज, हर समूह और हर घर में एक बात याद दिलाई जा रही है कि वह कुल की मर्यादा को जाने, धर्म के अनुरूप आचरण करे। क्या करना चाहिये, क्या नहीं करना चाहिये, क्या खाना चाहिये, क्या नहीं खाना चाहिये, समझाया नहीं जाता तो अकरणीय को छोड़ेंगे कैसे?

आज मूल में भूल हो रही है। जो स्वतः सीखा जाता था उसे सिखाना पड़ता है। गन्दा रहना कोई व्यक्ति नहीं चाहता। हर कोई सभ्यता से रहना चाहता है। यह स्वतः सीखता है, लेकिन सद्गुणों की बाते सिखानी पड़ती है। रिवाज क्या? सीखना कब? महानगरों में यह भी एक बड़ी समस्या है। मुम्बई, कलकत्ता, मद्रास, बैंगलोर जैसे शहरों में बच्चों को रीति-रिवाज़ और कुल मर्यादाओं की बात सिखानी पड़ती है। क्योंकि बाहर का ऐसा व्यवहार बन गया। अन्य मतियों के कार्यक्रम ऐसे बन गये जिससे न जाति का भान रहा, न कुल का और यहाँ तक कि धर्म का गौरव भी नहीं रहा।

महाजन समाज के लिए कहा जाता था कि वे ब्रह्म मुहूर्त में उठने वाले होते थे। मैं किसी व्यसनी के लिए, अनाड़ी-अनार्य के लिए नहीं कह रहा हूँ, मैं आपके लिए कह रहा हूँ। सभ्य समाज में भाग्यवान-धनवान उसे कहते हैं जो सूर्योदय के पहले उठता है। सूर्योदय के बाद उठने वालों को राजस्थानी भाषा में दरिद्री कहते हैं। भाग्यशाली हैं जो उठने के साथ प्रभु का स्मरण करते हैं।

आज सिखाना किसे? पूछें किससे? सिखाने वाला पूछने वाला खुद आठ बजे उठता है फिर सिखावें कौन और सीखे कौन? मैं तो मेरी बात कहूँ- सूर्योदय के पश्चात् आवश्यकता से धोवन पानी या गर्म पानी की जरूरत पड़े, हम घर में चलें जायें तो.....? कभी बंगलों के बाहर बैठे लोग जिन्हें आप

वाचमेन कहते हैं, दरवाजा खोल दे और संत भीतर चले जायें तो कभी बच्चा उठा मिलता है- महाराज! मत्थएण वंदामि। मम्मी तो अभी सो रही है। जाग कौन रहा है? बच्चा जग रहा है, मम्मी सो रही है। अब उन बच्चों को कौन शिक्षा दे? संस्कार कैसे मिलें?

मैंने ऐसे लोगों को देखा है जो राज्य में मंत्री हैं, नगर में नगराध्यक्ष हैं, मिल संभालते हैं, स्वयं बीमार हैं तब भी प्रहर रात्रि के पहले सोने का उपक्रम करते हैं। टेलीफोन का चोगा उतार कर सोते हैं जिससे रात में कोई जगावे नहीं। सोने के पहले ऐसे भी संस्कारवान बालक हैं जो माता-पिता की सेवा करके सोते हैं। समय के साथ सोते हैं और समय के साथ उठते हैं। जिन घरों में जल्दी उठने का क्रम है, वे साथ बैठकर प्रार्थना कर सकते हैं। सामायिक आदि साधना भी कर सकते हैं, लेकिन जिनके उठने का समय नहीं वे क्या करें?

मैं किन-किन का नाम लूँ। आज भी ऐसे सुज्ञश्रावक हैं जो न्यायाधिपति हैं- कोट्यधिपति हैं, पर वे माता-पिता की सेवा किए बिना सोते नहीं और उठने के साथ बड़ों के चरण स्पर्श करते हैं। बच्चा जागता है और पिता सोया रहता है। पिता उठता है तब तक लड़का स्कूल चला जाता है, फिर संस्कार कैसे मिलेंगे? बताये कौन? बतायें किसको?

कुछ घर हैं जिनके सारे सदस्य एक साथ मिलकर प्रार्थना करते हैं। जैन घरों में उठने का समय निर्धारित होता है। पर आज कई घर हैं जहाँ सुबह देर से उठते हैं और शाम को जब तक पुरुष घर आते हैं बच्चे सो जाते हैं। वे बच्चों के बीच रहते नहीं इसलिए आत्मीयता नहीं बढ़ती और बिना आत्मीयता के कभी कहा जायेगा तो बच्चा सुना-अनसुना कर देंगे। बच्चों से बात करने के लिए उनके पास पाँच मिनट का समय नहीं है। बच्चे भी फिर उसी तरह ढ़ल जाते हैं। वे बाहर जाते हैं तब घर पर सूचना करना भी बच्चों को पसन्द नहीं। पहले आपको समय नहीं था अब बच्चों को समय नहीं है।

आज माता-पिता को बच्चों की जानकारी नहीं। वे कहाँ जाते हैं, क्या करते हैं, क्या खाते हैं, कैसी संगति है? नतीजा, कैसे-कैसे किस्से घटित होते हैं वह आपसे छुपा हुआ नहीं है। जिन वस्तुओं को देखकर पहले परहेज किया

जाता था आज वे वस्तुएँ उन घरों में आ रही हैं। क्यों? तो वही बात संस्कार नहीं? आपने जिन्दगी का एक लक्ष्य बना लिया और वह है 'पैसा'। न आपको स्वास्थ्य का खयाल है और न ही कर्त्तव्य का।

मुझे याद आता है। एक बहिन आई। नाम था इन्दु बहन। उसने कहा- "महाराज! मैं जैन हूँ पर मेरे बच्चे जैन नहीं। क्यों नहीं? हमने सब किया, पर उन्हें संस्कार नहीं दिये। आज घर के आंगन का दो बार पोचा फेरा जाता है। एक-एक कपड़ा क्रीज करके पहना जाता है, बच्चों को संस्कार देने की किसी को फुर्सत नहीं।

मैं अपनी बात यह कह कर समाप्त करूँ कि आज संस्कार देने की बहुत बड़ी जरूरत है। अगर आपने पैसे और प्रतिष्ठा के पीछे संस्कार देने की बात भुला दी तो आपने भले ही गौरव को देख लिया, किन्तु आपके बच्चे श्रद्धावान और महान् बनने से रह जायेंगे। आपके पास सब कार्यों के लिए समय है, पर बच्चों को संस्कार देने के लिये समय नहीं है।

अगर आपने इस अहंकार में कि मेरे पास बहुत कुछ है, बच्चे जो करना हैं करें, तो याद रखना आपका यह अहंकार कभी चूर-चूर भी हो सकता है। यदि आपने बच्चों को वारणा के माध्यम से नहीं सुधारा तो वे ही बच्चे बुढ़ापे में आपकी सेवा नहीं करेंगे, नौकर भले ही कर ले। आप यहाँ आते हैं वह भी रिवाज निभाने के लिए अपने में ज्ञान-गुण बढ़े इसकी बहुत कम लोगों को रुचि है। हाँ, कुछ लोग इसलिए भी आते हैं एवं कहते हैं- "महाराज! बच्चे कहा नहीं मानते, आप उन्हें समझाओ।" मैं भी यही कह रहा हूँ 'थांरा सुं थांरा टाबर नहीं संभले तो सौंप दो' हम लेने को तैयार हैं।

जरूरत है आप अपने कुल, खानदान की और इस धर्मशासन की सेवा करना चाहते हैं तो दुनियां के सारे व्यवहार गौण करके आत्मा से परमात्मा बनाने वाले विनय धर्म को खुद सीखें, घर में बच्चों को सिखाएँ। आप स्वयं श्रद्धावान बनें और तारने-तिरने वाले देवाधिदेव के प्रति बच्चों के मन में श्रद्धा जगायें। श्रद्धा जगने के साथ सैकड़ों बुराइयाँ खुद-ब-खुद दूर हो जायेंगी। यह धर्मस्थान बुराइयों की जगह नहीं है।

जरूरत है श्रद्धा की, जरूरत है समर्पण की। आप स्वयं संस्कारित बनिये, बच्चों को संस्कार देने की तैयारी करिये। समय नहीं है ऐसी बात नहीं। माटी में मिलने वाले इस तन को कितना समय देते हैं, कितना संभालते हैं और जो भीतर देवता बैठे हैं उसे संभालने के लिए पन्द्रह मिनट का समय नहीं। आप अपने घर को संस्कारित बनायेंगे तो आपकी जाति, कुल, धर्म और शान कायम रहेगी।

आप बच्चों को संस्कार देना चाहें तो उन्हें स्वाध्यायशील बनने की प्रेरणा दें, शिविर लगायें, संतों की सेवा में बैठकर धर्म का स्वरूप समझने की प्रेरणा करें। यदि समय रहते ऐसा नहीं किया तो फिर पछताना पड़ेगा। चिड़ियों के खेत चुगने के पहले संभलने की जरूरत है। आप अपनी, अपने परिवार, समाज और संघ की सेवा के लिए संस्कार देंगे तो सुख-शांति का वातावरण चारों तरफ बनेगा। ■

HEAD & HEART

1. To handle yourself use your head, to handle others use your heart.
2. Do not lose head in sucess and heart in failure.
3. Beauty and colour may attract the eye but only a smile appeals to the heart, so keep SMILING.
4. One beautiful heart is better than 1000 beautiful faces, so choose people having beautiful hearts rather than faces.
5. If you have a heart that obeys your mind, you can win the whole world and if you have a mind that obeys your heart, you can win the love of so many hearts.

-Miss Minakshi Surana (Advocate),
Surana ki badi pol, Nagaur-341001 (Raj.)

शोधालेख

'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' और आधुनिक समाज

डॉ. श्वेता जैन

जैनदर्शन के अनुसार 'उपयोग' जीव का आभयन्तर लक्षण है तथा 'परस्परोपग्रह' बाह्य लक्षण है। सिद्धावस्था में जीव का समस्त उपयोग आत्मकेन्द्रित होता है तथा संसारी अवस्था के जीव का उपयोग शुभ और अशुभ कर्मों पर केन्द्रित होता है। अतः शुभाशुभ कर्मों से सम्बद्ध होने से 'परस्परोपग्रह' संसारी जीव का ही लक्षण है। संसार में परस्पर उपग्रह के कई माध्यम सम्भव हैं, यथा- अपने अधिकार की वस्तुएँ दूसरों को देना, विचारों का परस्पर आदान-प्रदान करना, विषादपूर्ण मनःस्थिति में सान्त्वना देना, हित कार्यों में प्रवृत्ति का उपदेश देना, अहिंसादि व्रतों के पालन से परहित करना, अस्वस्थ होने पर उपचार करना आदि। ये सभी उपग्रह मानव द्वारा सम्पादित हैं। इनके अतिरिक्त जल, वनस्पति जैसे एकेन्द्रिय जीव से लेकर पशु-पक्षी आदि पंचेन्द्रिय जीव भी 'परस्परोपग्रह' सिद्धान्त को फलीभूत करते हैं। जैसे-वृक्ष के फल, पत्तियों और बीजों को पशु-पक्षी खाकर अपनी उदरपूर्ति करते हैं तो दूसरी तरफ मल के माध्यम से अन्यत्र बीज त्यागकर वृक्ष संतति का अवसर प्रदान करते हैं। पंचेन्द्रिय प्राणी कार्बनडाइऑक्साइड का निष्कासन कर पेड़-पौधों को जीवन प्रदान करते हैं और पेड़-पौधे आक्सीजन छोड़कर प्राणियों को जीवित रहने में सहयोग करते हैं। संस्कृत साहित्य में सुन्दर उदाहरण है- **'सहस्रगुणमुत्स्रटुमादत्ते हि रसं रविः'**[1] अर्थात् सूर्य पृथ्वी से थोड़ा जल ग्रहण करके बदले में सहस्र गुणा जल पृथ्वी पर बरसाता है। वैज्ञानिक खोजों से पता चला है कि पृथ्वी पर जीव की कोई भी प्रजाति पूर्ण नष्ट हो जाती है तो उसका दुष्प्रभाव सर्वत्र होता है, ये सभी तथ्य सम्पूर्ण सृष्टि को परस्पर सम्बद्ध सिद्ध करते हैं। इस परस्पर सम्बद्धता को ध्यान में रखकर ही आचार्य उमास्वाति ने जीवों का लक्षण दिया है- **'परस्परोपग्रहो जीवानाम्'**।

प्राणी जगत् में मात्र मानव ही एक ऐसा प्राणी है, जो समाज बनाकर रहता है। पशु समूह में तो रहते हैं, किन्तु नियमों से अनुशासित समाज में नहीं रहते, परस्पर एक-दूसरे से रिश्ते नहीं बनाते। हेमनाममाला में इन दोनों के भिन्नत्व का

स्पष्ट निर्देश करते हुए कहा है **'समजस्तु पशूनां स्यात् समाजस्त्वन्यदेहिनाम्'** पशु समुदाय के लिए 'समज' शब्द व्यवहृत होता है और मानव समुदाय के लिए 'समाज' शब्द का प्रयोग होता है, लेकिन समूह मात्र समाज नहीं है। यदि भीड़ ही समाज हो तो सिनेमा हाल में अथवा प्लेटफार्म पर होने वाली भीड़ भी समाज की परिधि में समाहित हो सकती है। समाज शब्द सभा, संस्था आदि के अर्थों में भी प्रयुक्त हुआ है। संस्कृत शब्दकोश में सभा, संसद्, समाज, परिषद्, पर्षद्, समज्या, गोष्ठी, आस्था, आस्थान और समिति को पर्यायवाची माना गया है।[2] लेकिन आज 'समाज' शब्द इतना व्यापक बन गया है कि उपर्युक्त सारे शब्द समाज के अंगोपांग बन गये हैं।

मानव-समाज और पशु समूहों में अन्तर होने का प्रमुख कारण बुद्धि विकास में भेद होना है। अन्य जलचर, स्थलचर एवं नभचर प्राणियों का जीवन भोजन तथा प्राणरक्षा तक सीमित है और मानव का जीवन इनके अतिरिक्त शिक्षा, आध्यात्मिक विकास, नैतिक विकास, भौतिक विकास से भी जुड़ा हुआ है। इन सबके विकास के लिए मानव ने परिवार, समाज एवं राष्ट्र का निर्माण किया है।

मानव का विकास समाज पर ही अवलम्बित है। समाज के बिना मानव का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाता है। मानवजाति के जीवन तथा विस्तार के लिए समाज अनिवार्य है। यदि मनुष्य एक दूसरे के साथ नहीं रहेगा तो शीघ्र ही उसका अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। अकेला मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता। जिस प्रकार हमारा शरीर विभिन्न अंगों से निर्मित हुआ है, वैसे ही समाज विभिन्न अंगोपांगों का समुदाय है। संघ, समुदाय, संस्थाएँ इसके विभिन्न अंग हैं और मनुष्य उसकी एक इकाई है। प्रत्येक मनुष्य समाज में रहकर ही अपनी दिशा निर्धारित करता है। मानव और समाज में इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि समाज मनुष्य के लिए है और मनुष्य समाज के लिए। शिशु अवस्था में वह परिवार को अपना समाज बनाता है, युवावस्था में अपने परिवार और स्व व्यवसाय वाले मित्रों को समाज बनाता है। वृद्धावस्था में वह अपने समवयस्कों के बीच अपना जीवन यापन करता है। अतः मानव शैशवावस्था से वृद्धावस्था तक समाज से विभिन्न रूपों में जुड़ा रहता है। बाल्यावस्था में वह पारिवारिक समाज में जीता है, जहाँ अपने माता-पिता से उपकृत होता है और स्वयं उनके कार्यों में सहयोग देकर उपग्रह करता है। इस प्रकार परस्पर उपग्रह करने का पाठ वह बचपन में ही सीख लेता है। यौवनकाल में विवाह

कर अपने बच्चों के लालन-पालन, भरण-पोषण में, अर्थोपार्जन में अन्य का सहयोग प्राप्त करता है और प्रकारान्तर से दूसरों का सहयोग करता है। वृद्धावस्था में अपने अनुभवों को बाँटकर दूसरों का भला करता है और पुत्रादि की सेवा से उपकृत होता है। कोई व्यक्ति यह चाहे कि मैं अन्य किसी का उपकार न लूँ, तो ऐसा किमपि संभव नहीं है। वह किसी न किसी रूप में दूसरे का सहयोग लिए बिना अपना जीवन चला नहीं सकता।

गृहस्थ ही विभिन्न प्रकार से एक दूसरे का सहयोग नहीं लेते, गृहस्थ जीवन का त्याग करने वाले मुनि भी परस्पर सहयोग की अपेक्षा रखते हैं। अतः भगवती आराधना में कहा है- **''सक्का हु संघमज्जे साहेदुं उत्तमं अट्ठं''**[3] संघ के मध्य में उत्तमार्थ अर्थात् मोक्ष की आराधना करना सरल होता है। क्योंकि वहाँ साधना करने में परस्पर सहयोग मिलता है। मूलाचार[4] में भी सामान्य रूप से संघ अथवा दो से अधिक श्रमणों के साथ विहार करने को श्रेयस बताया है तथा एकाकी विहार की घोर निन्दा की है। वस्तुतः संयम-पालन में परस्पर के आदर्शों और प्रेरणाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इससे श्रमण दोषों से स्वाभाविक रूप में बचा जा सकता है। इसी दृष्टि से एकाकी जीवन का निषेध किया है और संघ में साधना करने पर बल दिया गया है।

श्रमण-जीवन अध्यात्मशोध का सर्वोत्कृष्ट मार्ग है। सच्चा श्रमण समाज से जितना लेता है, उससे कहीं अधिक देता है। समाज को न्याय मार्ग का, धर्म का सुसंस्कारी बनाने का उपदेश देकर श्रमण महान् उपकार करता है। इन उपदेशों से मानव में परस्पर सौहार्द का, सहयोग का भाव पुष्ट होता है, जो समाज को सुदृढ़ बनाता है।

सिद्धसेन गणि ने 'परस्परोपग्रहो' शब्द की दो दृष्टियों से व्याख्या की है। जिसमें प्रथम दृष्टि से **''हितप्रतिपादनेनाहितप्रतिषेधेन चोपग्रहं कुर्वन्ति''**[5] हित प्रतिपादन और अहित के प्रतिषेध को उपकार कहा है तथा द्वितीय दृष्टि से **''उपकारवचनस्य निमित्तार्थात्वात्''**[6] अर्थात् जीवों का परस्पर इष्ट एवं अनिष्ट करने में निमित्त बनना उपकार है। ये दृष्टियाँ सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों को प्रस्तुत करती हैं। वे कहते हैं **''परस्परा क्रिया सातत्येनेत्यत्र''**[7] इस संसार में जीवों की सतत रूप से परस्पर क्रियाएँ चल रही हैं। ये क्रियाएँ दूसरे

जीव का हित सम्पादन करने वाली और अहितकारी भी हो सकती हैं। सिद्धसेनंगणि की दृष्टि सूत्र की व्याख्या करने या मर्म को स्पष्ट करने की रही है, जबकि समाज के परिप्रेक्ष्य में लिखे जाने वाले इस लेख में सकारात्मक दृष्टि को ही प्रमुखता दी गई है।

जैन दर्शन में प्रतिपादित "परस्परोपग्रहो जीवानाम्" सूत्र को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यह एक आदर्श सूत्र के रूप में स्थापित किया जा सकता है। इसके लिए कई तर्क दिए जा सकते हैं, यथा-

1. मानवीय सम्बन्ध एक दूसरे के सहयोग पर आश्रित हैं।
2. सम्पूर्ण जगत् में मानव ही एक ऐसा प्राणी है, जिसके विकास में कई तत्त्वों का योग होता है। जैसे- सभी प्राणी अपनी माँ का दुग्ध पान करते हैं, जबकि मानव अपनी माँ के अलावा गाय, भैंस, बकरी आदि का जीवन भर सेवन करता है। पशु, पक्षी आदि को स्वावलम्बी होने में कुछ दिन या महीने ही लगते हैं, दूसरी तरफ मानव शिशु को स्वावलम्बी बनने में कई वर्ष लग जाते हैं। इस प्रकार मानव अन्य प्राणियों की अपेक्षा अधिक पराश्रित है। अतः उसे अधिक सहयोग लेने के एवज में दूसरों को अधिक सहयोग भी प्रदान करना चाहिए।
3. उपग्रह दो प्रकार के हैं। एक तो सहज उपग्रह जो प्राणी की शारीरिक क्रियाओं से होता है, जैसे- गाय के दूध व गोबर आदि से, प्राणियों द्वारा कार्बनडाइऑक्साइड छोड़ने से, वनस्पतियों द्वारा ऑक्सीजन के उत्सर्जन से। दूसरे प्रकार का उपग्रह वह होता है, जिसमें विशेष प्रयत्न या भावना से परोपकार किया जाता है। जैसे-अपना कमाया हुआ धन दूसरों को देना, जीव रक्षा करना, दुःखी होने पर उसको सान्त्वना देना, क्रोध-विजय आदि का उपदेश देना आदि। विशेष प्रयत्न से उपग्रह मात्र मानव ही कर सकता है, अन्य प्राणी नहीं। मानव चूंकि सामाजिक प्राणी है, अतः उपग्रह करना या सहयोग करना उसका कर्तव्य बन जाता है।
4. सहयोग के अभाव में जीवन मत्स्यन्याय की तरह है। जैसे बड़ी मछली छोटी को खा लेती है। इस न्याय पर यदि समाज अवलम्बित हो तो समाज का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। अतः सहयोग की भावना समाज का प्राण है।

5. दूसरों की मदद करना ही स्वयं के लिए मदद प्राप्त करने का मार्ग है। इस दुनिया में ऐसा कोई अमीर नहीं जिसे कभी दूसरों की जरूरत ही न पड़े। यह परस्पर सापेक्षता ही **''परस्परोपग्रहो जीवानाम्''** लक्षण की सार्थकता सिद्ध करती है।

6. दूसरों के प्रति तुच्छता का भाव और अपनी उच्चाकांक्षाएँ व्यक्ति के मन में कुण्ठाएँ उत्पन्न करती हैं। ये कुण्ठाएँ व्यक्ति को मानसिक रूप से विकृत कर देती हैं और समाज को भी प्रभावित करती हैं। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को अपने जीवन में यदि दूसरों की महत्ता और पर-उपग्रह की आवश्यकता का बोध हो तो वह इन विकृतियों का निराकरण करने में समर्थ होता है।

7. पाश्चात्त्य मनोविज्ञान में सामान्यतया व्यक्ति की 14 मूल प्रवृत्तियाँ मानी गई हैं- 1. भय, 2. घृणा, 3. जिज्ञासा, 4. आक्रामकता, 5. मान, 6. आत्महीनता, 7. मातृत्व की संप्रेरणा, 8. समूह-भावना, 9. संग्रहवृत्ति, 10. रचनात्मकता, 11. भोजनान्वेषण, 12. काम, 13. शरणागति और 14. हास्य। इन चौदह प्रवृत्तियों में समूह भावना समाज की आवश्यकता को प्रकट करती है। यही कारण है कि समाज से अलग रहकर एकाकी जीना मानव के लिए दुष्कर है, क्योंकि वह अपने जीवन में सदैव दूसरे की अपेक्षा रखता है। हम देखते भी हैं कि बच्चे को बड़े होने में माँ-बाप की अपेक्षा रहती है तो बूढे माँ-बाप को बच्चे से सेवा की अपेक्षा रहती है। इसी सम्बन्ध में जैनाचार्य पूज्यपाद कहते हैं- **''स्वामी तावद्वित्तत्यागादिना भृत्यानामुपकारे वर्तते। भृत्याश्च हितप्रतिपादनेनाहितप्रतिषेधेन च। आचार्य उभयलोकफलप्रदोपदेशदर्शनेन तदुपदेश-विहितक्रियानुष्ठापनेन च शिष्याणामनुग्रहे वर्तते। शिष्या अपि तदानुकूलवृत्त्या आचार्याणाम्''**[8] अभिप्राय यह है कि सेवक को स्वामी से धन प्राप्त करने की तथा स्वामी को सेवक से कार्य करने की अपेक्षा होती है। आचार्य हितकारी उपदेश से शिष्य का भला करते हैं तो बदले में शिष्य गुरु के प्रति अनुकूल व्यवहार कर सहयोग करता है। इस प्रकार परस्पर सहयोग की भावना आदर्श समाज की नींव है।

8. महावीर की देशना के सम्बन्ध में कहा गया है-**''सव्वजगजीवरक्खणदयट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं''**[9] अर्थात् जगत् के समस्त

प्राणियों की रक्षा और दया के लिए ही भगवान् की धर्मदेशना प्रस्फुटित हुई थी। यहाँ उपग्रह का भाव परिलक्षित होता है। केवलज्ञान प्रकट होने के बाद उनकी मुक्ति में अब कोई साधक या बाधक नहीं बन सकता था, ऐसा समझकर भी भगवान् के द्वारा उपदेश देना 'परोपग्रह' को संसारी जीवों के लक्षण के रूप में सिद्ध करता है।

भगवान् महावीर के अनेकान्त सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में सापेक्षता का सिद्धान्त प्रतिपादित होता है। सापेक्षता अर्थात् एक दूसरे की अपेक्षा या परस्पर सहयोग की आवश्यकता। इसी सिद्धान्त पर समाज अवलम्बित है, अतः समाज का मतलब ही है सापेक्षता। एक उदाहरण से हम इसको समझ सकते हैं- हम जो वस्त्र प्रयोग करते हैं, वह किसी निरपेक्षता से नहीं बना। एक कपड़े के निर्माण में कितनी अपेक्षा है। पहले कपास बोया गया, फिर उसके लिए धूप और पानी की अपेक्षा हुई। बहुत श्रम के बाद कपास रूई में परिवर्तित हुआ। वह रूई विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरती हुई वस्त्र में परिवर्तित हुई, इसके एक-एक क्रम पर विचार करें तो सापेक्षता का सिद्धान्त स्पष्ट हो जाएगा। निरपेक्षता की स्थिति में जीना कठिन होता है। अतः अपेक्षा के सिद्धान्त को समझने की परमावश्यकता है। सापेक्षता की समझ के अभाव में प्रतिक्रिया मन में जगती है, हिंसा का भाव पैदा होता है। ये भाव समाज में हिंसा, झूठ, चोरी, व्यभिचार, डकैती, आतंकवाद जैसी समस्याओं को उत्पन्न करते हैं। इन समस्याओं का मूल क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष आदि से आविष्ट जीव है। राग-द्वेष से युक्त एकेन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय जीवों में मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो अपनी समझ से आवेशों पर नियन्त्रण कर सकता है, कोई पशु-पक्षी क्रोध आने पर क्रोधित न हो अर्थात् अपने पर नियन्त्रण कर ले यह संभव नहीं है और इससे निम्न जाति वाले जीव में तो प्रश्न ही नहीं उठता। राग-द्वेष से युक्त मानव में परस्पर हितों का टकराव न हो इसके लिए जैन धर्म अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि व्रतों के पालन पर बल देता है। इन व्रतों के पालन से मानव परस्पर उपग्रह कर एक सुन्दर समाज का निर्माण कर सकता है।

अहिंसा व्रत से परस्परोपग्रह :-

अहिंसा व्रती प्रतिज्ञा लेता है कि मैं मन, वचन, काय से किसी भी निरपराध एवं निर्दोष त्रस प्राणी की जानबूझ कर हिंसा न स्वयं करूँगा और न कराऊँगा।

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति रूप स्थावर जीवों की हिंसा भी व्यर्थ एवं अमर्यादित रूप में न करूँगा और न कराऊँगा। इस प्रकार की अहिंसा वृत्ति को अपनाने वाला व्यक्ति न अफवाहें फैलाता है, न दंगे फसाद करवाने में अपनी भूमिका रखता है, न मन के प्रतिकूल होने पर हिंसात्मक विरोध करता है अपितु सम्यक् प्रकार से अपनी बात रखता है, न दूसरों को हिंसा के लिए उकसाता है, न अपराधियों को पनाह देता है। वह अपने जीवन में अधिकारों के नाम पर आरक्षण के नाम पर, जातिवाद के नाम पर, सम्प्रदायवाद के नाम पर होने वाली हिंसा से दूर रहता है और उसका यही प्रयत्न रहता है कि जो समाज में हिंसा फैलाने वाले हैं उनको समझाकर शान्त किया जाय। वे जानते हैं कि हिंसा बड़ी भयावह होती है, क्षणिक आवेश का प्रतिफल होती है, उससे कोई लाभ होने वाला नहीं है, अतः अहिंसक शैली को जीवन में अपनाना श्रेयस्कर है। वह मानव, पशु, पक्षियों के प्रति तो अहिंसा का पालन करता ही है, प्राकृतिक संसाधनों का भी सीमित उपयोग करता है। जैसे जल का अपव्यय नहीं करता, फूल पत्तियाँ भी अनावश्यक रूप से नहीं तोड़ता, वृक्षों को काटने का भी वह विरोध करता है, पृथ्वी के संसाधनों के दोहन करने का समर्थक नहीं होता। अतः अहिंसा व्रत के पालन से समाज पर बड़ा उपकार होता है।

सत्यव्रत से परस्परोपग्रह :-

वस्तुस्थिति को सम्यक् रूप से प्रकट करना, झूठ न बोलना, मन-वचन-कर्म में एकता रखना सत्यव्रत है। सत्यव्रती समाज में प्रतिष्ठा पाता है और वह दूसरों के लिए आदर्श होता है। व्यापार, धंधा, नौकरी, जिस किसी कार्य को करता है, उसे ईमानदारी और निष्ठा के साथ करता है। वह कालाबाजारी, मुनाफाखोरी, रिश्वतखोरी, ठगाई, जालसाजी, झूठे दस्तावेज, झूठे आरोप लगाना, किसी के साथ विश्वासघात करना जैसे समाज विरोधी कार्य नहीं करता है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति के आस-पास के वातावरण में भी शुद्धि होती है, वहाँ बेईमानी अपना सिर नहीं उठा सकती। सत्य बोलने वाला सत्यव्रत के अनुष्ठान से शान्ति, उन्नति और संतोष प्राप्त करता है तथा सत्य के आचरण द्वारा समाज के अन्य व्यक्तियों को भी प्रेरित करता है, जिससे वे भी सत्यनिष्ठ बनते हैं।

अचौर्य व्रत से परस्परोपग्रह :-

दूसरे की सम्पत्ति पर अनुचित अधिकार करना चोरी है। मनुष्य को अपनी

आश्यकताएँ अपने पुरुषार्थ के द्वारा प्राप्त साधनों से ही पूर्ण करनी चाहिए। यदि कभी प्रसंगवश दूसरों से भी कुछ लेना हो तो वह सहयोगपूर्वक मित्रता के भाव से दिया हुआ ही लेना चाहिए। किसी भी प्रकार का बलाभियोग अथवा अधिकार भक्ति का उपयोग कर कुछ लेना, लेना नहीं है, छीनना है, चोरी है। अचौर्यव्रती राजकर की चोरी न कर, कानून विरोधी कार्य न कर, झूठे तोल-माप न कर, मिलावट नहीं कर, चोरी का माल नहीं खरीदकर और चोर की सहायता नहीं कर समाज में नैतिक आचरण को प्रोत्साहन देता है।

ब्रह्मचर्य से परस्परोपग्रह-

"मैं स्वपत्नी संतोष के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार का व्यभिचार न स्वयं करूँगा और न ही दूसरों से कराऊँगा। अपनी पत्नी के साथ भी अतिसंभोग नहीं करूँगा।" इस प्रतिज्ञा को ग्रहण कर आंशिक रूप से ब्रह्मचर्य का पालन करने वालों का जीवन संयमित होता है। वह शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से पवित्र होता है, ऐसे व्यक्तित्व के द्वारा मानव समाज सुख और शान्ति को प्राप्त होता है।

अपरिग्रहव्रत से परस्परोपग्रह :-

आवश्यकता से अधिक धन, सम्पत्ति, भोग, सामग्री आदि किसी भी प्रकार की वस्तुओं का ममत्व मूलक संग्रह करना परिग्रह है। आवश्यक वह वस्तु है जो सामाजिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक उत्थान में साधन रूप से जरूरी हो और जिससे मनुष्य की जीवन यात्रा निर्विघ्नतापूर्वक चल सके। जो गृहस्थ इस नीति मार्ग पर चलते हैं, वे स्वयं भी सुखी रहते हैं और समाज में भी सुख का प्रवाह बहाते हैं। परन्तु जब इस नियम का यथार्थ रूप से पालन नहीं होता है तो समाज में विषमता उत्पन्न हो जाती है। यदि प्रत्येक मनुष्य के पास केवल उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप ही सुख-सुविधा की साधन-सामग्री रहे तो कोई मनुष्य भूखा, गृहहीन तथा असहाय न रहे। अन्यथा अत्यधिक विषमता बढने पर धनाढ्य व्यक्ति के साधनों पर गरीब लूटपाट मचायेंगे, छीन लेंगे। ऐसी स्थिति आने से पूर्व ही अपरिग्रहव्रत के माध्यम से पर-उपकार करके वह स्वयं भी उपकृत हो सकता है।

इस तरह श्रावक इन व्रतों के पालन से दूसरों को बाधित न कर उपग्रह करता है। अतः उपग्रह करने का अभिप्राय वस्तुओं का आदान-प्रदान, उपदेश कार्य,

सहयोग आदि तक ही सीमित नहीं है अपितु दूसरों की सम्यक् प्रवृत्तियों में बाधा न पहुँचाना भी परोपकार है। इस प्रकार जैन आचार संहिता समाज में एक ऐसी व्यवस्था देती है, जिसका प्रत्येक मानव द्वारा पालन किये जाने पर समाज में कोई समस्या पैदा होने की संभावना नहींवत् रहती है।

हिंसा, झूठ, चोरी, व्यभिचार आदि पाप क्रियाएँ करने के पूर्व व्यक्ति पहले स्वयं के मन को मलिन करता है फिर ये क्रियाएँ करता है। जैसे किसी को मारने से पहले स्वयं में द्वेष की प्रबल भावना जगाकर ही बाद में हत्या की जाती है। यह द्वेष की भावना दुःख उत्पन्न करने वाली है, मन की शान्ति को भंग करने वाली है, इस तरह व्यक्ति अपनी हानि किये बिना दूसरे की हानि करने में समर्थ नहीं बनता है। हिंसादि के माध्यम से दूसरे व्यक्ति में भी इन पाप क्रियाओं को बदले की भावना के रूप में बढाकर सहयोग करता है। वह दूसरा व्यक्ति भी पुनः हिंसा, क्रोध आदि करके समाज में विकृतियाँ पैदा करता है। अतः हिंसा आदि पाप क्रियाओं को न करके स्व और पर दोनों के लिए उपकार करता है। इस प्रकार व्रतों के पालन से परस्पर उपग्रह निसर्गतः होता है।

आधुनिक समाज में 'परस्परोपग्रह' सिद्धान्त की आवश्यकता :-

परस्परोग्रह सिद्धान्त के द्वारा जैनदर्शन ने मनुष्यों की पारस्परिक सहानुभूति या दया को महत्त्व दिया है। यह सहानुभूति और दया समाज का आधार है। आज के समाज की यह प्रथम जरूरत है। क्योंकि चारों तरफ शिक्षा के माध्यम से प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढायी जा रही है। यह प्रतिस्पर्धा दूसरे से अपने को श्रेष्ठ साबित करने की प्रवृत्ति को जन्म दे रही है। इस प्रवृत्ति से एक मानव का दूसरे मानव के प्रति प्रेम का व्यवहार समाप्त हो रहा है और उसका स्थान ईर्ष्या, द्वेष और घृणा ले रही है। ये ईर्ष्या, द्वेष आदि के बीज आतंकवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, हत्या, चोरी न जाने किन-किन समस्याओं के रूप में हमारे सामने आ रहे हैं, जो मानव समाज के आधारभूत सिद्धान्तों को खण्डित कर रहे हैं। मानव-समाज का लक्ष्य यही है कि वे समूह में रहकर एक-दूसरे के सहयोग से अपना विकास करें, अपना निर्माण करें।

प्रसिद्ध चिन्तक बर्ट्रण्ड रसेल का भी मत है कि शिक्षा के क्षेत्र में प्रतियोगिता की प्रवृत्ति से दो मुख्य दोष उत्पन्न होते हैं- प्रथम हिंसा की प्रवृत्ति बढती है और दूसरा परस्पर सहयोग की भावना समाप्त हो जाती है। सहयोग की भावना की

न्यूनता परस्पर सामंजस्य में कमी कर देती है। सामंजस्य की कमी से समाज का ढांचा चरमरा जाता है। आजकल प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्ति बाल्यकाल से ही बच्चों में विकसित हो रही है क्योंकि पूरे समाज की व्यवस्था प्रतियोगिता पर अवलम्बित है। व्यापार का क्षेत्र हो, चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो, चाहे पारिवारिक क्षेत्र हो, चाहे राजनीति का क्षेत्र हो यहाँ तक कि धार्मिक क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। अतः हमें प्रतिस्पर्धा को कम कर परस्पर सहयोग की भावना को बढाने पर बल देना चाहिये।

आधुनिक समाज में संयुक्त परिवारों का विघटन हो रहा है। पहले व्यक्ति और परिवार एक दूसरे से इतने सम्बद्ध होते थे कि एक दूसरे से नाता तोड़ लेना, सम्बन्ध विच्छेद कर लेना, माँ-बाप को अन्यत्र भेज देना जैसे कार्य करने की हिम्मत नहीं होती थी। ऐसा करने पर समाज से निष्कासित कर दिया जाता था। इक्कीसवीं शती के समाज में इसके विपरीत एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति की, एक परिवार से दूसरे परिवार की सम्बद्धता कम होती जा रही है। फलस्वरूप अपनी पत्नी, माता-पिता के प्रति कर्त्तव्य का निर्वाह नहीं करने पर भी व्यक्ति को कुछ नियमों के आधार पर उनसे छुटकारा मिल जाता है। अतः स्वकेन्द्रित वातावरण के आधुनिक समाज में जैन दर्शन का **'परस्परोपग्रहो जीवानाम्'** सूत्र कारगर सिद्ध हो सकता है।

सन्दर्भ :-

1. रघुवंश, 1.18
2. सामाजिका सभा संसत् समाजः परिषत् सदः।
   पर्षत् समज्या गोष्ठ्यास्था आस्थानं समितिर्घटा।।-हेमनाममाला,काण्ड 3, श्लोक 145
3. भगवती आराधना, 1555
4. द्रष्टव्य- मूलाचार का समीक्षात्मक अध्ययन; डॉ. फूलचन्द प्रेमी, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, 1987, पृ. 299
5. सिद्धसेन गणि की टीका, 5.21
6. सिद्धसेन गणि की टीका,5.21
7. सिद्धसेन गणि की टीका, 5.21
8. सर्वार्थसिद्धि, 5.21
9. प्रश्नव्याकरण, अध्ययन 1

-समता कुँज, 12/7 A, जालम विलास स्कीम,
पावटा 'बी' रोड़, जोधपुर (राज.)

चिन्तन

चिन्ता, चिन्तन एवं चिदानन्द

श्रीमती सुशीला बोहरा

मनुष्य बचपन से लेकर पचपन तक और जवानी से लेकर बुढापे तक किसी न किसी रूप में तनाव एवं अवसाद में रहता है। बच्चा रोते हुए ही पैदा होता है और जिन्दगी भर कुछ पाने की लालसा में बिलखता ही रहता है। कभी अभावों से निपटने के लिये और कभी अधिक पाने की लालसा में 2-3 वर्ष की आयु होते ही बच्चे की भी स्कूल जाने की, कुछ नया सीखने की, होमवर्क करने, परीक्षा देने की अभिलाषा होती है। बड़ा होने पर कैरियर, व्यक्तित्व का निर्माण, व्यवसाय, नौकरी, प्रमोशन, शादी, फिर बच्चों की चिंता इसी से निपटते पता नहीं कब जवानी चली जाती है और बुढापा एवं बीमारियाँ घेर लेती हैं। फिर मृत्यु का भय सताने लगता है। इस प्रतियोगिता के युग ने तो हमारी चिन्ताएँ और बढा दी हैं। अब पेट नहीं पेटी भरने की चिन्ता सिर पर सवार हो रही है। देश के धनिकों की सूची में मेरा नाम, मेरा सबसे अच्छा बंगला गाड़ी, गहने-कपड़े आदि तथा झूठे प्रदर्शन के लिये कितनी भागदौड़ हो रही है यह किसी से छुपा नहीं है। नैतिक-अनैतिक, अच्छे-बुरे साधनों का प्रयोग करने के बारे में सोचने की फुर्सत नहीं, अन्याय, अत्याचार, शोषण, हेरा-फेरी करने में कोई झिझक नहीं। लेकिन-

रही न निशानी यहाँ शाह और वजीरों की,
एक-एक सांस तेरे लाख-लाख हीरों की,
ढाई गज कपड़ा और अर्थी होगी रवानी,
पानी का सा बुलबुला है तेरी जिन्दगानी,

जीवन का यही कटु सत्य है। एक राजा के पास एक याचक जीवनयापन के लिये कुछ मांगने आया। राजा ने कहा- दिनभर चलकर जहाँ तक पहुँच सको वहाँ निशान कर देना और शाम होने से पहले लौटकर आओगे उतनी भूमि पर तुम्हारा अधिकार हो जायेगा। वह चलने लगा थोड़ी देर बाद सोचा दौड़ लगाऊँ, जिससे अधिक जमीन का मालिक बन जाऊँगा। बस उसने दौड़ना प्रारम्भ किया। दौड़ता रहा, सूर्य सिर तक आ चुका था, सोचा लौट जाऊँ, फिर लगा थोड़ा और दौड़ लूँ, वापसी में तेज दौड़कर गन्तव्य तक पहुँच

ही जाऊँगा। दौड़ता रहा, सूर्य ढल रहा था उसे गन्तव्य पर पहुँचने की जल्दी थी, वह और तेज दौड़ने लगा, बिल्कुल थक चुका था, सांस फूल रही थी, हाँफते-हाँफते उस बार्डर लाइन (पंक्ति) पर ज्योंही पहुँचा वह गिर गया उसके हाथ बोर्डर लाइन को स्पर्श कर रहे थे लेकिन उसके प्राण प्रखेरू उड़ गये। क्या वह दौड़ सार्थक थी? सही थी? हम उसे पागल एवं बेवकूफ मानेंगे। लेकिन क्या हम सब भी उस दौड़ के पथिक नहीं हैं? इसका उत्तर हमें स्वयं अपने जेहन में ही ढूँढना पडेगा।

शेयर बाजार की दौड़ ऐसी ही दौड़ है। एक बार कुछ कमाया फिर दुगुना लगाया, इस बार घाटा हुआ उसकी पूर्ति हेतु फिर लगाया, और घाटा लग गया। इस शेयर मार्केट की दौड़ ने इतना उलझा दिया कि न दिन को चैन है और न रात्रि को विश्राम। कम्पनियाँ दिवाला निकालने लगी, व्यापार का ग्राफ गिर गया, प्रतिदिन नौकरियों की कमी की जा रही है। लोग बेकार होने लगे हैं। किसी को नौकरी की चिन्ता और किसी को कब निकाल दे इसकी चिन्ता खाये जा रही है। रात भर करवटें बदलते देख घरवाले कहते हैं अब तो सो जाओ, लेकिन आँखों में नींद नहीं। कमरे में पंखा चल रहा है, लेकिन आप है कि पसीने से तर-बतर। एक ही चिन्ता खाये जा रही है मैंने इस कम्पनी के शेयर में पैसे लगाये ही क्यों? अब कहाँ से चुकाऊँ इतनी रकम, घर बिक गये, गहने बिक गये, अब क्या करूँ? इसी उधेड़बुन में कुछ लोग अवसाद में चले गये, फाँसी के फंदे पर झूल गये। हमारी बहिनें भी इस दौड़ में भाग रही हैं। मुझे किसी कार्यक्रम में एक बहिन के साथ जाने का सौभाग्य मिला। पूरे रास्ते वह फोन पर शेयर खरीदने एवं बेचने की बातें करती रही जबकि वह समृद्ध परिवार की महिला थी। बिना पुरुषार्थ के हम बहुत कुछ प्राप्त करने की दौड़ में दौड़ रहे हैं। मनुष्य जन्म मिला था मोक्ष की ओर प्रस्थान करने हेतु। नरक निगोद से अकाम निर्जरा करते एकन्द्रिय से बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरीन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय की सीढियाँ पार कर फिर कहीं अनमोल मनुष्य भव पाया लेकिन आखिरी पड़ाव पर आकर बीच रास्ते में अटक गये, भटक गये।

सफलता के शिखर को छूने का चिन्तन हमें अन्दर ही अन्दर खोखला कर रहा है, जैसे घुन गेहूँ को भीतर ही भीतर खत्म कर देता है। इस चिंता के पीछे

एक ही तथ्य सामने आ रहा है अधिक पाने की इच्छा-आकांक्षा। एक क्षण भी विश्राम नहीं, भगवान् ने कहा- **'इच्छा हु आगाससमाअणंतिया'** इच्छा आकाश के समान है। जिसका कोई ओर छोर नहीं है। एक इच्छा की पूर्ति हुई नहीं कि दूसरी इच्छा अपना सर उठा लेती है। इसी उधेड़बुन में पूरी जिन्दगी निकल जाती है। अन्त में पश्चात्ताप के अलावा कुछ नहीं बचता। गौतम मुनिसा ठीक ही फरमाते हैं-

जिन्दगी भर का कमाया, साथ में क्या जायेगा।
इस धरा का इस धरा पर, सब धरा रह जायेगा।
बीतने वाली घड़ियों को कौन लौटा पायेगा।
यह अवसर खो दिया तो अन्त में पछतायेगा।।

हम सभी सोते-जागते, खाते-पीते, उठते-बैठते, कुछ न कुछ पाने की चिन्ता में दौड़ते ही रहते हैं। न हमें कर्म सिद्धान्त पर भरोसा है और न सत्पुरुषार्थ पर विश्वास। श्री कृष्ण का यह उपदेश जो कुछ हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है अच्छा है और जो कुछ होगा वह भी अच्छा है। तू किस बात की चिंता करता है? तू क्या लेकर आया था और क्या लेकर जायेगा? सभी कुछ यहीं पड़ा रह जायेगा। अतएव अशाश्वत की चिंता छोड़ और शाश्वत पर चिन्तन कर बेलगाम इच्छाओं पर ब्रेक लगा। किसी ने ठीक ही कहा है-

चाह गई चिन्ता गई मनुष्य हुआ बेकरार।
जो चिन्ता को छोड़ तो बन जाय शहनशाह।।

देखने में चिन्ता और चिन्तन दोनों समानार्थ लगते हैं। लेकिन एक पूर्णिमा का चन्द्रमा है तो दूसरी अमावस्या की काली रात्रि। एक मृत्यु को बुलावा है तो एक शाश्वत की प्राप्ति। एक दुःख की कंटीली झाड़ी है तो दूसरा शान्ति का समतल मैदान, एक बंधन का द्वार है तो दूसरा मुक्ति का द्वार। एक उषा की पहली किरण है तो दूसरी ढलती हुई सांझ। भरत चक्रवर्ती की अंगुली से अंगूठी गिरने के चिन्तन ने महल में भी केवलज्ञान प्राप्त करा दिया और प्रसन्नचन्द्र राजर्षि ने ध्यानस्थ खड़े रहकर सातवीं नरक के दलिक इकट्ठे कर लिये और चिन्तन ने पासा पलटा तो केवल ज्ञान को वरण कर लिया। तन्दुल जैसे छोटे से मच्छ ने चिन्तन ही चिन्तन में सातवीं नारकी के बन्धन बांध लिये।

अतएव सही दिशा की ओर उन्मुख चिन्तन जहाँ जन्म-मरण की

शृंखला को तोड़ देता है वहीं विपरीत चिन्तन जन्म-मरण की शृंखला को बढ़ा देता है। अतएव आवश्यकता है मन को सही दिशा की ओर मोड़ने की। यह न केवल परलोक को ही सुधारता है वरन् इस जीवन में भी सुख-शान्ति एवं आनन्द प्रदान करता है। संत नानइन एक गांव के बाहर किसी पेड़ के नीचे बैठे मस्ती से बोल रहे थे "दे उसका भी भला न दे, उसका भी भला।" राहगीर उनकी मस्ती पर हँसते थे। एक बार दिन भर खाने को कुछ न मिला। साँझ ढलते किसी ने कटोरे में एक-दो रोटिया डालीं। उसने आँख मींचकर भगवान को याद कर रोटियाँ खाने को ज्योंहि हाथ बढ़ाया कि कुत्ता आया और रोटियाँ लेकर भाग गया। फकीर भगवान को याद करते हुए कहने लगा भगवान तू कितना दयालु है कभी-कभी उपवास करने का मौका देकर मेरी आराधना और साधना का भी ध्यान रखता है। ऐसी सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति हर परिस्थिति में मस्त रहता है। सुखी और दुःखी तो हम अपने चिन्तन व नजरिये से होते हैं। अपने द्वारा बाँधे हुए कर्म ही नाना प्रकार के खेल दिखा रहे हैं। वे अपना काम कर रहे हैं हम अपना काम करें। 'बोया पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से पाय' अतएव दूसरों पर दोषारोपण करने की अपेक्षा हम आत्म निरीक्षण करें। गजसुकुमाल मुनि अपने श्वसुर द्वारा सिर पर पाल बाँध कर रखे धधकते अंगारों को समत्व भाव से सहन कर चिन्तन को सही मोड़ देकर मुक्त हो गये। भगवान् महावीर को अपने कर्मों को तोड़ने के लिए साढ़े बारह वर्ष परीषह सहन करने पड़े। हमें भी अपने द्वारा अच्छे-बुरे कार्यों को उदयकाल में समत्व भाव रखते हुए सद्पुरुषार्थ की ओर कदम बढ़ाने चाहिये। विक्रमादित्य अपनी अंगुली में ऐसी अंगूठी पहने रहते थे जिस पर लिखा था यह भी न रहेगा। इसीलिये अनुकूल-प्रतिकूल, हार-जीत, सफलता-असफलता सभी अवसरों में वे अपने को संयत रख सके।

अतएव यदि हम भी चिन्तन द्वारा चिंता से उभरने की कला सीख लेंगे तो चिदानन्द को प्राप्त कर अनन्त अव्याबाध सुख के मालिक अवश्य बन जायेंगे। जहाँ जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं, भय नहीं, शोक नहीं, दुःख नहीं, दारिद्र्य नहीं, कर्म नहीं, काया नहीं, ज्योति में ज्योति समा जायेगी।

-संयोजक अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

प्रासङ्गिक

हो सफल मनोरथ मेरा

मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

(मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. द्वारा रचित एवं नवदीक्षित श्री दर्शनमुनि जी म.सा. द्वार बड़ी दीक्षा के पावन प्रसंग पर उच्चारित)

(तर्ज : जहाँ डाल-डाल पर सोने की ..... ।)

मैं बनूँ आराधक इस भव में, मेटूँ भव-भव का फेरा
हो सफल मनोरथ मेरा।
मैं कृपा आपकी चाहूँ भंते! पाऊँ शिव सुख डेरा
हो सफल मनोरथ मेरा ।।टेर ।।

देवों के अति सुख भोगों से, तृप्त नहीं हो पाया
दीन बना तिर्यंच नरक के, कष्टों को सह पाया
मिला मुझे अब दुर्लभ नर भव, हो अब ज्ञान उजेरा ।।1 ।।
हो सफल मनोरथ मेरा।

राई सम गुण मेरा मैंने, मेरु जितना बखाना
दोष अनेकों मुझमें फिर भी, चाहा उनको छिपाना
आत्मदृष्टि बन समता धारूँ, तोड़ मोह का घेरा ।।2 ।।
हो सफल मनोरथ मेरा।

पाकर इन्द्रिय पुद्गल सुख को, सत्य स्वरूप न समझा
शब्द रूप रस गंध स्पर्श की, पर्यायों में उलझा
जड़ चेतन का भेद करूँ अब, बनकर तेरा चितेरा ।।3 ।।
हो सफल मनोरथ मेरा।

अजर-अमर अविनाशी अविचल, अव्यय हूँ अविकारी
है दर्शन ज्ञान अनन्ता मुझमें, अनन्त शक्ति का धारी
आत्मगुणों को प्रकट करूँ, मैं पाऊँ मोक्ष बसेरा ।।4 ।।
हो सफल मनोरथ मेरा।

तेरी करुणा की धारा ही, निमित्त बनी संयम की
पाकर तेरा सम्बल भगवन्, पकड़ी डोर परम की
'गौतम' से प्रभु फरमाते हैं, आया आज सवेरा ।।5 ।।
हो सफल मनोरथ मेरा।

-श्री बुधमल बोहरा, 53, Erulappan Street, Sowcarpet, Chennai-600079

जीवन-व्यवहार

अशान्ति के बीज से शान्ति का फल नहीं

श्री जितेन्द्र चोरड़िया 'प्रेक्षक'

इस संसार के सभी प्राणी सुख और शान्ति को प्राप्त करना चाहते हैं और अनेक प्राणी अनन्तकाल से इनकी प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील हैं। परन्तु उनके शान्ति प्राप्त करने के मार्ग और उपाय विपरीत होने से शान्ति उन्हें नसीब नहीं होती है। आज मनुष्य घर में, मौहल्ले में, गाँव में, नगर में, राज्य में, देश में और यहाँ तक कि विश्व में शान्ति की स्थापना कलह, झगड़ा, मारपीट, हिंसा, युद्ध आदि का आलम्बन लेकर करना चाहता है। चिन्तन यह करना है कि जो कार्य शान्ति को नष्ट करने वाले हैं, क्या वे शान्ति का संरक्षण कर उसकी स्थापना कर सकेंगे? परन्तु यह आधुनिक मानवों का शान्ति मंत्र बन गया है कि **'यदि शान्ति प्राप्त करनी है तो युद्ध और द्वन्द्व के लिए तत्पर हो जाओ।'** लेकिन शान्ति स्थापना का यह मंत्र वैसा ही निरर्थक एवं अनुपयोगी है जैसे-खून से सना वस्त्र खून से धोना, अग्निशमन हेतु ईंधन का प्रयोग करना, रोगोपचार हेतु वर्जित पथ्य का सेवन करना या विषभक्षण कर अमर होने की चेष्टा करना। अतः शान्ति की उत्पत्ति हेतु उसके विरोधी युद्ध, कलह, द्वन्द्व, हिंसा, झगड़ा, मारपीट आदि दुष्प्रवृत्तियों का सहारा लेना नासमझी है, नादानी है, अज्ञान और भ्रम है।

वर्तमान समय में यह स्पष्टतः परिलक्षित हो रहा है कि व्यक्ति अपने संपर्क में रहने वाले अन्य लोगों को अपने मनोनुकूल प्रवृत्ति करवा कर, वैचारिक मतभेद को समाप्त करने हेतु, शान्ति में अवगाहन करने हेतु अपने परिवार से, सहकर्मियों से, पड़ौसियों आदि से वाक्युद्ध, अपशब्द-प्रयोग, मारपीट या अन्य हिंसक प्रवृत्तियों का सहारा लेता है। उक्त दुष्प्रवृत्तियों को करने में उस व्यक्ति का एकमात्र यही उद्देश्य निहित होता है कि किसी भी प्रकार से मैं इन्हें अपनी इच्छानुसार प्रवृत्ति करवा कर अपने अनुकूल बना लूँ, तब मुझे शान्ति प्राप्त होगी। व्यक्ति का लक्ष्य तो है शान्ति को प्राप्त करना, लेकिन उपाय, प्रयत्न आदि शान्ति को भंग करने के प्रयोग करता है। तब भला शान्ति कैसे प्राप्त होगी?

क्योंकि यह नियम सर्वमान्य एवं स्वीकार्य है- **As you sow, so shall you reap.** अर्थात् **'जैसा तुम बोओगे, वैसा ही फल पाओगे।'** अतः द्वन्द्व, कलह, युद्ध, हिंसा, घृणा आदि के बीज इन्हीं को उपजाते हैं, इन्हीं में वृद्धि करते हैं और जब वृक्ष भी इनके उगेगें तो उनसे शान्ति के फल कैसे प्राप्त हो सकेंगे? इस सत्य को भलीभांति जानते हुए भी यदि हम इससे जान-बूझकर अनभिज्ञ बन रहे हैं तो यह स्वयं के ही पैर पर कुल्हाड़ी का प्रहार कर लहुलुहान होने जैसी नादानी है।

आज विश्व के देश एक-दूसरे देश पर इस अभिलाषा से आक्रमण करते हैं कि हम अपनी आपसी समस्याओं और विवादों को युद्ध के द्वारा हल करके अपने देश में शान्ति की लहर प्रवाहित कर देंगे, परन्तु उनका यह मनोरथ कभी भी पूर्ण नहीं हो पाता है। क्योंकि जिस चीज का जो स्रोत है, उसे वहीं से प्राप्त किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में शान्ति ही शान्ति को जन्म देती है। अशान्ति के कार्यों से शान्ति उत्पन्न करने की आशा रखना दुराशा मात्र है।

अनादिकाल से योद्धाओं की तलवारें खनखनाहट करती हुई, खून बहाती हुई, विजय दुन्दुभि बजाती हुई शान्ति-पताका फहराने हेतु प्रयत्नशील है। फिर भी आज तक किसी को शान्ति प्राप्त हुई है क्या? इसके विपरीत वह युद्ध आदि के कोलाहल में दब सी गई है। किसी की गर्दन पर चमचमाती धारदार तलवार रखकर उसे मृत्यु के भय से भयभीत करके शांत किया जा सकता है। चाँदी और सोने के सिक्कों की चमक से किसी को प्रलोभन के सुनहरे स्वप्न दिखाकर संतोषी बनाया जा सकता है। मगर यह शांति मरण की शांति है, जीवन की नहीं। यह शान्ति अस्थायी है, स्थायी नहीं। क्योंकि जीवित और स्थायी शान्ति तो हमारे स्वयं के अन्दर ही जन्म लेती है, बाहर कहीं भी उसकी उत्पत्ति नहीं होती है। अन्दर में जन्म लेने वाली शान्ति की उत्पत्ति भय और प्रलोभन से नहीं, बल्कि निर्भयता और संतोष से होती है, बाहरी शत्रुओं से नहीं, बल्कि आन्तरिक शत्रुओं (कषाय, राग-द्वेष, हिंसा, घृणा आदि) से युद्ध करके उन्हें पराजित करने पर ही होती है।

जरा चिन्तन कीजिए, जिस शान्ति की प्राप्ति हेतु हम जन्म से लगाकर मृत्यु तक प्रयत्नशील रहते हैं, वह हमें आखिर क्यों प्राप्त नहीं होती है? इसका

एक मात्र कारण यही है कि जिस प्रकार बबूल के वृक्ष पर आम के फल नहीं लग सकते, उसी प्रकार अशान्ति के कार्यों से शान्ति को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। शान्ति प्राप्त करने हेतु हमने आज तक अशान्ति के तरीके अपनाए हैं, लेकिन फिर भी हमारी अभिलाषा पूरी नहीं हो पाई। जब हमने शान्ति स्थापना हेतु अनगिनत अवसर अशान्ति और उसके उत्प्रेरकों को प्रदान किए हैं, किन्तु वे शान्ति की स्थापना नहीं कर सके। तब क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं बनता है कि अब **एक मौका शान्ति को** भी दिया जाय? यदि फिर भी हमें शान्ति प्राप्त नहीं होती है तो फिर शिकायत कभी आनी ही नहीं है।

आज हमें अपने अनादिकाल के कुसंस्कारों की दुर्गंध से युक्त सड़े-गले विचारों का अपने मन से उन्मूलन करने की आवश्यकता है। आज हम शान्ति प्राप्त करने हेतु जिन अविवेकपूर्ण कार्यों युद्ध, कलह,झगड़ा, मारपीट, हिंसा आदि का जाल फैला कर उनमें फँस रहे हैं, हमारे वे ही दुष्कार्य हमारे और हमारी शान्ति के बीच दीवार के रूप में बाधक बनकर खड़े हैं। हमारी यही दुष्प्रवृत्तियाँ हमें शान्ति के साक्षात् दर्शन और अनुभव से वंचित कर रही हैं। यदि हम चाहते हैं कि शान्ति की दिशा में हमारे द्वारा उठाया गया प्रत्येक कदम शत प्रतिशत फलदायी हो, तो हमें अपने विवेक को जागृत कर सरलता, मैत्री की भावना, निःस्वार्थ प्रेम, सहनशीलता आदि सद्गुणों को अपने आचरण में स्थान देना होगा। प्रतिकूल परिस्थितियों में एकमात्र समता के उपासक बनकर उसकी सतत साधना का अभ्यस्त होना होगा। हाँ, एक महत्त्वपूर्ण बात और है, वह यह कि उक्त सारी प्रवृत्तियों के संपादन में हमारे द्वारा अपने विचार, उच्चार(वाणी) और आचार में समानता और एकरूपता को आचरित किया जाना नितान्त आवश्यक है। अर्थात् हमारा ऋजु बनना अत्यावश्यक है।

पूर्वोक्त सद्गुणों और प्रवृत्तियों को यदि हम शान्ति के असली बीजों की संज्ञा से अभिहित करें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस प्रकार हम शान्ति के इन बीजों का अपने आचरण की कृषि भूमि में नित्य वपन करते रहे तो सदैव शान्ति रूपी फलों को पाकर, इनका आस्वादन करके सुखानुभूति करते रहेंगे।

-'समर्थ भवन' खीचन - 342308, जिला-जोधपुर (राज.)

Tattva bodha

JÑNĀNĀTICĀRA

Dr. Priyadarsna Jain

TEXT TRANSLATION

Āgame	- *Agamas*
Tivihe	- Of three types
Paṇṇatte	- Revealed to be
Taṃjahā	- As follows
Suttāgame	- *Sutra* i.e. sacred text
Atthāgame	- Meaning
Tadubhayāgame	- Both text and meaning
Jam vaiddham	- If interchanged the order of the text
Vaccāmeliyam	- Mixed the lessons
Hiṇakkharam	- Dropped the words
Accākkharam	- Added new words
Payahīṇam	- Dropped the lines or words
Viṇayahīṇam	- Not reading carefully with devotion
Jogahīṇam	- Not reading attentively
Ghosahiṇam	- Not pronouncing properly
Suṭṭhudiṇṇam	- Rendering to unworthy
Duṭṭhu padicchiyam	- Reading with an evil mind
Akāle kao sajjhāo	- Reading in the inappropriate hour
Kāle ṇa kao sajjhāo	- Not reading in the prescribed hour
Asajjhae sajjhāiyam	- Done scriptural study when not supposed to
Sajjhae ṇa sajjhāiyam	- Not done scriptural study when supposed to

Tassa micchāmi dukkaḍam -May that sin be fruitless.

Meaning

After the aspirant learns to become steady by thought, word and deed, he is now trained to read the sacred scriptures. However there are certain transgressions of scriptural learning which the aspirant ought to know but should take care not to practice them. The ***Āgamas*** are the sacred scriptures revealed by the omniscients and they are of three types viz. ***Suttāgame*** i.e. aphorisms; ***Atthāgame-m***eanings of the ***sūtras*** and ***Tadubhayāgame*** is combination of ***sūtras*** i.e. aphorisms and their meanings.

Through this lesson the aspirant pledges to take utmost care to pronounce, recite and read the sacred texts, devotedly, carefully, concentrating on the words and their meanings. He is not supposed to add, mix, interpolate, delete, substitute the ***sūtras*** and read according to his fancy. He also has to consider the time, place etc and then proceed to read the scriptures, he should also respect the sacred knowledge and the wise personages and then proceed to acquire the sacred knowledge of the scriptures. If he has failed to be careful in doing so, he prays that, may the fruit of the above transgressions/sins become fruitless.

Explanation

Just as the ***Vedas*** are the sacred texts of the Hindus, ***Piṭakas*** for the Buddhists, ***Bible*** for the Christians, ***Quran*** for the Muslims, the ***Āgamas*** are the sacred scriptural, texts of the ***Jains*** revealed by the ***Āptas*** i.e. authoritative personage, constructed by the ***Gaṇandharas*** (prime disciples of ***Tīrthankaras***) and practised by the ***Munis*** (***Aa*** + ***Ga*** + ***Ma***). The ***Āgamas*** are primarily spiritual texts, but the ethical code of conduct, the four-fold existences, the world-order, the nine reals, the pathway of liberation, the cause of bondage, the nature of virtue and sin, the transitoriness of all things in the world, the composition of mind, body, speech, the different substances be it living or non-living along with their characteristics and modes are beautifully and inspiringly elaborated in the eleven ***Angas***, twelve ***Upaṅgas***

besides the ***Mūla Sūtras*** and ***Cheda Sūtras***, the 32nd ***Āgama*** being the ***Āvaśyaka Sūtra***.

The ***Tīrthankaras*** reveal the ***Tripadi*** i.e. "***Uppaṇeya va vigameya va dhuveya va***" meaning all things originate, undergo change, still remain permanent. From the substantial point of view all things are permanent and from the point of view of modes they originate and undergo change. Hearing this ***Tripadi,*** the ***Gaṇadharas*** are enlightened and they construct the sacred ***Dvādaśāngas*** popularly known as ***Āgamas*** i.e. ***Suttāgame***. The ***Āgamas*** are revelations of the ***Tīrthankaras*** and are important for their logical, practical, ethical, spiritual contents. The teachings of all the ***Tīrthankaras*** are essentially the same and this is clear from the conversation that took place between ***Keśhi***, the last disciple of ***Pārśva*** and ***Gautama***, the first disciple of Lord ***Mahāvīra*** 2600 years ago and are recorded in the chapter of ***Uttarādhyayana Sūtra***, which is the last sermon of Lord ***Mahavira***. The revelation of one text does not contradict the contents of other text although there are repetitions as they were handed down orally and were documented nearly one thousand years after ***Mahāvīra's Nirvāṇa***. Scriptural study is an important spiritual and religious exercise for it is only through listening and reading one analyses and knows reality, there upon he can proceed to realize it and release oneself from bondage. The spiritual journey begins with listening to the sacred tenets, reading them, reflecting upon them and steers the soul through self-realization and finally culminates in emancipation. Although they seem to begin with a pessimistic note pronouncing disquiet at the existing order of life and living, but the optimistic and pragmatic outcome of the ***Āgamas*** are undebated and unparalleled. A thorough examination of them fills one with ***vairagya rasa***. Self-realization and awareness automatically and effortlessly happen in the life of a ***Sādhaka*** who devotedly reads the sacred texts and reflects on them sincerely.

The transgressions of Scriptural knowledge are 14,

that of Faith are 5, Conduct are 75 and that of Austerity are 5 totaling 99 for which a householder expiates and begs for nullifying their effect and takes care not to commit them in any way during the course of his life. The transgressions are to be known and given up by thought, word and deed, and hence a life of spiritual, ethical and religious commitment is what it takes to be a ***Jain Sādhaka***. **(Continue...)**

जिनवाणी के लेखकों हेतु शुभ सूचना

जिनवाणी के प्रबुद्ध लेखकों को सूचित करते हुए प्रमोद है कि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा गत वर्ष यह निश्चय किया गया था कि 1 वर्ष के अंकों में प्रकाशित विभिन्न लेखों/रचनाओं में से सर्वश्रेष्ठ को निम्न वर्गानुसार पुरस्कृत किया जाएगा। तदनुसार इस वर्ष भी यह क्रम निरन्तर रखा गया है।

1. आध्यात्मिक/नैतिकशिक्षा परक लेख	5100/-
2. शोधालेख/वैज्ञानिक लेख	5100/-
3. आगमिक/तात्त्विक/जीवन-शैली से सम्बद्ध लेख	5100/-
4. अंग्रेजी भाषा में श्रेष्ठ रचना	5100/-
5. युवा-स्तम्भ में प्रकाशित श्रेष्ठ लेख	5100/-
6. नारी-स्तम्भ में प्रकाशित श्रेष्ठ लेख	5100/-
7. बाल-स्तम्भ में प्रकाशित श्रेष्ठ रचना	5100/-
8. श्रेष्ठ कविता	3100/-
9. संवाद स्तम्भ में श्रेष्ठ समाधान	3100/-
10. श्रेष्ठ प्रेरक-प्रसंग/क्षणिकाएँ/विचार	2100/-

उपर्युक्त पुरस्कारों की घोषणा उत्कृष्ट रचनाधर्मिता के संवर्धन एवं जिनवाणी के पाठकों हेतु प्रेरणाप्रद नूतन पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराने की दृष्टि से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के **अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा-चेन्नई** की सहमति से की जा रही है। लेखकों की रचनाएँ मौलिक, स्पष्ट, प्रभावोत्पादक एवं पाठकों को दिशाबोध कराने वाली होनी चाहिए।

डॉ. धर्मचन्द जैन
सम्पादक

श्री प्रेमचन्द जैन
मंत्री

काव्य

खण्ड-खण्ड होती मानवता

डॉ. सागरमल जैन

स्वार्थवादिता के चोगे में,
मानव की मानवता कहीं खो गई है।
तभी तो वह युगों से
अपने आपको खण्ड-खण्ड में
विभाजित करता रहा है।
पहले अपने को देश और प्रदेश की
सीमाओं में बाँटा,
फिर प्रजातियों का भेद दिखाकर,
काले और गौरे के रंगभेद पर,
आर्य और अनार्य में बाँटा।
एक ने अपनी सभ्यता का दावा कर
दूसरे को असभ्य और असंस्कृत बताया।
फिर हमने ही वर्ण-व्यवस्था के नाम पर
उसे एक को दूसरे से काटा।
ब्राह्मण श्रेष्ठ और शूद्र नेष्ट कहकर
मानवता के मुख पर मारा चाँटा।
फिर वर्णसंकरता ने अपना रूप दिखाया।
जातियों के नाम पर यह भेद और गहराया
जातियों के आधार पर धन्धे भी बँट गये;
कुशलता और योग्यता के मापदण्ड नकार दिये गये।
वर्ण और धन्धे जो कर्मणा थे,

वंशानुगतता के स्वार्थवश
सभी जन्मना मान लिये।
स्वार्थवादिता या भाई भतीजावाद के इस चक्र में,
वर्णवाद और जातिवाद पुष्ट होता चला गया,
मानवता खण्डित हो सिसकियाँ ही भरती रही।
आज भी तो यही हो रहा है,
स्वार्थवादिता और वोट बैंक की राजनीति में,
जातिवाद पुष्ट हो रहा है
कहीं धर्मवाद है
तो कहीं राष्ट्रवाद है
किन्तु ये सब,
मानवता को मृत करने की साजिश मात्र हैं।
यदि स्वार्थवाद के चोगे में
यही सब होता रहा,
तो मानव की मानवता
मरती रहेगी, और
यदि मानवता मर गई
तो फिर मानव भी नहीं बचेगा।
स्वार्थवादिता का यह शैतान
मानव को मार कर ही,
दम लेगा।
लेकिन यदि मानवता जी गई
तो वह ही स्वार्थवादिता के शैतान को
मार कर ही दम लेगी।

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (म.प्र.)

विशिष्ट प्रश्नोत्तर

उपासकदशांग सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (16)

प्रश्न 1. "भूल करने के लिए कोई समय अच्छा नहीं है और हो चुकी भूल को सुधारने के लिए कोई समय खराब नहीं है।" कथन को उपासकदशांग सूत्र से पुष्ट कीजिए।

उत्तर – भूल करने के लिए कोई समय उचित नहीं होता है। भूल की धूल को झाड़ना ही साधक को इष्ट होता है। किसी भी स्थिति, किसी भी परिस्थिति में की गई भूल क्षम्य नहीं होती है। जिनशासन के अनुसार कारण कितना भी सही हो, पर परिणाम की छूट नहीं है। समता के देवता गजसुकुमाल जी ने तो कुछ भी भूल नहीं होते हुए भी सोमिल के दुर्व्यवहार पर क्रोध करना उचित नहीं समझा। अगर गजसुकुमाल मात्र आँख खोल कर भी देख लेते तो उनके केवलज्ञान पर प्रश्नवाचक चिह्न लग सकता था। इन कठिन परिस्थितियों में भी भूल स्वीकृत नहीं है। गोचरी में जानबूझ कर कड़ुआ तुम्बा बहराने वाली नागश्री पर भी क्रोध रूप भूल न करने के कारण ही धर्मरुचि अणगार को सर्वार्थसिद्ध देवलोक प्राप्त हुआ। न चाहते हुए भी बार-बार भूल के दोहराने का हेतु है- भूल को भूल रूप स्वीकार न करना, भोगों के राग की स्मृति, वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति की पराधीनता, निज-निर्मल स्वरूप पर आशंका, निज-विवेक का अनादर आदि। गोचरी के समय संथारे में दर्शन देते (प्रथम अध्याय), पौषध में (2,3,5,7 वां अध्ययन) अथवा संथारे में (आठवाँ अध्ययन) किसी भी समय भूल होना, करना अच्छा नहीं है। भूल का पश्चात्ताप जीव को शुद्धि की ओर अग्रसर करता है। निर्दोष होने के लिए वर्तमान में ही प्रयत्नशील होना है, भूल को न दोहराने पर सभी निर्दोष होते हैं। दोषों या भूलों की वृद्धि, भूलों के दोहराने पर निर्भर है। पर हमारी सबसे बड़ी भूल यही है कि भूल के प्रक्षालन का कार्य हम वर्तमान में न कर भविष्य पर छोड़ देते हैं और यह प्रमाद के सिवाय और कुछ नहीं है। प्रमाद का साधन युक्त जीवन में कोई स्थान ही नहीं है। भूल की व्याकुलता ज्यों-ज्यों सबल तथा स्थायी होती जाती है, त्यों-

त्यों सभी दोष, निर्दोषता में बदल जाते हैं और यही महती साधना है। ऐसे क्षमाश्रमण भगवान् महावीर के अन्तेवासी गणधर गौतम निर्दोषता के पथ के राही थे। छोटी सी भूल हो जाने पर बिना पारणा किये, भगवान् की आज्ञा से, चिलचिलाती धूप में ही आनन्द श्रमणोपासक की पौषधशाला में भूल को स्वीकृत करने उपस्थित हो गये और भूल की धूल को झाड़, साधना के फूल खिला दिए। मध्यवर्ती तीन, चार, पाँच, सात अध्ययन के श्रावक, माता-पत्नी तो आठवें महाशतक जी प्रभु द्वारा संकेत पाकर तुरन्त भूल का शोधन कर आराधक बन गये। आगम में ऐसे अनेकानेक दृष्टान्त एवं विधान उपलब्ध हैं। सच में क्षमाशील का जीवन क्षमा का प्रतीक बन कर क्षमा के प्रकाशन में समर्थ होता है।

प्रश्न 3. 'जो स्वयं कीचड़ से ऊपर उठ जाता है, वह दूसरों को भी झटपट कीचड़ से मुक्त कराना चाहता है।' इसे उपासकदशांग सूत्र से पुष्ट कीजिए।

उत्तर – तीर्थंकर भगवान् तिण्णाणं तारयाणं होते हैं। स्वयं तिरकर औरों को तारने वाले महाणियमिक होते हैं। कीचड़ से ऊपर उठना दोष-रहित अर्थात् निर्दोष बन जाना है। कीचड़ दोष है। दोष बाहरी है, बाहर से ही आगत है। दोषों की कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं है, जिस प्रकार अंधकार की कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं है। प्रकाश की न्यूनता ही अंधकार है, इसी प्रकार दोषों की स्वतंत्र सत्ता नहीं है। गुणों की न्यूनता ही दोष है। जो भी हो दोष, दोष हैं। सर्वथा हेय एवं त्याज्य हैं। क्योंकि दोष त्यागे बिना मोक्ष का साम्राज्य नहीं है। अतः निर्दोष बनने के लिए दोष-त्याग अनिवार्य है। कीचड़ से ऊपर उठने पर दोष-त्याग के साथ गुणों का प्रकटीकरण वर्धित होता है। गुणों के सम्पूर्ण विकास की अवस्था ही मोक्ष है। उपाय की उपस्थिति ही नहीं, उपादेय की प्राप्ति में, अपाय की अनुपस्थिति भी अनिवार्य है, जो अनायास नहीं, प्रयास-साध्य है। तीर्थंकर भगवन्त ज्ञान, दर्शन, चारित्र की सम्यक् आराधना द्वारा गुणों का विकास कर, दोष रूपी कीचड़ से ऊपर उठ जाते हैं तथा अनन्त कृपालु होने के कारण भव्य जीवों को कीचड़ से ऊपर उठाने के लिए 'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः' सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र रूप

मोक्ष मार्ग का निरूपण करते हैं। स्वदोषों को जानना ज्ञान है, स्वदोषों को देखना दर्शन है और दोषों में रमण न करना (गुणों में रमण) चारित्र है। इस तरह निजविवेक के प्रकाश में, प्राप्त का सदुपयोग कर, साधक स्वयं के द्वारा स्वयं का अन्वेषण कर पूर्ण निर्दोष बन जाता है। दोष बाहरी हैं, अतः बाहर को छोड़कर भीतर में आकर तीर्थंकर भगवान् स्वयं तिर जाते हैं तथा मुमुक्षु आत्माओं के कल्याणार्थ बाहर से भीतर आने की प्रेरणा देते हैं। क्योंकि जब-जब जीव बाहर को छोड़कर भीतर आता है, तब-तब संवर होता है और संवर से कर्मों का क्षय होता है। कहा भी है- 'भीतर छोड़ बाहर को जावे, बाहर मिले न भीतर पावे और बाहर छोड़ भीतर में आवे, बाहर मिले व भीतर पावे।'' इसीलिए तीर्थंकर भगवन्तों का कथन है- ''तिण्णाणं- हम भीतर गये, हम भी तर गये। तुम भीतर जाओ, तुम भी तरजाओ अर्थात् तारयाणं''

प्रस्तुत शास्त्र में कीचड़ से ऊपर उठे, अनंत कृपालु प्रभु महावीर स्वामी ने व्रतों की आराधना में संलग्न बनने की प्रेरणा की है।

संघ की साधारण सभा का आयोजन सितम्बर में

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा सोमवार, दिनांक 21 सितम्बर, 2009 को अहमदाबाद (गुजरात) में रखी गई है। गुणी-अभिनन्दन समारोह 20 सितम्बर को आयोज्य है।

अहमदाबाद में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 9 तथा व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 16 के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त होगा।

संघ के सभी सदस्यों से विनम्र अनुरोध है कि संघहित में आप बैठक में कोई सुझाव रखना चाहें तो अपने सुझाव लिखित में संघ के प्रधान कार्यालय को 31 जुलाई, 2009 तक भेजने की कृपा करें। संघहित के उपयोगी सुझावों पर यथोचित विचार व निर्णय करने का हमारा प्रयास रहेगा। संघ सदस्यों को साधारण सभा में भाग लेने की आप अपने क्षेत्र में सूचना करें।

-नवरतन डागा, महामंत्री

धारावाहिक (क्रमशः 62)

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- जम्बूकुमार के निश्चयपूर्ण कथन को सुनकर माता-पिता ने जम्बूकुमार के सास-श्वसुर को उन्हें समझाने के लिए बुलाया। सास-श्वसुर ने जम्बूकुमार को पुत्र-कर्त्तव्य का बोध कराया। जम्बूकुमार ने जीवन की क्षणिकता को समझाते हुए क्षण मात्र भी प्रमाद न कर पूर्वोपार्जित कर्म का क्षय करने की बात कही। जम्बूकुमार के वैराग्य युक्त वचनों का श्रवण कर उनके माता-पिता, सास-श्वसुर सभी को संसार की असारता समझ आई। वे सभी ऐसे सुयोग्य, धर्मनिष्ठ पुत्र एवं दामाद को प्राप्त कर कृतकृत्य हुए तथा सभी उनके साथ संयम धारण करने को तैयार हो गए। पूर्व में प्रभव चोर का वृत्तान्त पाठक पढ चुके हैं, उसी क्रम में आगे.....

प्रभव चोर जम्बूकुमार के साथ संयम धारण करने के लिए उद्यत हो गया था। जम्बूकुमार के सहयोग से वह महाराज कौणिक के पास पहुँचा। उसने अतीव विनीत स्वर में कहा-

प्रभव- महाराज! मैं आपका बड़ा अपराधी हूँ। जिसे पकड़ने के लिए आपने अपनी सम्पूर्ण शक्ति खर्च कर दी है, फिर भी जो हाथ न आया वही भयंकर व्यक्ति आज श्रीमान् के सामने उपस्थित है।

कौणिक- कौन हो तुम, प्रभव तो नहीं?

प्रभव- जी हाँ पृथ्वीनाथ, दास का यही नाम है।

कौणिक- तो तुम आज यहाँ कैसे? क्या तुम्हारी हिम्मत अब इतनी बढ़ गई है कि तुम निस्संकोच होकर राज-सभा में प्रवेश कर सकते हो?

प्रभव- महाराज! आपके समक्ष उपस्थित होने में हिम्मत की भला क्या आवश्यकता है? आप तो प्रजा-पालक हैं। प्रजा के पिता हैं। मैंने

यद्यपि कानून भंग किया है, फिर भी हूँ तो आप की ही प्रजा। और इस नाते आप मेरे भी पिता हैं, पालक हैं। पिता के पास पुत्र का आना प्रशंसनीय हिम्मत का काम नहीं है।

कौणिक– तो इतने दिनों तक क्यों उपस्थित नहीं हुए?

प्रभव– अन्नदाता! इतने दिनों तक मैं पापी था। पापी मनुष्य के परिणामों में अत्यन्त संक्लेश रहता है। उसका हृदय भीतर से अत्यन्त भयभीत रहता है। वह दूसरों की बात ही क्या, अपने आपसे ही डरता रहता है। जहाँ भय का कारण नहीं वहाँ भी पापी कांपता रहता है। इसी कारण अब तक आपके दर्शन से मैं वंचित रहा हूँ।

कौणिक– अभी तक तुम पापी थे, इससे क्या तात्पर्य? क्या तुम अब निष्पाप हो गए।

प्रभव– जी हाँ, मैं अब निष्पाप हूँ। पुराने पापों को मैंने पश्चात्ताप की धूनी में भस्म करने का प्रयास किया है।

कौणिक– अच्छा, तो यहाँ आने का क्या प्रयोजन है?

प्रभव– जी, यहाँ आने का एक विशेष उद्देश्य है। मैंने अनीतिपूर्वक, जनता को दुःख देकर जो धन डकैती द्वारा संचित किया है वह सब आपके चरणों में रख देने के लिए उपस्थित हुआ हूँ।

कौणिक ने चकित होकर पूछा– "अरे प्रभव। तुझे यह तत्त्व ज्ञान किसने सिखाया है?

प्रभव– मेरे चौर्य-कर्म ने! न मैंने चोरी करने को अपना पेशा बनाया होता, न मैं जम्बूकुमार के घर चोरी करने जाता। वहाँ चोरी करने गया और उन्होंने मुझ पर अपना जादू चला दिया। मैं उन्हें लूटने गया था, उन्होंने मेरे पापों को लूट लिया। उनकी बातों ने मेरी आँखे खोल दी। उनका आध्यात्मिक उद्‌बोधन सुन कर मैं पापों से मुक्त हो गया। अतएव मुझे जो ज्ञान प्राप्त हुआ है उसका पहला श्रेय मेरे चौर्य कर्म को है और दूसरा श्रेय श्री जम्बूकुमार जी को है।

इतना कहकर प्रभव ने आदि से अन्त तक सारा वृत्तान्त महाराज कौणिक को सुना दिया।

तब **कौणिक** ने कहा- प्रभव! मैं आज बहुत प्रसन्न हूँ। तुम सत्पथ पर आ ग़ए हो इससे प्रजा में शांति रहेगी। तुमने अपने अपराधों को इस प्रकार स्वीकार किया है कि अब तुम्हें दण्ड देने की आवश्यकता नहीं रही। यही नहीं, बल्कि तुम्हें मैं कुछ पुरस्कार देना चाहता हूँ। राज्य कोष से तुम्हारे खर्च का प्रबन्ध कर दिया जाएगा। अब तुम बिल्कुल निर्भय रहना।

प्रभव- स्वामिन्! आपकी ओर से तो मुझे निर्भयता पहले भी थी और अब भी है। पहले मैं आप से तनिक भी नहीं डरता था। राज्य भर पर मेरी गहरी धाक थी। राज्याधिकारी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते थे। पर अब मैं निर्भय नहीं हूँ। मुझे अपने पापों का भय सता रहा है और मृत्यु की भयंकरता भी बेचैन बनाए हुए है। आपकी कृपा के लिए मैं अत्यन्त आभारी हूँ। आप मेरे खर्च की व्यवस्था करना चाहते हैं, पर मैंने जम्बूकुमार के साथ संयम धारण करने का पक्का इरादा कर लिया है, मैं जम्बूकुमार के साथ रहकर भगवद्-भक्ति में शेष जीवन यापन करूँगा और पुराने पापों का प्रायश्चित्त करूँगा-संयम की साधना में अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दूँगा। 'जे कम्मे सूरा ते धम्मे सूरा' अर्थात् जो कर्म उपार्जन करने में समर्थ होते हैं वे धर्म उपार्जन करने में भी शक्तिशाली हो सकते हैं। भगवान के इस वाक्य का मैं उदाहरण बनूँगा। आप आशीर्वाद दीजिए।

महाराज कौणिक को प्रभव के विचार जानकर परम प्रसन्नता हुई। उन्होंने कहा-"प्रभव! तुम धन्य हो। सुबह का भूला शाम को ठिकाने आ जाए तो वह भूला नहीं कहलाता। तुमने सारे संसार के सामने एक बड़ी भारी मिसाल पेश कर दी है। इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में तुम्हारा नाम अंकित रहेगा। तुम्हारे विमल चरित्र से सैकड़ों मनुष्य नवीन स्फूर्ति नई प्रेरणा प्राप्त करेंगे। तुम्हारे उदाहरण से न जाने कितनों को आश्वासन मिलेगा। इतने नीचे से सहसा इतने ऊँचे चढ़ जाना सचमुच वीरों की पहचान है। मुझे तुमसे आज ईर्ष्या होने लगी है। तुमने हम जैसों को मात कर दिया है। मैं हृदय से तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ। तुम्हारा जीवन अतिशय धन्य है।"

प्रातःकाल होने के साथ ही जम्बूकुमार और प्रभव का वृत्तान्त सम्पूर्ण नगरी में फैल गया। जो जहाँ था, वह वहीं जम्बू और प्रभव के सम्बन्ध में बातचीत कर रहा था। पहले जो सुनता, वही निराधार अफवाह

समझ कर टाल देता। फिर विश्वस्त प्रमाण मिलने पर आश्चर्य सागर में डूब जाता। सोचता भला, बड़े आश्चर्य की बात है कि चम्पा में त्राहि-त्राहि मचा देने वाला, दया और धर्म के पास भी न फटकने वाला, दुर्दमनीय डाकू, प्रभव सच्चे रास्ते पर आ गया और वह भी आनन-फानन में। सच है यदि उपदेशक में सच्ची धर्म भावना हो, उपदेशक के वचन उसके जीवन के अन्तरतम से ओत-प्रोत होकर निकलें तो श्रोता पर बिना प्रभाव डाले नहीं रहते।

नगरनिवासी जन प्रभव के परिवर्तन पर एक ओर आश्चर्य प्रकट कर रहे थे और दूसरी ओर जम्बूकुमार की प्रशंसा कर रहे थे। कहते थे- धन्य है जम्बूकुमार! आंधी के समान उच्छृंखल यौवन को पाकर लोग मतवाले बन जाते हैं। हिताहित और उचित-अनुचित की ओर उपेक्षा का भाव रख कर भोग-विलास में मस्त हो जाते हैं। यहाँ तक कि अपने कुल की प्रतिष्ठा और अपनी मर्यादा को भी भूल जाते हैं, पर जम्बूकुमार को देखो। कल उनका असीम सौन्दर्य की राशि आठ कन्याओं के साथ विवाह हुआ था और आज संयम धारण करने के लिए तैयार हो गए हैं। उनके त्याग और वैराग्य की जितनी प्रशंसा की जाए, थोड़ी है। ऐसे महान् पुरुष हमारे देश के, हमारे नगर के भूषण हैं। वे अपने उच्च चरित्र से जगत के समक्ष शिक्षाप्रद पाठ उपस्थित करते हैं। उनके अनुकरण से पतितों का उत्थान होता है। प्रभव जैसे प्रकृष्ट पापी को क्षण भर में दानव से देव बना देना क्या आसान काम था? राज्य की सम्पूर्ण शक्ति से जो न हो पाया वह जम्बूकुमार के उदार चरित्र से सहज ही हो गया।

इसी प्रकार जम्बूकुमार की नवविवाहित पत्नियों को भी लाख-लाख अभिनन्दन है, जिन्होंने यौवन मंदिर की प्रथम पंक्ति पर पदार्पण करते ही परम मंगल धर्म का आश्रय लिया है। उन्होंने भोग-लालसा को लात मारकर, प्राप्त काम भोगों का परित्याग करके, सच्ची पति परायण अर्द्धांगना की भांति अपने पति के प्रशस्त पथ का अनुसरण किया है। ऐसी माननीय महिलाएँ इस मही-मंडल की मंडन रूप हैं। इनका पावन आदर्श चिरकाल तक पृथ्वी पर अमर रहेगा और विषय वासनाओं के कीचड़ में पड़े हुए नर-नारियों का उद्धार करता रहेगा।

माता-पिता की अपने पुत्र पर यों ही अगाध ममता होती है, पर पुत्र यदि अकेला हो और वैभव की प्रचुरता हो तो पुत्र स्नेह की सीमा ही नहीं रहती है। ऐसी अवस्था में जम्बूकुमार के माता-पिता और सास-ससुर को भी धन्य है, जिन्होंने जम्बूकुमार के पथ का रोड़ा न बन कर संयम धारण करने में उनका साथ दिया है। उनके यहाँ किस वस्तु की कमी है? करोड़ों की सम्पत्ति है। स्वर्ग सदृश भोगोपभोग भोगने के प्रभूत साधन प्रस्तुत हैं। फिर भी उन्हें ठुकरा दिया है। धन्य है इस आदर्श त्याग को।

नगर के प्रतिष्ठित पुरुषों के पास जब संवाद पहुँचा तो उन सभी के हृदय जम्बू परिवार की भूरि-भूरि सराहना करने लगे। भक्ति और अनुराग से उनका हृदय गद्‌गद् हो उठा। मन ही मन उनकी प्रशंसा करते हुए सब लोग मिलकर जम्बूकुमार के घर आए और कहने लगे-"प्रिय जम्बूकुमार! आपकी दीक्षा के समाचार से हम लोग आश्चर्यान्वित हो गए हैं। इस यौवन में, इस परिस्थिति में भी आप जल में कमल की तरह विषय भोगों से सर्वथा अलिप्त हैं, यह जानकर श्रद्धा से हमारा मस्तक आपके सामने झुक जाता है। हम लोगों में कई बूढ़े हो गए हैं। कई मृत्यु का आलिंगन करने के लिए तैयार बैठे हैं फिर भी हमसे संसार त्यागते नहीं बनता। हम लोग विषयों के कीड़े बने हुए हैं। और आप इस नवयौवन अवस्था में ही विषयों की दासता को तिलांजलि देकर संयम साधना करने के लिए तैयार हो गए हैं। आपकी हम लोग जितनी प्रशंसा करें, थोड़ी ही होगी।

मगर एक बात हमें कहनी है। आप जैसे अपने परिवार के एक अनमोल मोती हैं उसी प्रकार चम्पा नगरी के भी चमकते हुए हीरें हैं, हम लोगों का भी आपके माता-पिता की तरह ही, आपके ऊपर अधिकार है। वही अधिकार और वही अनुराग हमें यह कहने के लिए बाध्य करता है कि आप अभी साधु धर्म को अङ्गीकार न करें। पहले संसार का थोड़ा और अनुभव प्राप्त कर लेने के बाद आप प्रसन्नता पूर्वक दीक्षा धारण करें। ऐसा करने से आपका मन संयम में अधिक एकनिष्ठ होगा। दूसरे, हमारे नगर की शोभा, जो आपकी दीक्षा से सहसा फीकी पड़ जाने वाली है, कुछ अधिक दिनों तक बनी रहेगी। आशा है आप हमारे इस प्रस्ताव को स्वीकार करेंगे।"

जम्बूकुमार-"गुरुजनों! आपका सदा से मुझ तुच्छ बालक पर

असीम स्नेह रहा है। वही स्नेह आज आपको इस आग्रह के लिए प्रेरित कर रहा है। मैंने कभी आपकी आज्ञा नहीं टाली। अब भी मैं आपके आदेश का उल्लंघन करना नहीं चाहता। मगर एक शर्त आपको भी माननी पड़ेगी।''

नगर-निवासियों ने समझा- जम्बूकुमार हमारे आग्रह को स्वीकार करते हैं। उससे उनके हृदय में आशा का संचार हुआ। नगरवासी कहने लगे- ''आपकी शर्त पूरी कर देने में हमें कोई आपत्ति न होगी। आप खुशी से अपनी शर्त रखिए। हम उसे पूर्ण करने को प्रस्तुत हैं।'' (क्रमशः)

वह पानी मुल्तान गया

श्री जशकरण डागा

'आत्मज्ञान' का सम्बन्ध किसी जाति विशेष से नहीं होता है। इस तथ्य की पुष्टि में एक प्रसिद्ध उक्ति से सम्बद्ध घटना है - 'वह पानी मुल्तान गया'।

एक बार महात्मा कबीर, उन्हीं के समकालीन संत रैदास जी की प्रशंसा सुनकर, उनसे मिलने गये। संत रैदास जी की कुटिया में जल के अलावा कुछ उपलब्ध नहीं था। अतः रैदास जी ने उनका स्वागत करते हुए पीने हेतु जल प्रस्तुत किया। महात्मा कबीर ने जल पीने से आनाकानी की कारण कि संत रैदास जाति से चमार (हीन जाति के) थे। किन्तु संत का विशेष आग्रह होने से जल पीना स्वीकार करना पड़ा। कबीरदास ने ज्योंही जल पीने हेतु आने हाथों को धोबा बनाया, संत रैदास जी ने कमण्डल से जल डालना शुरू किया। कबीर ने नीच जाति के प्रति ग्लानि होने से जल न पीकर उसे धोबे से लेकर नीचे से निकाल दिया, जिससे उनका कुर्त्ता भीग गया। वे अपने घर आकर, अपनी पुत्री कमाली (जो मुलतान ब्याही हुई थी) से कहा- बेटी, जरा इस कुर्त्ते को धो डालो। कमाली ने ज्योंही उस कुर्त्ते को धोया, उसे आत्मज्ञान हो गया और वह कहने लगी-पिताजी, जिससे आप ग्लानि कर रहे हैं वह तो अमृत है। देखिये, इसके स्पर्श मात्र से मुझे विशिष्ट अनुभूति होकर आत्मज्ञान हो गया है। महात्मा को पश्चात्ताप हुआ अपनी गलती पर। उनके मुँह से सहसा निकल पड़ा- 'जाति पांति पूछे नहीं कोऊ, हरि को भजे सो हरि सम होऊ।' महात्मा कबीर पुनः संत रैदास जी के पास गए। ज्ञान चर्चा के बाद पुनः उनसे जल पिलाने की प्रार्थना की। संत रैदास जी ने हँस कर कहा- कबीर जी वह पानी तो मुलतान गया। अर्थात् वह पानी रूप अमृत तो कमाली के पास पहुँच गया। जो चला गया वह अब नहीं मिल सकता है। कहते हैं तभी से यह कहावत चल पड़ी- 'वह पानी मुलतान गया।'

- डागा सदन, संघपुरा, पो. टोंक-304001 (राज.)

कविता

पायें मुक्ति पथ की धारा

श्री मनमोहनचन्द बाफना

(दीक्षा प्रसंग 28 मई, 2009 के अवसर पर रचित)

(तर्ज : चेतन चिदानन्द चरणों में)

गुरु तुम्हारे चरण कमल पा, जीवन अर्पित कर सारा।
बढ़ें चलें हम रुकें ना क्षण भी, हो यह दृढ़ संकल्प तुम्हारा।।

आत्म साधनों को पाने में, सब कुछ छोड़ के आये हैं,
चाह ना यश की और कीर्ति की, ज्ञान के रंग में रम पायें हैं।
जागा स्वयं, जगाया गुरु ने, जीवन सफल हो पा उद्धारा।।

नई चेतना मन में समाये, मन दृढ़कर गुरु सेवा को धारें,
कांटे बुहारें बिछे जो पथ में, गुरुवर से पा सबल सहारे।
क्रिया कठिन का पालन करते, ज्ञान निखरता अभिनव प्यारा।।

ज्यूं-ज्यूं कदम बढ़ेंगे आगे, स्वतः मार्ग मिल जायेगा,
हीरा गणी और मान गुरु पा, निरमल मन बन पायेगा।
विषय कषाय को पतला करके, तब हो जीवन पथ उजियारा।।

मोह ममता परिजन के त्यागी, परिग्रह का परित्याग किया,
अनंत-अनंत पुण्याई पाकर, हीरा मान का साथ मिला।
समाचारी को शुद्ध निभाकर, श्वेत चदरिया उज्ज्वल धारा।।

श्रद्धा का घृत ज्ञान की बाती, आतम दीप जलाये जा,
स्वर्णिम आया, स्व चिंतन से, करमों को काट दिखाये जा।
अक्षय आनन्द पाने मुमुक्षु, रत्नवंश का सबल सहारा।।

विनय भावों से नत मस्तक हम, आत्मार्थी मनोबल पाकर,
दशों दिशायें मंगल गाकर, अवसर अमर पथों को पाकर।
'मन में मोह न' रख अब हिय में, पायें मुक्तिपथ की धारा।।

-112/109, पोखरपुर, लाल बंगला, कानपुर

उपन्यास (5)

सुबह की धूप

श्री गणेशमुनि जी शास्त्री

पूर्ववृत्तः- आगरा हवाई अड्डे पर आलोक मीरा से मिला और उसी के साथ उसके घर गया। उसने सूचना दी कि परीक्षा पास करने के बाद इंग्लैण्ड जाने का उसका कार्यक्रम बड़े भाई विश्वास के कारण सन्देहपूर्ण हो गया है। आलोक ने मीरा के पिताजी को यह वचन दिया कि वह मीरा से ही विवाह करेगा, अन्यथा किसी से नहीं। मीरा के साथ घर आने पर किशनलाल ने आलोक से कहा कि तुम भी शादी से पहले प्रेम का नाटक खेलने लगे हो। प्रत्युत्तर में आलोक कहता है.....

'जी! वो वहाँ मिल गई थी, इसीलिए। वैसे, उसके पिताजी आप से बात करने आयेंगे।'

'मैं सब जानता-समझता हूँ।'

'उसके पिताजी बहुत अच्छे व्यक्ति हैं। हमेशा ही आपकी तारीफ करते रहते हैं।'

'कोरी तारीफों से पेट नहीं भरता आलोक! क्रान्तिलाल को मैं बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ। उसने एक बार मेरा लायसेन्स समाप्त करवा दिया था। मैं भूला नहीं हूँ। उसकी वे बातें, अब भी मेरे हृदय में तीर की तरह चुभती रहती हैं।'

'उन्होंने यह सब मुझे कभी नहीं बताया?'

'ये क्यों बतलाने जायेंगे? वह इन बातों को भूल सकता है। मैं नहीं भूल सकता। खबरदार! जो अब कभी उसका नाम अपने मुख पर लाया।'

'आजकल में, वे खुद ही आप के पास आयेंगे।'

'मुझे नहीं मिलना है उससे।'

पिता-पुत्र की झिक-झिक सुनकर, शान्ति भी घर से बाहर आ गई। आलोक ने बढ़कर उसके पाँव छू लिये।

शान्ति ने किशनलाल की ओर एक रहस्य भरी निगाह से देखा, फिर उनसे पूछा- 'क्या बात है? क्रोध क्यों आ रहा है आपको?'

'अपने सपूत से पूछो। क्रान्तिलाल की गाड़ी में, उसकी लड़की के साथ आये हैं महाशय!'

'तो क्या हो गया।'

'वह मेरा दुश्मन रह चुका है। उसका वश चलता, तो वह मुझे जेल भी भिजवा सकता था। भगवान की कृपा थी, जिससे मेरा कुछ नहीं बिगड़ा।'

'गलत काम आप करोगे, और दुश्मन दूसरे को बताओगे। बेचारे क्रान्तिलाल को क्यों लपेट रहे हो?'

'हाँ, हाँ, लपेट रहा हूँ। अब बोलो?'

'आप भी पिताजी, किस व्यर्थ के चक्कर में पड़ गये। मुझे अचानक बुलाने का कारण तो आपने बताया नहीं। इधर-उधर की बातें शुरू कर दीं।

'अब तुम्हें अपनी पढ़ाई छोड़ देनी है। यहाँ आकर व्यापार देखना है।'

'फिर मेरे इंग्लैण्ड जाने के कार्यक्रम का क्या होगा? टिकिट तक बुक करा लिये हैं।'

'मेरी छाती में एक घाव तो अभी-अभी बना है। अब दूसरा घाव बनाने की नींव भी डाल दूँ। मुझे किसी पागल कुत्ते ने नहीं काटा है, जो अब तुझे भी इंग्लैण्ड भेज दूँ।'

'लेकिन पिताजी!'

'अब पिताजी-पिताजी कुछ नहीं चलेगा। एक वर्ष कम से कम, ठहरना होगा तुझे। तब तक, तेरा विवाह हो जाये। फिर चाहे तो चला जाना।'

'विवाह के पश्चात्? कैसी बातें कर रहे हैं पिताजी! मुझेअपने पैरों पर तो खड़ा हो लेने दीजिए पहिले...माँ! यह सब क्या है? मेरी समझ में नहीं आ रहा है।'

'नहीं समझा है, तो ठीक से समझ ले। इंग्लैण्ड जाकर, विश्वास ने मेरे साथ विश्वासघात किया है। वह वहीं से शादी करके आ गया। आखिर तू भी तो उसी का भाई है। मुझे अब तुम लोगों पर कतई भरोसा नहीं रह गया है।'

'विवाह, कोई गुड्डे-गुडियों का खेल है पिताजी! मिट्टी का घड़ा भी हम घर लाते हैं तो उसे ठोक-बजा कर लेते हैं। फिर, एक दूसरे के विचारों को समझे बगैर, मैं किसी लड़की का भार नहीं उठाना चाहूँगा। मैंने मीरा से विवाह

का वायदा कर लिया है। जो औपचारिकताएँ होती हैं, वे आप पूरी कर लें।'

'मीरा से तुम्हारा विवाह नहीं हो पायेगा।'

'तब किसी से मेरा विवाह नहीं हो पायेगा।'... बड़े भैया, आप की राय लिये बिना ही विवाह कर सकते हैं। और मैं, आपसे राय माँगकर भी नहीं कर सकता। ठीक है। मुझे विवाह ही नहीं करना है।'

'अच्छा तो यह बात है। लगता है, रबड़ी के भी दाँत निकल रहे हैं।

'आप शान्तिपूर्वक सोचिये पिताजी!'

'मुझे कुछ भी सोचना-वोचना नहीं है।' -कहकर झल्लाता हुआ किशनलाल पीछे मुड़ा, और पत्नी को सम्बोधित करते हुए बोला-'शान्ति! तुम मेरी अटैची लगा दो। मेरा मस्तिष्क, और अधिक अशान्त होता जा रहा है। पांच-सात दिन बाहर घूम-फिर कर आता हूँ।'

'माँ! तुम्हीं समझाओ न पिताजी को।'

'तू अभी जाकर आराम कर।.....इनका तो दिमाग खराब हो रहा है। जा, तू अन्दर जा। मैं सब समझा लूँगी।'

आलोक, बुझे-बुझे मन से अन्दर चला गया। और किशनलाल अपना माथा थाम कर सोफे पर बैठ गया।

'अब क्या सोचने लगे?' शान्ति ने उसकी विचार-मुद्रा भग्न की।

'क्या सोचना शेष रह गया है। देख रहा हूँ, अच्छा-भला सा महल, खण्डहर होने की स्थिति में आ गया है।'

'इसके जिम्मेदार आप हैं।'

'हाँ, इसका जिम्मेवार मैं हूँ। और कह लो जो कुछ कहना हो। तुम्हारी तो कोई जिम्मेदारी है ही नहीं जैसे। तुमने जो कुछ किया, बिगाड़ा, वह सब, मेरे सिर पर डाल दिया, अच्छा है।'

'हर समय आवेश में बने रहना, अच्छा नहीं होता। आलोक आया तो उस पर भी वैसे ही बरसने लगे, जैसे कल विश्वास पर टूट पड़े थे।'

'बरसता नहीं तो क्या करता? मैं इन सबकी भलाई के लिए क्या-क्या सोचता हूँ, और ये लड़के क्या का क्या करके आ जाते हैं। दो को तुमने देख लिया है। अब तीसरा क्या गुल खिलायेगा? कौन जानता है? मेरा तो दिमाग ही

काम नहीं कर रहा है, इनकी हरकतें देखकर।'

'अभी आप आराम कीजिए। मैं चाय भिजवाती हूँ। तसल्ली से विचार कीजिए, तब कुछ निर्णय कीजिए। आलोक को मैं समझा लूँगी।....वैसे क्रान्तिलाल, अपनी लड़की देने के लिये हमारे घर आ रहा है, यह क्या कोई कम बात है?'

किशनलाल कोई उत्तर न देकर, चुपचाप सोफे पर लेट गया।

सूरज के अस्त होते ही रजनी ने अपने पग पसारने शुरू किये, तो हलका सा धुंधलका चारों ओर भर गया। आकाश में छाये घने काले बादलों ने तो इसे और भी ज्यादा गहरा कर दिया।

'शान्ति, अभी भी आंगन में बैठी पत्रिका के पन्ने उलट रही है' – यह देखकर मोतीराम उसके पास पहुँचा, और बोला–'मालकिन! पढ़ना ही है तो अन्दर चल कर पढ़िये। यहाँ रोशनी काफी कम हो गई है। आँखों पर ज्यादा जोर डालने से कमजोर हो जाती हैं।'

सेवक की आत्मीयता भरी अनुनय सुनकर शान्ति का मन प्रमुदित हो गया। उसने हलके से मुस्कुराते हुए, उसकी ओर देखा, और पूछा–'विश्वास के पापा ने खाना खा लिया?'

'दो बार कह चुका हूँ। एक ही उत्तर है– मेरी इच्छा नहीं है मोतीराम!'

'यह भी कोई बात है। खाना तो आखिर खाना ही पड़ेगा।.... आलोक कहाँ है?'

'मंझले बबुआ तो तभी गुस्से में बाहर चले गये थे। घण्टा भर होने को आ गया। अब तक तो लौटे नहीं हैं।'

क्या जमाना आ गया है। जरा–सा भी कहना–सुनना आज के लड़कों को सहन नहीं होता। मैं तो तंग आ गई। किसका पक्ष लूँ?.... तू चल, खाना लगा। मैं उन्हें लिवा कर आती हूँ।'

मोतीराम अन्दर चला आया। और शान्ति, अपना आंचल सम्हालती हुई अपने पतिदेव के कमरे की ओर चलने लगी।

किशनलाल, गम्भीर मुद्रा बनाये, अभी तक सोफे पर ही बैठे थे।

शान्ति, सीधी उनके पास आई, बगल में बैठती हुई बोली–'भोजन तो

कर लेते।'

'भूख नहीं है।'

'भोजन से दुश्मनी क्यों कर रहे हैं? चलिए, उठिए। खाना खाकर फिर आराम से बैठे रहिएगा।'

'आलोक कहाँ है?'

'बाजार की ओर गया हुआ है। जब आ जायेगा, तब खा लेगा वह।'

किशनलाल, चुपचाप खाना खाने चला गया।

भोजन कर रहे किशनलाल को कुछ शान्त देखकर शान्ति बोली- 'इतने गंभीर तो जीवन में कभी नहीं हुए आप! ऐसा क्या पहाड़ टूट गया है?'

'पहाड़ तो नहीं टूटा शान्ति! मगर, सोचता हूँ, विश्वास के जाने से एक हाथ तो टूट ही गया है।'

'एक तो टूट गया, अब दूसरा क्यों तोड़ रहे हो?'

'मैं तोड़ रहा हूँ, यह क्या कह रही हो तुम!'

'आवेश में मत आइये। शान्ति से खाना खा लीजिए।'

किशनलाल ने जैसे तैसे, कुछ खाना खाया, और उठ कर बाहर निकलने ही वाला था कि आलोक वहाँ आकर अपनी माँ से बोला- 'माँ! क्रान्तिलाल जी आये हैं।'

'कहाँ हैं?'

'बाहर लॉन में खड़े हैं।'

शान्ति, तेजी से किशनलाल के पास पहुँची, और बोली-क्रान्तिलाल जी आये हैं। बाहर खड़े हैं। जाइये, उन्हें अन्दर ले आइये।'

'क्यों आया है वो?'

'अरे, किसी काम से ही तो आये होंगे। घर आया तो दुश्मन भी मेहमान होता है।'

'ठीक है।'

किशनलाल अन्दर से बाहर निकलकर आया, और, क्रान्तिलाल को देख कर बोला-'आइये! अन्दर आइये क्रान्तिलाल जी! आज इधर कैसे भटक गये।'

(क्रमशः)

नारी-स्तम्भ

पानी की कहानी हमने कितनी जानी

श्रीमती अभिलाषा हीरावत

"पानी का अपव्यय हो कम, इस तरह का हो जीवन"

"रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गए ना उबरै, मोती मानस चून ।।"

उपर्युक्त दोहा आप सभी ने संभवतया बचपन से ही पढ़ा होगा, सुना होगा और शायद अनेकों को कंठस्थ भी होगा। सचमुच पानी की अपनी एक अलग कहानी है इसकी मूल्यवत्ता उपर्युक्त दोहे से स्पष्ट ध्वनित होती है। वही मोती अपनी अलग कीमत रखता है जो पानीदार होता है और आदमी की प्रतिष्ठा भी पानीदार होने में ही है। बिना भोजन कुछ दिन निकाले जा सकते हैं, लेकिन पानी के बिना अधिक समय निकालना प्राणों के लिए संकट का कारण बन जाता है, यही कारण है कि व्यक्ति जब कभी भी बीमार पड़ता है तो सबसे पहले ग्लूकोज चढ़ाया जाता है। जिसमें अधिकतम भाग पानी का होता है और रोगी तुरन्त स्वस्थता का, सशक्तता का अनुभव करता है।

यदि हम किसी के घर जाते हैं और सम्मान, सत्कार नहीं होता, आवभगत नहीं होती तो हमारी सीधी प्रतिक्रिया इन शब्दों में होती है कि पानी का नहीं पूछा। संस्कृत में एक दोहा है-

"अजीर्णे भैषजं वारि, जीर्णे वारि बलप्रदम्।
भोजने चामृतं वारि, भोजनान्ते विषप्रदम्।"

अर्थात् अजीर्ण में पानी औषध का काम करता है। पाचन में बल प्रदाता होता है। भोजन के मध्य पानी अमृत का काम करता है। भोजन के तुरन्त बाद विष का काम करता है। उल्लिखित श्लोक में तीन स्थानों पर पानी की महत्ता स्पष्ट नजर आती है। कुल मिलाकर पानी जीवन का अमृत है, प्राण है और अति आवश्यक तत्त्व है।

परन्तु आज पानी का कितना दुरुपयोग हो रहा है, कितना अपव्यय हो रहा है, यह एक विचारणीय प्रश्न है और खेद तो तब होता है जब जिनशासन में जन्म लेने वाले महावीर के अनुयायी कहलाने वाले जैनी पानी के दुरुपयोग को लेकर

अविवेक का परिचय देते हैं। जिसमें हमारी बहनों का तो कहना ही क्या? साफ-सफाई के नाम पर पानी का ऐसा दुरुपयोग कर रही हैं मानो विवेक का पाठ पढ़ा ही नहीं। मैं मानती हूँ घर-परिवार के सफाई के दायित्व में पानी का उपयोग जरूरी है, लेकिन यदि विवेक के साथ इस सफाई के कार्य को अंजाम दें तो बहुत कुछ पानी का अपव्यय रोका जा सकता है। याद रखें- 'जल है तो कल है', 'खुला रखोगे नल तो प्यासे रहोगे कल।' आँकड़े बताते हैं कि धरती का तीन चौथाई हिस्सा पानी से लबालब होने पर भी धरती पर जल संकट बढ़ रहा है, क्योंकि उसमें से 97 प्रतिशत पानी खारा है और पीने योग्य नहीं है। लगभग बीस करोड़ लोग हर वर्ष गंदा पानी पीने की वजह से बीमार पड़ते हैं और दो लाख लोग हर वर्ष दूषित जल पीने से मर जाते हैं।

हम गुरु भगवन्तों के प्रवचनों में सुनते हैं कि पानी की एक बूँद में असंख्यात जीव होते हैं-

"प्राणी एकज बूँद में अति कहिया जिन राज।
सरसों सम काया करे, जम्बू द्वीप न माय।।"

श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने चर्चा करते हुए फरमाया कि पानी में इतने जीव होते हैं कि सरसों के आकार जितना अपना शरीर धारण कर लें तो पूरे जम्बूद्वीप में नहीं समा सकते हैं। पानी का धड़ल्ले से अपव्यय करने वाले नहीं जानते कि कई जीव उसमें ऐसे हैं जो एक भव करके मोक्ष जायेंगे।

एक काचरे को छीलने की कला का अहंकार करने पर खन्दक ऋषि के जीव ने ऐसे चिकने कर्म बाँधे कि अगले भव में अपने शरीर की चमड़ी उतरवानी पड़ी। तो जरा सोचें, कल्पना करें, हम पुद्गल सुख के नाम पर झूठी मान प्रतिष्ठा के नाम पर पानी का कितना अपव्यय कर, कितनी जीव विराधना कर बैठते हैं, कितना पाप सेवन हो जाता है- कूलर, ए.सी. के नाम पर स्नान के नाम पर, लॉन के नाम पर। जितना पानी पीने में व दैनिक चर्या में काम में नहीं आता उससे कई गुना अधिक अनावश्यक/अविवेक के कारण दुरुपयोग हो जाता है। 31 मई, 2009 की राजस्थान पत्रिका में पढ़ा- "इन दिनों आप भी पेय जल संकट से जूझ रहे होंगे। मोहल्ले भर में पानी को लेकर धमा-चौकड़ी मची रहती होगी। शायद आपको जानकर हैरत हो कि दुनिया भर में पानी को लेकर कमोबेश यही हालत है। इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि धरती का 70 प्रतिशत हिस्सा पानी होने के बावजूद भारत समेत दुनिया के अधिकांश मुल्क पेयजल संकट का सामना कर रहे

हैं। पानी लोगों की पहुँच से दूर होता जा रहा है। आज के हालात भयावह कल का संकेत दे रहे हैं। दुनिया में पानी के लिए त्राहि-त्राहि मची हुई है। जमीन पर उपलब्ध शुद्ध पानी के क्षेत्र सिकुड़ते जा रहे हैं।

दुनिया का 97.2 प्रतीशत पानी लवणीय रूप में महासागरों में पड़ा है और केवल दो फीसदी पानी शुद्ध बचा है। जो बचा है वह भी बढ़ते तापमान के चलते हिमसागरों के तेजी से पिघलने की वजह से समुद्र में मिल रहा है। शुद्ध पानी का केवल 0.0001 प्रतिशत पानी नदियों में बह रहा है। ऐसे में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता लगातार घटती जा रही है। हर साल दुनिया में 12.5 से 14 अरब क्यूबिक मीटर पानी इंसान के इस्तेमाल के लिए उपलब्ध होता है। सन् 1984 में प्रति व्यक्ति 9000 क्यूबिक सालाना था। जो 2000 में घटकर 7800 क्यूबिक मीटर प्रतिवर्ष रह गया है। पानी की कमी की गति निरंतर यही बनी रही तो 2025 तक पानी की उपलब्धता घटकर 5100 क्यूबिक मीटर ही रह जाएगी। पानी की कम उपलब्धता को देखकर अब दुनिया का हर शख्स महसूस करने लगा है कि भविष्य का सबसे बड़ा खतरा जल संकट होगा, जिसके शुरुआती प्रभाव हम पिछले तीन दशकों से देखते आ रहे हैं। इसे इंसानी बदइंतजामी कहें या फिर कुदरत का कोप, लेकिन सच्चाई यही है कि अब भी नहीं चेते तो आने वाली पीढ़ी पानी की एक-एक बूँद के लिए संघर्ष करती नज़र आएगी।

जल संकट आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर छाया हुआ है। आपको ध्यान ही होगा कई देश पानी के बँटवारे को लेकर एक दूसरे के प्रति दुश्मनी का भाव पाल बैठे हैं। हम दूर क्यों जाएँ अपने ही देश में पानी के समझौते को लेकर एक राज्य, दूसरे राज्य से विवाद करता नज़र आता है और कभी-कभी तो पानी की कमी के चलते गली मौहल्ले में सिर फुटौव्वल की स्थिति देखने-पढ़ने-सुनने को मिलती है। आखिर इस समस्या का जिम्मेदार कौन? कहीं हम ही तो नहीं? शायद आप सोच रहे होगें मेरे अकेले के पानी की मितव्ययता को लेकर सावधान होने से कौनसी समस्या का हल हो जाएगा। मगर यह सोच बहुत संकीर्ण सोच है। यहाँ मैं एक छोटी सी कहानी का उल्लेख करना चाहूँगी।

एक जगह आग लगी हुई थी, भागमभाग मची हुई थी, हर कोई अपने स्तर पर आग बुझाने का प्रयास कर रहा था। एक नन्हीं चिड़िया भी चोंच में पानी भर कर आग बुझाने का यत्न कर रही थी। उसके इस प्रयास को देखकर पेड़ की डाल पर बैठे हुए कौवे ने चिड़िया से कहा-"अरे बहन चिड़िया! तेरी चोंच में जितना

पानी आएगा उससे तो आग का एक शोला भी नहीं बुझ पाएगा, कहीं तेरा यह प्रयास व्यर्थ तो नहीं जाएगा?

तो चिड़िया ने जवाब दिया- "भैया कौवा, मैं जानती हूँ मेरे इस प्रयास से आग बुझने वाली नहीं है, मगर जिस दिन इस घटना का इतिहास लिखा जाएगा, उस दिन मेरा नाम आग लगाने वालों में नहीं, आग बुझाने वालों में आएगा।"

आप सभी सुधी पाठक मेरे कहने के आशय को समझ गए होंगे। समस्या का कितना समाधान होगा, हम अभी इस गणित में नहीं जाएँ। मगर सजगता का और विवेक का यदि जीवन जी सकें तो आप सच्चे जैन कहलाने के अधिकारी होंगे।

आइए, देखें हम किस तरह पानी की अतिशय बर्बादी को रोक सकते हैं। प्रति सैकिण्ड नल से टपकती जल बूँद से एक दिन में 17 लीटर जल का अपव्यय होता है। अदृश्य रूप से 200 से 500 लीटर प्रतिदिन जल का रिसाव होता है।

फव्वारे से स्नान करने पर 180 लीटर तथा बाल्टी से स्नान करने पर 18 लीटर पानी का व्यय होता है। शौचालय में फ्लश टैंक उपयोग से 13 लीटर पानी व्यर्थ होता है, छोटी बाल्टी का उपयोग करने से 4 लीटर पानी का उपयोग होता है। नल खोल कर शेव करने से 11 लीटर पानी बेकार होता है, मग में पानी लेकर शेव करने से 1 लीटर पानी का उपयोग होता है। नल खोल कर दंत मंजन करने से 13 लीटर पानी बर्बाद होता है। मग या लोटे के उपयोग से 1 लीटर पानी में काम चल जाता है। नल खोलकर कपड़े की धुलाई करने से 166 लीटर पानी लगता है और बाल्टी के उपयोग से 18 लीटर पानी लगता है।

एक लॉन/ कॉर्ट यार्ड में 10 से 12 किलो लीटर उपयोग किए जल से एक छोटे परिवार का एक माह का कार्य चल सकता है।

इस तरह यदि हम थोड़े से जागरूक बनें तो पानी की महाबचत कर सकते हैं और असंख्य जीवों को अभयदान देकर उनकी विराधना से बच सकते हैं, शर्त यही है कि अपने जीवन.में यतना, सजगता, विवेक जागृत करें और जल के सूक्ष्म, बादर सभी जीवों के लिए हृदय से स्व प्रेरित अनुकम्पा पैदा हो, इसी से हम स्व एवं पर के लिए हितकारी बन पाऐंगे।

(यह लेख पिचियाक में मधुर व्याख्यानी श्री गौतम मुनि जी म.सा. से चर्चा करते हुए संकलित किया गया।)

युवा-स्तम्भ

देह भोग का साधन नहीं वरन् एक दुर्लभ उपकरण है

श्री पदमचन्द गाँधी (थाँवला वाले)

आज की युवा पीढ़ी स्मार्ट बनने के लिए एवं पौद्गलिक शरीर को सुन्दर बनाने के लिए क्या-क्या जतन नहीं करती। नवयुवक एवं नवयुवतियाँ देह को संवारने एवं सजाने के लिए ब्यूटी पार्लर, जेन्ट्स पार्लर का उपयोग करते हैं। वे कितने ही प्रकार के रसायनों का उपयोग करते हैं। आज भोगवाद की आँधी में बाह्य चकाचौंध की ललक से युवा आकर्षित हैं। वे खुशी की तलाश में दर-दर भटक रहे हैं, लेकिन उनका मन अतृप्त रहता है। यह सब जानते हैं कि देह नश्वर है, आत्मा की तरह अजर अमर नहीं है, यह मात्र जड़ है जो पंच तत्त्वों में विलीन होने वाली है, फिर भी यह सत्य है कि भव-भव के जन्मों के बाद यह मानव देह प्राप्त हुई है। इसका उपयोग बहुत कम लोग आत्म चेतना के लिए करते हैं। वे जानते हैं कि देह भोग का साधन नहीं वरन् उच्च स्तरीय विकास यात्रा पर आगे बढ़ने के लिए मिला एक दुर्लभ उपकरण है। जीवन की चरम सम्भावनाओं का बीज इसी चिन्तन से अभिव्यक्त हो सकता है।

आज का व्यक्ति जहरीले आहार, नशीले पदार्थों का सेवन कर रहा है तथा भ्रष्ट आचरण के पथ पर अग्रसर हो रहा है। वह भोगों में सुख ढूंढ़ रहा है। लेकिन भोगों में रोगों की अनुभूति का अनुमान नहीं लगा पाता। आज देह का उपयोग 'वासना' हेतु किया जाता है। हमारे भीतर जीवन की अमूल्य शक्ति आनन्द एवं ऊर्जा के रूप में विद्यमान है लेकिन उस अमूल्य शक्ति के साथ ही हमारे भीतर ऊर्जा का हनन करने वाली विपरीत शक्ति भी प्रबल रूप से कार्यरत है, अतः उसके (वासना के) प्रचण्ड वेग के सामने हमारी ऊर्जा पराजित हो जाती है। ज्ञानी जन कहते हैं कि चेतना जब अपने मूलस्वरूप से हटती है तो वहाँ वासना आ जाती है, फिर सम्पूर्ण जीवन वासनामय बन जाता है।

आज विभिन्न स्तरों पर हमारे मन के भीतर वासना का भूचाल उठता रहता है। जितनी भी हमारी कामनाएँ अनैतिक कार्य से सम्बन्धित होती हैं, उन

सबके पीछे वासनाओं का ही प्रभाव रहता है। लेकिन जब हम आध्यात्मिक प्रवृत्तियों की ओर बढ़ते हैं तो हमारी प्रवृत्तियों में कुछ परिवर्तन आने लगता है तथा हम आत्मा से जुड़ने का प्रयास करते हैं। लेकिन ऐसा होना वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बहुत कठिन होता जा रहा है, क्योंकि अतृप्त कामनाओं की पूर्ति हेतु व्यक्ति इधर-उधर भटकता रहता है। वह आत्मा पर नहीं,स्थूल पुद्गल पर अधिक केन्द्रित एवं चिन्तित रहता है।

मनुष्य का 'जीवन' एक ऐसी सम्पत्ति है, जिसे वह अपना कह सकता है। जन्म एवं मृत्यु उसकी इच्छा से नहीं होते, वह केवल जीवन पर ही अधिकार जमा सकता है। व्यक्ति की देह अपनी मौलिक देन नहीं है उसका जन्म किसी और की इच्छा से हुआ है। इसे जीव के कर्मों के अनुसार भवों की स्थिति, या माता-पिता की देन कह सकते हैं, मगर एक बात सुनिश्चित है कि उसे यह जीवन पुरस्कार रूप में मिला है। इस पुरस्कार को परम आनन्द के साथ स्वीकार करें।

मानवीय देह अनन्त शुभकर्मों से फलीभूत होती है। चौरासी लाख जीव योनियों में भटकते-भटकते पुण्यवानी से मनुष्य गति प्राप्त होती है लेकिन देखने में आता है कि अधिकांश मनुष्य विषय सुखों की मोह निद्रा में ऐसे सोये रहते हैं कि सांसारिक काम भोग के दलदल में फंसते चले जाते हैं। अथवा साधन विहीन व्यक्ति काम भोगों की प्राप्ति की पिपासा में सारी जिन्दगी बिताकर मनुष्यत्व को पाने के अवसर को खो देता है तथा धर्म श्रवण का लाभ भी नहीं ले पाता है, क्योंकि वह आलस्य, मोह, विलासिता में डूबता हुआ, उसी में व्यस्त रहता हुआ, धर्मोपदेश के प्रति अवज्ञा करता है तथा जाति, कुल, बल, रूप, तप, श्रुत, लाभ, ऐश्वर्य आदि का अहंकार, क्रोध, प्रमाद, कृपणता, भय, शोक, मिथ्या धारणा, व्याकुलता, कुतूहल, क्रीड़ा परायणता इत्यादि समस्याओं से ग्रस्त हो जाता है। जो काम-भोग के प्रति रागद्वेष एवं मोह नहीं करते, उन्हें ऐसी विकृतियाँ नहीं घेरती, न ही उन्हें दुःख प्राप्त होता है।

अति भोगवादी प्रवृत्ति के कारण ही व्यक्ति भोग के विषयों का चिन्तन करता है, जिससे मात्र वासना जाग्रत होती है और उसमें विघ्न उत्पन्न करने वालों पर क्रोध उत्पन्न होता है, क्रोध से अविवेक, अविवेक से स्मृति भ्रम, स्मृति भ्रम

से बुद्धि का विनाश और बुद्धि विनाश से सर्वनाश होता है। अतः हे जीव! इस परिभ्रमण रूपी संसार में किसी बड़ी पुण्यवानी के उदय से यह मनुष्यत्व प्राप्त हुआ है इसे यूं ही मत लुटा, इसे संभालकर रख। यह बहुत कीमती उपकरण है, इसी के माध्यम से तू अपनी आत्मा का कल्याण कर सकता है, अपने कर्मों की निर्जरा कर सकता है तथा मोक्षगामी बन सकता है।

मानव की वर्तमान स्थिति बिल्कुल विपरीत हो रही है। मनुष्य अधिक से अधिक कषाय वृत्तियों को अपने जीवन में भर रहा है चाहे उन्हें कितने ही उपदेश दिए जाएं, सही मार्ग बताए जायें, उन्हें कुछ नज़र नहीं आता, कुछ सुनाई नहीं देता, वे विषयों की ओर दौड़ने में ही अपना कल्याण समझते हैं।

देह रूपी पात्र को योग्य बनाया जा सकता है। जिस तरह से लकड़ी की पेटी में हीरे-जवाहरात के आभूषण रख देने से वह 'रत्न मंजूषा' बन जाती है, उसकी कीमत बढ़ जाती है उसे बड़े हिफाजत से रखा जाता है ठीक इसी प्रकार हमारी देह रूपी मंजूषा में व्रत-नियम एवं सद्गुणों के आभूषण भर देने से देह की कीमत बढ़ जाती है। इस देह रूपी पेटी में से अवगुणों के कचरे को बाहर निकाल कर सद्गुणों से भरकर बहुमूल्य बनाया जा सकता है। यदि देह का उपयोग शरीर एवं आत्मा के भेद विज्ञान के अनुसार अलग-अलग मानकर किया जावे तो मन-वचन-काया के अनन्त विषयों में लगी हुई भी 'शुद्धात्मता' निर्विषवी रहकर मोक्ष जा सकती है। आज व्यक्ति देह एवं आत्मा के अन्तर को नहीं समझ रहा है। व्यक्ति 'जो' (आत्मा) वह है उस स्वरूप का उसे ज्ञान नहीं है, जहाँ पर 'वह' नहीं है वहाँ पर आरोप सिद्ध करता है कि 'मैं' हूँ। इससे अहं जाग्रत होता है तथा देह से मोह बढ़ता है जिससे आत्मा का शोधन नहीं होकर वह कषायों के घोलन में मलिन बन जाती है। जब 'मैं' (आत्मा) का ज्ञान प्राप्त होता है तो इन्द्रियाँ विषय-विष तुल्य प्रतीत होती हैं। आशा, इच्छा, भय, शोक आदि दोषों से मुक्ति मिल जाती है तथा क्रोधी को क्रोध से, मानी को मान से, लोभी को लोभ से और मायावी को माया से जीतने की भावना मिट जाती है।

अतः व्यक्ति देहरूपी पेटी को एक योग्य पात्र बनाकर तथा दुर्लभ उपकरण मानकर, आत्मा एवं देह में विभेद करते हुए विषय कषायों एवं वासनाओं से निर्लिप्त होकर आत्मा के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

-25, महेश नगर (विस्तार-बी), बैंक कॉलोनी, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राज.)

बाल-स्तम्भ

बहन मिल गयी

श्री दिनेश मुनि जी म.सा.

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 अगस्त 2009 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

रतनगढ़ के राजा रतनसिंह बहुत ही बहादुर और पराक्रमी थे। अनेक राज्यों के राजाओं ने उनके ऊपर आक्रमण किये, लेकिन वे सदा ही पराजित हुए। राजा रतनसिंह के सामने वे कभी विजय नहीं प्राप्त कर सके।

दुर्भाग्य से राजा रतनसिंह के कोई पुत्र नहीं था। एक-एक करके कई पुत्र हुए तो सही, लेकिन वे सभी बारह वर्ष के होकर चल बसे। राजा को हर बार उनकी मौत का धक्का लगता और वे कमजोर होते जाते। 40-45 वर्ष की उम्र में ही वे अस्सी साल के बूढ़े जैसे लगने लगे थे।

इसी बीच रानी सुमंगला ने एक पुत्री को जन्म दिया। पुत्री बहुत सुन्दर थी, लेकिन राजा को इस बात का दुःख था कि-राजपाट कौन सम्भालेगा। पुत्री का नाम उसके रूप के अनुसार रतना रख दिया गया। रतना के जन्म से राजा को कुछ हिम्मत तो बँधी, लेकिन कुछ चिन्ता बनी ही रही।

रतना का लालन-पालन राजकुमार की तरह हुआ। वह रूपवती तो थी ही, साथ में हँसमुख भी थी। क्रोधित होना और उदास होना तो उसे आता ही नहीं था।

6-7 वर्ष की उम्र से ही रतना पढ़ने-लिखने में इतनी तेज हो गयी कि उसके शिक्षक भी उसे देखकर आश्चर्य चकित हो गये। उसने घोड़े की सवारी करना और तलवार चलाना भी सीख लिया था। वह गायन कला में

भी प्रवीण हो गयी थी। कविता लिखने का भी उसे अभ्यास हो गया था। कवि लोग भी उसकी प्रतिभा से प्रभावित थे। पूरे राज्य में रतना की योग्यता की चर्चा होती थी।

पड़ौसी राजा चन्दनसिंह के मन में बहुत समय से राजा रतनसिंह और उसके राज्य के प्रति शत्रुता की भावना पनप रही थी। रतनसिंह ने कई बार चन्दन सिंह को पराजित किया था। इसलिए इसी हार का बदला लेने की उसकी इच्छा थी।

रतनगढ़ में कोई राजकुमार नहीं था। राजा कमजोर और बूढ़े हो चले थे। दूसरी तरफ चन्दनसिंह चार पुत्रों के पिता थे। वे चारों ही एक से एक बढ़कर बहादुर और युद्ध कला में प्रवीण थे। उनके नाम जितेन्द्र, नरेन्द्र, महेन्द्र और रवीन्द्र थे।

एक दिन चन्दनसिंह ने अपने बड़े बेटे को बुलाकर कहा-"राजा रतनसिंह हमारा पुराना शत्रु है, इसलिये उससे हमें अपने अपमान का बदला लेना है। तुम तीनों भाइयों के साथ रतनगढ़ पर चढ़ाई कर दो और उसे पराजित करके लौटो। राजा को बन्दी बनाकर मेरे सामने प्रस्तुत करना जिससे कि मैं उससे अपने अपमान का बदला चुका सकूँ।"

राजकुमार पिता की बात सुनकर बोला- "लेकिन पिताजी रतनगढ़ का राजा बूढ़ा है और उसके कोई लड़का भी नहीं है। केवल उसके एक लड़की है। लड़की पर हाथ उठाना वीरों को शोभा नहीं देता।"

चन्दनसिंह बहुत तेज स्वर में बोले-"जितेन्द्र! यह हमारा हुक्म है। यदि हमारी आज्ञा नहीं मानोगे तो जेल में डाल दिये जाओगे। राजकुमार चुप रह गया, क्योंकि राजा के सम्मुख वह क्या कर सकता था।"

चन्दन सिंह ने रतनगढ़ के राजा के पास अपना संदेश भेजा- "रतनसिंह अपनी पुत्री का विवाह हमारे यहाँ कर दे और साथ में आधा राज्य दे दे या फिर लड़ाई के लिए तैयार हो जाय।"

जब रतनगढ़ के दरबार में संदेश सुनाया जा रहा था, तो राजकुमारी रतना अपने पिता के पास ही बैठी थी। संदेश को सुनते ही रतना तलवार खींच कर बोली-"दूत, अपने घमण्डी राजा से जाकर कह दो कि रतनगढ़ में

अभी वीरों ने जन्म लेना बन्द नहीं किया है। इस मांग का फैसला तो अब तलवारों से ही होगा।''

राजकुमारी इतने साहस से बोली कि पूरे राज्य में उसके साहस की चर्चा फैल गई। राज्य के नवयुवकों ने खून के हस्ताक्षरों से प्रतिज्ञा-पत्र लिख कर राजकुमारी को दे दिया कि वे अपनी धरती के लिए खून की अन्तिम बूंद तक लड़ेंगे।

चन्दनपुर की सेनाएँ रतनगढ़ की सीमा पर आकर जम गयीं। रात होते-होते रतनगढ़ के सैनिक राजकुमारी के नेतृत्व में चन्दनपुर की सेना पर टूट पड़े। शत्रु की सेना के पैर उखड़ गये।

राजकुमार जितेन्द्र ने सेना के साहस को बहुत बढ़ाया लेकिन वह दो बार पहले भी पराजित हो चुकी थी, इसीलिए किसी ने भी जितेन्द्र की बात को नहीं सुना।

राजकुमार जितेन्द्र हथियारों से लैस और घोड़े पर सवार रतना को बहुत देर तक देखते रहे। राजकुमारी के चारों ओर बहादुर सैनिक हवा में तलवार लहरा रहे थे। राजकुमार राजकुमारी रतना के पराक्रम और साहस को देखकर दंग रह गया। कुछ ही देर में उसकी आँखों में आँसू आ गए। वह सैनिकों के बीच से होता हुआ सीधा रतना के पास गया। सैनिक उसे पकड़ते, इससे पूर्व ही वह झुककर रतना के पैर छूने लगा। रतना को जितेन्द्र के इस व्यवहार पर बड़ा आश्चर्य हुआ।

रतना ने अपने सैनिकों को युद्ध बन्द करने का आदेश दिया। आगे वह कुछ बोलना ही चाहती थी कि जितेन्द्र ने उच्च स्वर में कहा-''आज हम सब भाइयों को एक प्यारी-सी बहन मिल गई है। अब रतनगढ़ और चंदनपुर में एक ही राजा का राज्य होगा। हमारी बहन रतना दोनों राज्यों की शासक होगी और हम चारों भाई उसकी आज्ञा का पालन करेंगे।''

राजकुमारी रतना जितेन्द्र की घोषणा को सुनकर अवाक् रह गई। उसने तलवार को हाथ से छोड़ दिया। उसके मन में बिछोह बहुत दिनों से था और वह था भाइयों के लिए। वह बिछोह आँखों की आँसू के साथ बाहर आ गया।

राजा रतनसिंह यह सब कुछ निकट से देख रहे थे। उनकी आँखों से प्रसन्नता के आँसू टपकने लगे। उन्होंने निकट आकर रतना और जितेन्द्र को गले से लगा लिया।

इसकी खुशी में राज्यभर में खुशियाँ मनाई गईं। अनेक समारोह आयोजित किए गए और जनता में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। सभी लोग आनन्द के साथ आमोद-प्रमोद के आयोजन में सम्मिलित हुए। सभी के मुख से यह निकल रहा था कि अब शान्ति से राज्य प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा और हमारा जीवन आनन्द से व्यतीत होगा।

प्रश्न :-

1. रतनगढ के राजा रतनसिंह क्यों दुःखी थे?
2. वीरों को क्या शोभा नहीं देता?
3. सु और दुर् उपसर्ग से तीन-तीन शब्द बनाइये?
4. शान्ति ही किसी राज्य की प्रगति में सहायक बनती है। समझाइये।
5. इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती हैं?
6. इस कहानी का दूसरा उचित शीर्षक दीजिए।

बाल-स्तम्भ [मई-2009] का परिणाम

जिनवाणी के मई-2009 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'रहस्यमय राक्षस का आखेट' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 37 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 25 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	संदीप जैन-रतकुडिया	25
द्वितीय पुरस्कार-200/-	रूपमाला छाजेड़-समदड़ी	24.5
तृतीय पुरस्कार- 150/-	निती संघवी-बदनावर	24
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	दीप्ति जैन-कोटा	23.5
	प्रणत धींग-उदयपुर	23
	अकुंश जैन-खेरली	23
	रूपाली जैन-भीलवाड़ा	23
	चन्द्रेश मेहता-जोधपुर	23

स्वास्थ्य विज्ञान

रिफ्लेक्सोलॉजी एक्यूप्रेशर से उपचार

डॉ. चंचलमल चोरडिया

एक्यूप्रेशर क्या है?

एक्यूप्रेशर शब्द अंग्रेजी के दो शब्दों से मिलकर बनता है। एक्यू और प्रेशर। एक्यू का मतलब होता है एक्यूरेट अर्थात् सही और प्रेशर का मतलब होता है दबाव। अर्थात् शरीर के किसी भाग पर सही दबाव देकर रोगों के उपचार एवं स्वस्थ रहने की पद्धति को एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति कहते हैं। एक्यूप्रेशर निदान, उपचार एवं रोगों के रोकथाम की बहुत ही सरल, सस्ती, स्वावलंबी, प्रभावशाली, अहिंसक वैज्ञानिक पद्धति है।

रिफ्लेक्सोलॉजी–

एक्यूप्रेशर के रिफ्लेक्सोलॉजी के सिद्धान्तानुसार शरीर की दोनों हथेलियों और दोनों पगथलियों में शरीर के सभी अंगों, उपांगों तथा अन्तःस्रावी ग्रन्थियों से संबंधित प्रतिवेदन बिन्दु होते हैं। जिस प्रकार किसी भवन की बिजली का सारा नियन्त्रण मुख्य स्विच बोर्ड से होता है ठीक उसी प्रकार ये सभी प्रतिवेदन बिन्दु मिलकर शरीर के प्रत्येक भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब उपचार हेतु दबाव हथेलियों में दिया जाता है तो, उस विधि को हस्त रिफ्लेक्सोलोजी (Hand Reflexology) तथा जब उपचार हेतु पगथलियों का उपयोग किया जाता है तो उस प्रक्रिया को पैर रिफ्लेक्सोलोजी (Foot Reflexology) कहते हैं।

रिफ्लेक्सोलोजी एक्यूप्रेशर का सिद्धान्त–

रिफ्लेक्सोलोजी एक्यूप्रेशर के सिद्धान्तानुसार हथेली और पगथली में दबाव देने पर जिन स्थानों पर दर्द होता है, उसका मतलब उन स्थानों पर विकार अथवा विजातीय तत्त्वों का जमाव होता है। परिणाम स्वरूप शरीर में प्राण ऊर्जा के प्रवाह में अवरोध हो जाता है। ये प्रतिवेदन बिन्दु बिजली के पंखों, बल्ब या अन्य उपकरणों के स्विच की भांति शरीर के अलग-अलग भागों से संबंधित होते हैं। जिस प्रकार स्विच में खराबी होने से उपकरण तक बिजली का प्रवाह सही ढंग से नहीं पहुँचता, ठीक उसी प्रकार इन प्रतिवेदन बिन्दुओं पर विजातीय तत्त्वों के जमा होने से संबंधित अंग, उपांग, अवयवों आदि में प्राण ऊर्जा के प्रवाह में असंतुलन हो जाने से व्यक्ति रोगी बनने लगता है।

शरीर एक इकाई के रूप में कार्य करता है–

शरीर के किसी भाग में तीव्र पीड़ा होती है अथवा कष्ट होता है तो, हमें कुछ भी अच्छा नहीं लगता। प्रायः हम अनुभव करते हैं कि यदि आँख में कचरा चला जाये अथवा भोजन करते समय भोजन का कुछ अंश भोजन नली के स्थान पर श्वास नली में चला जाये तो हमें कितनी बेचैनी होती है? शरीर में तीक्ष्ण पदार्थ चुभते ही सारा शरीर कम्पायमान हो जाता है। पाँचों इन्द्रियों और मन का ध्यान उस समय वहाँ केन्द्रित हो जाता है। कहने का आशय यह है कि शरीर के सूक्ष्म से सूक्ष्मतम भाग का संबंध पूरे शरीर से होता है। इसी कारण शरीर में एक ही रोग के अनेक प्रतिवेदन बिन्दु हो सकते हैं। परन्तु इसके साथ-साथ शरीर में प्रत्येक अंग, उपांग, अवयव, अन्तःस्रावी ग्रंथियों आदि से संबंधित कुछ महत्त्वपूर्ण प्रतिवेदन बिन्दु हमारी हथेली और पगथली में होते हैं।

एक्यूप्रेशर द्वारा रोग निदान का सिद्धान्त–

हथेली और पगथली में आगे पीछे सूक्ष्म से सूक्ष्म भाग में हथेली और पगथली के पूरे क्षेत्र में अंगुलियों या अंगूठे से हम सहनीय गहरा दबाव देवें और जहाँ-जहाँ जैसा-जैसा दर्द आता है, उन दर्दों को तीन भागों में विभाजित कर अलग-अलग रंगों की पेन्सिलों से चिन्हित कर लें।

1. प्रथम वे भाग जहाँ दबाने से असहनीय दर्द होता है। ये प्रतिवेदन बिन्दु शरीर में उपस्थित रोग के परिवार के प्रमुख सहयोगी सदस्य होते हैं।
2. दूसरे वे प्रतिवेदन बिन्दु जहाँ दबाव देने से सहनीय दर्द होता है। ये प्रतिवेदन बिन्दु रोग के परिवार के विशेष सहयोगी सदस्य होते हैं।
3. तीसरे वे प्रतिवेदन बिन्दु जहाँ दबाव देने से बहुत कम दर्द होता है। ये प्रतिवेदन बिन्दु रोग के परिवार के दूर के साधारण सहयोगी सदस्य रिश्तेदार होते हैं।

जैसे परिवार के प्रमुख सदस्य प्रतिदिन घर में साथ-साथ रहते हैं। उनके सुख-दुःख में हम भी प्रभावित होते हैं। दूसरे वे सदस्य जिनका हमारे से नजदीक का रिश्ता होता है और जो साधारण आयोजनों अथवा त्यौहारों पर मिलते रहते हैं। उनके सुख-दुःख से हम उतने प्रभावित नहीं होते, जितने घर में रहने वालों से होते हैं। तीसरे वे संबंधी जिनको हम विवाह शादियों अथवा बड़े-बड़े आयोजनों पर आमंत्रित करते हैं। उनके सुख-दुःख से हम बहुत थोड़े प्रभावित होते हैं। ठीक उसी प्रकार सारे दर्द वाले प्रतिवेदन बिन्दु मिलकर शरीर में रोग के परिवार की स्थिति, एक्यूप्रेशर के सिद्धान्तानुसार बनाते हैं।

एक्यूप्रेशर प्रभावशाली क्यों?

1. जितने ज्यादा दर्द वाले प्रतिवेदन बिन्दु होते हैं, उतना रोग पुराना होता है। वह उतना संक्रामक और भयंकर होता है। हथेली और पगथली में सारे शरीर के प्रत्येक भाग के प्रतिवेदन बिन्दु होने से पूरे शरीर में रोग का निदान हो जाता है। जबकि अन्य चिकित्साओं में रोग ग्रस्त भाग की तरफ ही निदान में विशेष ध्यान दिया जाता है।
2. कभी-कभी विशेष रूप से महिलाएँ और बच्चे अपने रोग की अभिव्यक्ति बराबर नहीं कर पाते हैं। परन्तु इस विधि द्वारा निदान करते समय हथेली और पगथली में जहाँ दबाव देने से जितना-जितना दर्द अनुभव होता है उतना-उतना उस प्रतिवेदन बिन्दु का रोग से संबंध होता है।
3. प्रत्येक व्यक्ति की हथेली और पगथली उसके स्वयं की होती है अतः इस विधि द्वारा उस व्यक्ति का स्वयं से संबंधित सभी रोगों का निदान होता है। जबकि बाह्य लंक्षणों पर आधारित निदान पूरा नहीं हो सकता। उदाहरण के लिये दो घरों में शादी का उत्सव है। दोनों स्थानों पर बाह्य आयोजनों में समानता हो सकती है। जैसे बारात का आना, भोजन की व्यवस्था आदि। परन्तु उन आयोजनों में भाग लेने वाले शत-प्रतिशत सभी व्यक्ति एक जैसे नहीं हो सकते। ठीक उसी प्रकार सैकड़ों हृदय रोगियों, मधुमेह के रोगियों, अथवा और किसी नाम से पहचान वाले रोगियों के रोग का परिवार एक सा नहीं हो सकता। अतः निदान करते समय सहयोगी रोगों की उपेक्षा होना स्वाभाविक है। परन्तु एक्यूप्रेशर पद्धति द्वारा जितना सही और विश्वनीय निदान होता है, अन्यत्र प्रायः संभव नहीं होता।
4. कभी-कभी रोग के कारण कुछ और होते हैं और उसके लक्षण कहीं दूसरे अंगों पर प्रकट होते हैं, जैसे मधुमेह का कारण पाचन तंत्र का बिगड़ना भी हो सकता है, न कि पेन्क्रियाज का खराब होना। हृदय शूल का कारण छोटी आंत में बनी गैस का प्रभाव भी हो सकता है, न कि हृदय की कमजोरी का होना। अस्थमा का कारण बड़ी आंत का बराबर कार्य न करना भी हो सकता है, न कि फेंफड़ों का खराब होना। जब निदान ही गलत होता है तो उपचार कैसे प्रभावशाली हो सकता है? आधुनिक चिकित्सक ऐसे रोगों को प्रायः असाध्य बतला देते हैं। परन्तु हथेली और पगथली के समस्त प्रतिवेदन बिन्दुओं पर दबाव देने से जहाँ ज्यादा दर्द आता है, वे ही रोग से मुख्य रूप से सम्बन्धित

होते हैं, भले ही रोग के लक्षण कहीं अन्य प्रकट क्यों न होते हों? इसी कारण एक्यूप्रेशर असाध्य रोगों की प्रभावशाली चिकित्सा पद्धति होती है।

5. रोग की प्रारम्भिक अवस्था में ही इस विधि द्वारा निदान संभव होता है। जहाँ-जहाँ पर दबाव देने से दर्द आता है, वे सभी प्रतिवेदन बिन्दु शरीर में रोग की स्थिति बताते हैं। यदि रोग के लक्षण प्रकट हो गये हों तो, वे उसके कारण होते हैं, परन्तु यदि रोग के लक्षण प्रकट न हुए हों तो, भविष्य में होने वाले रोगों का कारण उन्हीं प्रतिवेदन बिन्दुओं में से होता है। रोग आने से पूर्व उसकी प्रारम्भिक अवस्था का निदान जितना सरल इस पद्धति द्वारा होता है, उतना अन्यत्र कठिन होता है।
6. शरीर में एक रोग कभी अकेला आ ही नहीं सकता। जिन लक्षणों के आधार पर आज रोगों का नामकरण किया जाता है, वे वास्तव में रोगों के नेता होते हैं, जिन्हें सैंकड़ों अप्रत्यक्ष रोगों का समर्थन और सहयोग प्राप्त होता है। परन्तु इस विधि द्वारा रोगों के पूरे परिवार का निदान सही और विश्वसनीय होता है, जो अन्य चिकित्सा पद्धतियों में प्रायः संभव नहीं होता।
7. हथेली और पगथली में दबाव देने पर जितने कम प्रतिवेदन बिन्दुओं पर और जितना कम दर्द आता है, उतना ही व्यक्ति स्वस्थ होता है। जितने ज्यादा दर्द वाले प्रतिवेदन बिन्दु होते हैं उतना ही पुराना रोग होता है अथवा स्वास्थ्य खराब होता है। इस प्रकार इस निदान पद्धति द्वारा जो रोग आधुनिक पेथलोजिकल टेस्टों अथवा यंत्रों की पकड़ में नहीं आते, उन रोग के कारणों का भी सरलता पूर्वक रोग प्रकट होने से पूर्व प्रारम्भिक अवस्था में निदान किया जा सकता है। उपर्युक्त निदान अधिक सही और विश्वसनीय होता है। अतः उस निदान पर आधारित उपचार-प्रभावशाली, दुष्प्रभावों से रहित और अल्पकालीन होता है, जिस पर किसी को भी आशंका नहीं होनी चाहिये।

निदान बिल्कुल सरल, सस्ता, सहज, पूर्ण अहिंसक, स्वावलम्बी, सर्वत्र अपने साथ उपलब्ध होता है। शरीर विज्ञान के विशेष ज्ञान की आवश्यकता नहीं होने से सभी व्यक्ति आत्मविश्वास के साथ उपचार कर सकते हैं। पूरे शरीर का निदान होने से शरीर के साथ-साथ, मन और वाणी के विकारों का भी निदान करने वाला एवं अन्तःस्रावी ग्रन्थियों का सरलतम निदान करने वाला होता है।

क्या एक्यूप्रेशर चिकित्सा में रोग के नाम से निदान उचित है?

आजकल हम आधुनिक चिकित्सा पद्धति के निदान से इतने अधिक प्रभावित

होते हैं कि जब तक वे प्रमाणित न कर दें, तब तक हम रोग को रोग ही नहीं मानते। दूसरी बात एक्यूप्रेशर चिकित्सक भी प्रायः उन्हीं रोगों से सम्बन्धित प्रमुख प्रतिवेदन बिन्दुओं पर उपचार कर रोगी को राहत पहुँचाने तक ही अपने आपको सीमित रखते हैं। तीसरी बात प्रमुख बिन्दुओं में दर्द की स्थिति देख अधिकांश एक्यूप्रेशर चिकित्सक रोग के नाम से निदान करते संकोच नहीं करते। जैसे किसी व्यक्ति के हृदय के प्रमुख प्रतिवदेन बिन्दु पर दबाव देने से दर्द आने की स्थिति में उसे हृदय का रोगी कह देते हैं। परन्तु ऐसा सदैव सही नहीं होता। हृदय में रोग होने पर निश्चित रूप से हृदय के प्रमुख प्रतिवेदन बिन्दु पर दबाने से दर्द आता है। परन्तु उसका विपरीत कथन कभी-कभी गलत भी हो सकता है, क्योंकि उस प्रतिवेदन बिन्दु का शरीर के अन्य भागों से भी कुछ संबंध अवश्य होता है। जैसे किसी व्यक्ति के पिता की मृत्यु होने पर पुत्र रोता है। इस कारण पुत्र को किसी अन्य कारण से रोते हुए देख यह कहना कि क्या आपके पिताजी की मृत्यु हो गयी है? कहाँ तक तर्क संगत है?अतः एक्यूप्रेशर पद्धति में आधुनिक चिकित्सा द्वारा कथित रोगों के नाम से निदान करना एक्यूप्रेशर पद्धति के मूल सिद्धान्तों के विपरीत होता है। चिकित्सक मात्र इतना कह सकता है कि दर्द वाले प्रतिवेदन बिन्दु शरीर में उपस्थित रोग का प्रतिनिधित्व करते हैं, भले ही वे किसी भी नाम से क्यों न पुकारे जाते हों?

परन्तु जब तक निदान करते समय कोई एक्यूप्रेशर चिकित्सक आधुनिक चिकित्सकों की नामावली के अनुसार रोग का कथन नहीं करता, तब तक रोगी अथवा उसके परिजन उस निदान को सही होते हुए भी प्रामाणिक नहीं मानते। हालांकि 60 से 70 प्रतिशत ऐसा कथन सही नहीं हो सकता है।

एक्यूप्रेशर द्वारा उपचार की विधि-

हथेली और पगथली पर दबाव देने पर जहाँ-जहाँ और जितने-जितने विजातीय तत्त्व होते हैं, उन्हीं के अनुपात में दर्द का अनुभव होता है। अतः हथेली और पगथली के सभी भागों में दर्द वाले प्रतिवेदन बिन्दुओं का पता लगाने के पश्चात् प्रत्येक दर्द वाले प्रतिवेदन बिन्दु पर बीस से तीस सैकिण्ड तक अंगूठे और अंगुलियों से उन प्रतिवेदन बिन्दुओं पर जमा हुए विजातीय पदार्थों को दूर करने हेतु सहनीय घुमावदार दबाव देने से धीरे-धीरे विजातीय तत्त्व वहाँ से दूर होने लगते हैं। परिणामस्वरूप शरीर के सम्बन्धित रोगग्रस्त भागों में प्राण ऊर्जा का प्रवाह नियमित और संतुलित होने लगता है तथा रोगी रोग मुक्त हो जाता है।

उपचार प्रारम्भ करने से पूर्व शरीर में दर्द वाले प्रतिवेदन बिन्दुओं की स्थिति

और संख्या का चार्ट बना लेना चाहिए। उपचार प्रारम्भ करने से पूर्व हथेली एवं पगथली को क्रियाशील करना चाहिए। जैसेः- हथेली एवं पगथली को रगड़ना, आगे पीछे मसाज करना, दाहिने-बायें, हलन-चलन करना, अंगुलियों एवं जोड़ों को उल्टा सीधा जितना सहजता से घुमाया जा सके, धीरे-धीरे घुमाना। 3-4 दिन का उपचार करने के पश्चात् हमें पुनः दर्द वाले प्रतिवेदन बिन्दुओं की स्थिति की समीक्षा करनी चाहिए। हमें अनुभव होगा कि जहाँ पहले मामूली सा दर्द होता था, अब कुछ केन्द्रों पर उतना ही दबाव देने के बावजूद दर्द नहीं होता। पहले जहाँ बहुत ज्यादा दर्द होता था, वहाँ पर भी चंद केन्द्रों पर दर्द में कुछ कमी होने लग गई है। इस प्रकार उपचार करने से दर्द वाले बिन्दुओं की संख्या कम होने लगती है, जो रोग मुक्ति का सूचक होता है। जितना-जितना दर्द कम होता है उतना-उतना उपचार होता है।

परन्तु आजकल हम रोग के नेता को सीधा नियन्त्रण में करने का प्रयास करते हैं, जो न्यायोचित नहीं होता। सहयोगियों को दूर किये बिना नेता पर नियन्त्रण करना कठिन होता है। हम प्रायः अखबारों में पढ़ते हैं और टी.वी. पर देखते हैं कि प्रदर्शनों के समय पुलिस प्रदर्शनकारियों के नेता को सीधा कैद नहीं करती। पहले प्रदर्शनकारियों को शान्त करने का प्रयास करती है, फिर लाठी चलाती है, अश्रु गैस छोड़ती है और जब सारी भीड़ चली जाती है तो नेता को आसानी से कैद किया जा सकता है। ठीक उसी प्रकार रोग के परिवार के सहायक रोगों से संबंधित सभी प्रतिवेदन बिन्दुओं का उपचार करने से मुख्य रोग की ताकत स्वतः समाप्त हो जाती है तथा वह शीघ्र नियन्त्रण में लाया जा सकता है। जिस प्रकार जनतंत्र में सहयोगियों का समर्थन न मिलने से नेता की ताकत समाप्त हो जाती है, नेता को पद त्याग करना पड़ता है। ठीक उसी प्रकार अप्रत्यक्ष सहयोगी रोगों के दूर हो जाने से मुख्य रोग से शीघ्र मुक्ति मिल जाती है। यही एक्यूप्रेशर चिकित्सा का मूल सिद्धान्त है।

एक्यूप्रेशर स्वयं द्वारा स्वयं के उपचार की प्रभावशाली पद्धति है-

जिस प्रकार ध्यान, योग, आसन, प्राणायाम आदि व्यक्ति को स्वयं ही करने पड़ते हैं, अनुभवी प्रशिक्षक आवश्यक मार्गदर्शन कर सकता है, ठीक उसी प्रकार वास्तव में एक्यूप्रेशर उपचार और निदान भी व्यक्ति को स्वयं करना चाहिये। दूसरे व्यक्ति से एक्यूप्रेशर करवाने से उपचार का शत-प्रतिशत लाभ नहीं मिलता। उपचार लम्बा, अस्थायी एवं कम प्रभावशाली होता है। अतः यथासंभव जितना उपचार रोगी स्वयं कर सके , उतना तो कम से कम उसको स्वयं ही करना चाहिए,

तथा चिकित्सक का सहयोग रोग सम्बन्धित प्रमुख प्रतिवेदन के दबाव हेतु शीघ्र राहत मिलने तक ही लेना चाहिए। किसी भी चिकित्सक के पास इतना समय नहीं होता कि रोगी के सभी प्रतिवेदन बिन्दुओं का ढंग से निदान कर सकें। वे तो मात्र मुख्य प्रतिवेदन बिन्दुओं तक ही अपना ध्यान केन्द्रित रखते हैं। अतः उपचार आंशिक ही कर सकते हैं। स्वयं द्वारा निदान और उपचार करने से व्यक्ति समान दबाव दे सकता है और रोग में जैसे-जैसे राहत मिलती जाती है, उसका आत्मविश्वास और सजगता बढ़ती जाती है। प्रारम्भ में जो प्रतिवेदन गहरे और मुख्य होते हैं, उनके उपचार हेतु किसी अच्छे थेरेपिस्ट से मार्गदर्शन एवं सहायता ली जा सकती है, परन्तु बाकी सभी पगथली का निदान और उपचार तो स्वयं ही करना चाहिये। प्रतिदिन निश्चित समय पर उपचार करने से उपचार अधिक प्रभावशाली हो जाता है। उपचार कम, कहाँ, कैसे, कितना करना चाहिए उसके संबंध में अधिक जानकारी हेतु जिज्ञासु स्वास्थ्य प्रेमियों को यहाँ चर्चित मूल सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए एक्यूप्रेशर से संबंधित अच्छा साहित्य पढ़ना चाहिए तथा अनुभवी प्रशिक्षकों से सम्यक् मार्ग दर्शन प्राप्त करना चाहिए।

-चोरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)
E-mail : cmchordia.jodhpur@gmail.com, swachikitsa@therapist.net

चिन्तन-कण

- सेवा तथा त्याग के लिए सभी अपने हैं, अपनी पूर्ति के लिए कोई अपना नहीं है।
- दूसरे ने अपने साथ कितना बुरा किया है, यह हम भूलते नहीं, और हमने उनके साथ कितना बुरा किया है, यह कभी याद करते नहीं।
- साधना आचार की वस्तु है, प्रचार की नहीं।
- साता कर्माधीन है, आनन्द आत्माधीन है।
- कार्य ऐसा करो जिसके करने से, करने का अन्त हो जाए।
- उदय के प्रवाह से प्रभावित नहीं होना निश्चय धर्म है।
- अपने दुःख का कारण स्वयं को मान लें, तो दुःख नहीं रहेगा।
- सदा दिवाली सन्तों के, आठों प्रहर बसन्त,
  जो चाहो आप भी, तो बन जाओ सन्त।

(तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के प्रवचनों से संकलित)

आओ स्वाध्याय करें - 22

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

द्वारा प्रायोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (22)

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के माध्यम से 'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता-परीक्षा (22) का आयोजन 'जिनवाणी' के अप्रेल-मई-जून-2009 के अंकों के आधार पर किया जा रहा है। इसमें कुल 50 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर **श्री गौतम जैन (पचाला वाले), उपाध्यक्ष-अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, 5, पंचवटी, कटर मशीन की गली में, न्यू मंडी रोड, आलनपुर-322021, सवाईमाधोपुर (राज.) फोनं. 9460441351** के पते पर **5 अगस्त, 2009** तक मिल जाने चाहिए। युवा श्रेणि एवं सामान्य श्रेणि में श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को अलग-अलग क्रमशः 1001 रुपये, 501 रुपये एवं 251 रुपये के पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाएगा। 100 रुपये के दस-दस प्रोत्साहन पुरस्कार भी दोनों श्रेणियों में दिए जायेंगे। युवा श्रेणि के पुरस्कार 15 से 45 वर्ष के उत्तरदाताओं को दिए जायेंगे। युवाश्रेणि हेतु प्रत्येक प्रतियोगी अपने नाम एवं पते के साथ उम्र का भी उल्लेख करे। जो प्रतियोगी अपने प्राप्तांक शीघ्र जानना चाहते हों, वे प्रविष्टि के साथ जवाबी पोस्टकार्ड भेजकर परिणाम जान सकते हैं। सभी उत्तरदाताओं से निवेदन है कि वे उत्तर भेजते समय केवल प्रश्न क्रमांक व उत्तर ही भेजें। प्रश्न/पृष्ठ संख्या लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है।-सम्पादक

(क) मुझे पहचानो-

01. संघ सेवा ही हमारा काम।
02. घट से घर निकल चुका, मुझे अब घर से क्या करना?
03. मैं एक नित्य द्रव्य हूँ, सदा से हूँ और सदा रहूँगा, न उत्पत्ति हुई है और न कभी मेरा विनाश।
04. वाणी मंगल कारणी, देती भव जल तार।
05. मैं अधर्म का मूल एवं महादोषों का पुँज हूँ।
06. मुझे देखकर कई श्रमण-श्रमणियों ने मेरे जैसा रूप पाने का निदान कर लिया।
07. मैं हूँ कालिका?
08. मात्र एक पुत्र को नहीं खिलाने के कारण आर्त्त कर रही हूँ।
09. संसार के दुःखों से मुक्त होने का एक मात्र उपाय मुझे धारण करना है।
10. मैं किसी भी प्रतिबिम्ब के प्रति आसक्त नहीं होता हूँ।

(ख)एक-दो शब्दों में उत्तर दीजिए-

11. वह मंजिल जिसके आगे कोई राह नहीं।
12. गीता में स्थितप्रज्ञता, और जैन दर्शन में?
13. सारे अनर्थ की जड़ किसे बताया गया?
14. रहस्यमय राक्षस किस बात का प्रतीक है?
15. जीना, प्रेम करना, हँसना और जीतना सरल है उतना ही कठिन क्या है?
16. संवर+निर्जरा=?
17. आत्मा का प्रकाश बड़ा है या बिजली का?
18. अपने दोष ढककर दूसरों के दोषों को देखना क्या है?
19. बुद्धिमान पुरुषों का समूह क्या कहलाता है?
20. कलियुग के जम्बूकुमार?

(ग) निम्नांकित कथन किसने कहे-

21. जिसका व्यवहार शुद्ध नहीं उसका परमार्थ शुद्ध नहीं हो सकता।
22. जिनके पुत्र नहीं होता, उनकी गति नहीं होती।
23. कार्य की अधिकता नहीं, कार्य की अनियमितता ही आदमी को मार डालती है।
24. कुछ चीजें है जो हमें स्वीकार नहीं है।
25. जो व्यवहार तुम अपने प्रति नहीं चाहते, वह किसी अन्य के प्रति मत करो।
26. निंदा वहीं कर सकता है जो कुछ नहीं करता।
27. मेरे देश में संस्कृति का निर्माण अंतरंग चरित्र से होता है।
28. बस करो, बस करो, मेरी प्यास बुझ गई है।
29. संसार तो सराय है।
30. देख पराई चूपड़ी मत ललचावे जीव। रूखी-सूखी खाय के ठण्डा पानी पीव।।

(घ) अंकों में उत्तर दीजिये।

31. समय प्रबंधन के अंतर्गत कितने बिंदुओं का समावेश किया जा सकता है?
32. बंशी ने कितने वर्षों से चाय नहीं पी थी?
33. इंसानियत के मूल गुण कितने हैं?
34. कितनों की परीक्षा आपत्तिकाल में होती है?
35. आगमों में ब्रह्मचर्य पालन के लिए कितनी मर्यादाएँ बांधी गई हैं?
36. कोबा से अन्यत्र देश में कितने हस्तलिखित ग्रन्थ हैं?

37. परिशिष्ट पर्व के कितने पर्वों में प्राचीन भारत के राजनैतिक इतिहास से संबंधित जानकारी है?
38. एक धनुष में कितने अंगुल होते हैं?
39. अनंत-अनंत गुणों की आध्यात्मिक हरियाली को नष्ट करने वाले कितने हैं?
40. एक जीव में एक समय में औदारिक काय योग के साथ कितने योग पाये जा सकते हैं

(ड) हाँ/ना में उत्तर दीजिए।

41. भारतीय संस्कृति में अर्थ को सर्वोच्च स्थान कभी नहीं दिया गया।
42. 'कर्मवाद' पुरुषार्थवाद और भाग्यवाद को पुष्ट करता है।
43. जाति-कुल का मद क्रमशः माता-पिता से संबंधित है।
44. धर्म का मार्ग बहुजनहिताय ही नहीं अपितु सर्वजीवहिताय होता है।
45. अपने आत्म-विकास के सामने व्यक्तित्व विकास का महत्त्व नगण्य है।
46. जमीकंद आदि अनंतकाय के त्यागी को नारियल पानी का त्याग नहीं होता है।
47. आठ साल में स्मरण शक्ति जितनी पवित्र होती है, साठ साल वाले की वैसी ताजगी नहीं होती।
48. पेड़ का एक पत्ता भी 'उसकी' इच्छा के बिना नहीं हिल सकता।
49. पहले से तेरहवें गुणस्थान तक वीर्यांतराय कर्म के क्षयोपशम से औदारिक शरीर की क्रियाएँ होती हैं।
50. अच्छे लोग आस-पास ही होते हैं, लेकिन वे प्रदर्शन करते हैं इसलिये मिलते नहीं।

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित

'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता (21) का परिणाम

जिनवाणी के जुलाई, 2009 अंक में आयोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (21) में 242 प्रतियोगियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता जिनवाणी के जनवरी से मार्च 2009 के अंकों पर आधारित थी। सामान्य श्रेणी एवं युवा श्रेणी के सभी पुरस्कार ड्रा द्वारा निकाले गये हैं। परिणाम इस प्रकार है-

सामान्य श्रेणी

प्रथम पुरस्कार– 1001/– रुपये	**स्नेहलता शाह-बेलगाम**	**(50)**
द्वितीय पुरस्कार– 501/– रुपये	**मोहनलाल जैन-अजमेर**	**(50)**

तृतीय पुरस्कार– 251/– रुपये इचरज देवी-जयपुर (50)

सान्त्वना पुरस्कार– 100/– रुपये प्रत्येक

कोमल जैन-धनारीकलां	(50)	किरण कुम्भट-जोधपुर	(50)
सुनीता नवलखा-कोटा	(50)	वीरेन्द्र कुमार-जोधपुर	(50)
नोरतमल चंगेरिया-अजमेर	(50)	बाबूलाल जैन-शिवनगर	(49)
कल्पना धाकड़-गुड़गाँव	(49)	पन्नालाल लोढ़ा-नाड़सर	(49)
सरोज नाहर-दिल्ली	(49)	सुबोध मोहनोत-नवसारी	(49)

युवा श्रेणी

प्रथम पुरस्कार– 1001/– रुपये प्रीति मोदी-नीमच (50)

द्वितीय पुरस्कार– 501/– रुपये शैली कुम्भट-जोधपुर (50)

तृतीय पुरस्कार– 251/– रुपये राकेश सुराणा-मेड़तासिटी (50)

सान्त्वना पुरस्कार– 100/– रुपये प्रत्येक

उषा जैन-कोटा	(50)	अरूणा जैन-होशियारपुर	(50)
सरोज जैन-धनारीकलां	(50)	राहुल कुम्भट-जोधपुर	(50)
संदीप जैन-रतकुड़िया	(49)	कविता जैन-मुम्बई	(49)
मंगला सिंघवी-पखाड़े	(49)	अभिषेक जैन-धनारीकलाँ	(49)
मनीषा सिंघवी-उधना	(49)	रश्मि झामड़-औरंगाबाद	(49)

49 अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी:– यू.पी. बरड़िया–धुले, कंवलराज मेहता–जोधपुर, कमला सेठिया–मसूदा, कुसुम जैन–महवा, मीना मेहता–पीपाड सिटी, विद्या संघवी–बदनावर, विमला बरड़िया–बोदवड़, विमला बाई खिंवसरा–धुलिया, निशा लुकंड़–कोटा, हीरा रमेशजी कर्नावट–अहमदनगर, पुष्पा मेहता–पीपाड़, पुष्पा जैन–पालीमारवाड़, पुष्पा गोलेछा–ब्यावर, पुखराज सेठिया–मसूदा, प्रमिला पोखरणा–धुले, प्रवीण बरड़िया–धुले, श्रीमती इंदिरा जैन–जयपुर, राजेन्द्र लुंकड–भोपालगढ़, रतन लाल रांका–अजमेर, संपतराज जैन–अरटियाखुर्द, सरला कांकरिया–जलगांव, सुरेन्द्र जैन–कोटा, सुशीला इ. रांका–जलगांव, सुनंदा सुभाष लोढ़ा–धुले, सुनीता मेहता–जोधपुर, जतन बरड़िया–जयपुर, नथमल कोठारी–बालोद, नेणचंद बाफना–जोधपुर, अनिता दुग्गड–धुलिया, अनिल कुमार जैन–कोटा, अजीतराज जैन–धनारीकलां, अलका जैन–उज्जैन, ललित जैन–अजमेर, गर्व लुंकड़–कोटा, दिनेश भंसाली–जोधपुर, श्वेता जैन–कोटा, ममता लुंकड़–भोपालगढ़, शीना जैन–ब्यावर, वर्षा जैन–जयपुर, ऋषभ जैन–इंद्रगढ़, अर्चना कोठारी–बालोद, दिलीप पारख–धनारीकलां, चंचल गोलेच्छा–जयपुर, प्रकाश पारख–धनारीकलां, अंतिमा डोसी–ब्यावर, नीलम जैन–अजमेर, दिनेश जैन–मेड़तासिटी, अनिल जैन–धनारीकलां, आशा जैन–धनारीकलां, अनुजा कांकरिया–जलगांव, मंजू जैन–धनारीकलां, वर्षा बाफणा–जोधपुर, विकास जैन–महवा, आरती कवाड–धुले, शिल्पा जैन–रतकुड़िया, मयूरी जैन–धुले, योगिता कर्नावट–अहमदनगर, दिव्या आंचलिया–धुले, लता आंचलिया–धुले, यश जैन–धुले, अश्विनी जैन–धुले।

48 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:– रुचिका लुणावत–जोधपुर, एस.आर. जैन–धुले, बाबूलाल जैन–भरतपुर, कंचन देवी–बालोद, मधुबाई डोसी–मसूदा, मंजुश्री सुराणा–जोधपुर, मोहिनी जैन–आचीणा, हेमलता जैन–ब्यावर, पारसमल रतनबोहरा–बालोद, पुष्पा गांधी–जोधपुर, रमणलाल छाजेड़–धुलिया, राज जैन–दिल्ली, राजुल कोठारी–धुले, शांतिलाल महात्मा–सेंती, शशिबाई रतन बोहरा–बालोद, शशिकला

कोठारी–जोधपुर, शशिकला लुणावत–नासिक, सरोज रूणवाल–धुले, साक्षी जैन–जयपुर, अशोक जैन–सूरत, गणपत सुराणा–जोधपुर, शशि जैन (गुगल्या)–लश्कर, गौरव जैन–कोटा, सुनिता बोर्दिया–उदयपुर, लोकेश जैन–जयपुर, नीलू जैन–लुधियाना, अभिषेक जैन–बालोद, रीना कोठारी–बालोद, सुमेर वैद–धनारीकलां, संजना दरड़ा–गोटन, पूर्णिमा गांधी–जोधपुर, शिल्पा गांधी–जोधपुर, गरिमा जैन–कोटा, रंजना जैन–कोटा, सुनील हीरावत–जयपुर, प्रदीप जैन–अरटियाखुर्द, आकाश वैद–जोधपुर, दीप्ति जैन–कोटा, माधुरी जैन–बूँदी, राकेश जैन–बूँदी, सुनीता जैन–आचीणा, मधुबाला जैन–आचीणा, मनीष जैन–बेराथलकला, पूर्णिमा जैन–बादु, भावना लोढ़ा–धुले।

47 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-कांता बैताल–जयपुर, कोमल पी. बरड़िया–धुले, मंजुला जैन–भायंदर, मगनचन्द जैन–फाजिलाबाद, विजय लक्ष्मी छाजेड़–धुले, तिलोक चंद जैन–आचीणा, निर्मला हीरावत–जयपुर, निर्मला सुराणा–बीकानेर, प्रेमलता चौधरी–भीलवाड़ा, राजुल जैन–गंगापुर, रेणु बोहरा–देहली, सुधा डागा–बीकानेर, सुचिता जैन–शिरपुर, उषा चोरडिया–दिल्ली, दर्शिका टाटिया–जलगांव, नलिनी कोठारी–जयपुर, सुमन जैन–बजरिया, रूपल गांग–जोधपुर, राजेश लुणावत–आचीणा, लीला जैन–इंद्रगढ़, दीक्षिता जैन–बुलड़ाणा, ममता राखेचा–बुलड़ाणा, शिल्पा कोठारी–धुले, नवरत्न ओस्तवाल–गोटन, श्रीमती अल्पना–भीलवाड़ा, अल्फा सुराणा–जोधपुर, प्रियल जैन–अहमदाबाद, पुष्पा चौधरी–जोधपुर, संजना लुणावत–इंदौर, आयुषी लूणावत–आचीणा, ड़ी. अनिल जैन–मैसूर, राजेश गांग–जोधपुर, योगिता गांग–जोधपुर।

46 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:-केसर गांग–जोधपुर, ममता जैन–गंगापुर, मोहन लाल जैन–मैसूर, मनीला पारख–जयपुर, मिथुन सेठिया–धनारीकलां, पिस्ता गोलेछा–जयपुर, दिलरूपचन्द भंड़ारी–जोधपुर, विमल कोचर–नासिक, विमला भंडारी–भंडारा, हस्तीमल मादरेचा–भीलवाड़ा, हेमराज सुराणा–जयपुर, पुखराज जैन–बालोद, श्रीमती उषा सुराणा–जयपुर, राशि रांका–भड़गांव, सुनिता दुस्साज–जयपुर, डॉ. नीतू ओस्तवाल–जोधपुर, चंचल भंडारी–जोधपुर, गजराज सेठिया–धनारीकलां, ललीता लुणावत–जोधपुर, राखी लोढ़ा–भायंदर, गौरव जैन–जयपुर, महेन्द्र लुणावत–इन्दौर, मधु कुम्भट–जोधपुर, शीलू हीरावत–जयपुर, अमित जैन–धुले, शोभा सागर कोठारी–धुले।

सही उत्तर

उपर्युक्त त्रैमासिक प्रतियोगिता (21) के प्रश्नों के सही उत्तर जिनवाणी अंक एवं उसके पृष्ठ के साथ यहाँ दिए जा रहे हैं -

उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या
1. निर्ग्रन्थ	जनवरी/9	2. जिनवाणी	जनवरी/41
3. स्याद्वाद	जुलाई/3	4. धर्म	फरवरी/68
5. कर्म	जनवरी/11	6. सम्यक्त्व	जुलाई/86
7. सिद्धान्त	जुलाई/57	8. आचार्य हस्ती	जनवरी/44
9. सत्य	जुलाई/11	10.काल सौकरिक	फरवरी/75
11.परिग्रह	जनवरी/65	12.सापेक्षता	फरवरी/31
13.परछाई	जुलाई/53	14.महाराज, साधु	जनवरी/12
15.परम्परा	जनवरी/43	16.अविचार	जुलाई/55
17. कामना	जुलाई/14	18. पुद्गल	जनवरी/27
19. जीवन	जुलाई/84	20. व्याकरण	फरवरी/67
21. ना	जनवरी/32	22. हाँ	फरवरी/12
23. हाँ	जुलाई/85	24. ना	जुलाई/10
25. ना	जुलाई/15	26. हाँ	जनवरी/80

27. ना	फरवरी/29	28. हाँ	फरवरी/93
29. हाँ	जनवरी/71	30. ना	जुलाई/31
31. अहंकृति	जनवरी/29	32. वैषम्य	फरवरी/19
33. अनुसरण	जुलाई/53	34. मिथ्या	फरवरी/60
35. क्रियान्विति	जनवरी/64	36. लोंकाशाह	जनवरी/43
37. आत्मानंद	जुलाई/54	38. गाँव	फरवरी/82
39. प्रवचन	जुलाई/20	40. उपाध्यायप्रवर	जनवरी/59
41. 9	फरवरी/28	42. 6	जुलाई/15
43. 9	जनवरी/66	44. 12	जनवरी/30
45. 2885	फरवरी/109	46. 66955	जनवरी/46
47. 3	जुलाई/40	48. 3	जनवरी/33
49. 120	जुलाई/59	50. 36000	जुलाई/40

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्षों का मनोनयन/चुनाव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा सोमवार, दिनांक 21 सितम्बर, 2009 को अहमदाबाद (गुजरात) में रखी गई है। वार्षिक साधारण सभा में आगामी तीन वर्ष के कार्यकाल के लिए संघाध्यक्ष/मण्डल अध्यक्ष/ युवक परिषद् अध्यक्ष एवं श्राविका मण्डल अध्यक्ष का मनोनयन/चुनाव किया जाना प्रस्तावित है। उपर्युक्त पदों के लिए नाम पर चिन्तन करने हेतु संघ संरक्षक मण्डल की बैठक दिनांक 19 सितम्बर, 2009 को अहमदाबाद (गुजरात) में होगी।

इस बारे में कोई भी नाम/सुझाव देना चाहें तो संघ-संरक्षक मण्डल की बैठक के पूर्व 31 अगस्त, 2009 तक माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत (संयोजक, संरक्षक मण्डल) को उनके निवास स्थान मुणोत विला, वेस्ट कम्पाउण्ड फील्ड लेन, 63-के, भूला भाई देसाई रोड़, मुम्बई-400026 (महा.) अथवा संघ के प्रधान कार्यालय अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.) के पते पर भिजवाने का कष्ट करावें।

-नवरतन डागा, महामंत्री

संवाद (25)

माह अप्रेल-2009 की जिनवाणी में पूछे गये निम्नांकित प्रश्न के कतिपय उत्तर मई एवं जून माह की जिनवाणी में प्रकाशित हुए हैं, उसी क्रम में आगे उत्तर यहाँ प्रकाशित हैं-

प्रश्न-मैं जिनवाणी में प्रकाशनार्थ रचना भेजती हूँ, किन्तु वह प्रकाशित नहीं हो पाती है। आप मुझे सुझाव दें कि मैं किस प्रकार अपनी रचना में सुधार करूँ, जिससे वह प्रकाशित हो सके।

- चेतना जैन (काल्पनिक नाम)

डॉ.दिलीप धींग, उदयपुर- जिनवाणी जैन समाज की प्रमुख हिन्दी मासिक पत्रिका है, जो पिछले 66 वर्षों से प्रकाशित हो रही है। धार्मिक पत्रकारिता के जिन श्रेष्ठतर व उच्चतर मापदण्डों को जिनवाणी ने अपनाया है, उन्हें बहुत ही कम पत्र-पत्रिकाएँ अपना रही हैं। जिनवाणी में सभी वर्ग और रुचि के पाठकों के लिए रचनाएँ समाविष्ट रहती हैं। बेशक, इन रचनाओं के लेखक भी सभी वर्ग, रुचि और विधाओं से जुड़े हैं। रचना की गुणवत्ता, मौलिकता और स्तरीयता के आधार पर बिना किसी भेदभाव के सबको जिनवाणी में स्थान मिलता है।

जिनवाणी का स्वरूप और इसमें प्रकाशित होने वाली सामग्री के आधार पर यह सहज सिद्ध होता है कि जिनवाणी परिवार (संरक्षक, संस्थापक, प्रकाशक, सम्पादक आदि) ने सदैव रचनात्मकता, सकारात्मकता और गुणग्राहकता को सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों ही दृष्टियों में अपनाया है। यही वजह है कि नवोदित और स्थापित सभी प्रकार के लेखकों के मन में यह सहज भावना रहती है कि उनकी रचना जिनवाणी में प्रकाशित हो। यह जिनवाणी की लोकप्रियता और श्रेष्ठता का प्रमाण है। यदि आप नियमित रूप से ध्यानपूर्वक जिनवाणी का स्वाध्याय करेंगी तो सहज रूप से स्वयं तथा स्वयं की रचना का मूल्याकंन कर लेंगी।

आप नियमित व मौलिक लिखें तथा जिसे बढ़िया रचना मानें उसे

जिनवाणी में प्रकाशनार्थ भेजें और भेजकर भूल जाएँ। सामान्य तौर पर इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का पत्राचार या पूछताछ ठीक नहीं है। सम्पादक के लिए इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देना प्रायः कठिन होता है। रचना के प्रकाशित होने पर प्रसन्न और अपने आपको प्रोत्साहित महसूस करें। प्रकाशित रचना में विद्वान् सम्पादक ने यदि रचना के शीर्षक अथवा किसी वाक्य या शब्द में कोई हेरफेर किया हो तो उसके तात्पर्य को समझने का विनम्र प्रयास करें। इससे आपकी रचनाशीलता में निखार आएगा।

किसी रचना का प्रकाशित होना या नहीं होना ही अन्तिम रूप से उसका या रचनाकार का मूल्यांकन नहीं है। सम्पादक के समक्ष किसी रचना को प्रकाशन के लिए चयन करने और नहीं करने के लिए अनेक कारण होते हैं। सम्पादकीय मर्यादाओं और दायित्वों को आपको समझना चाहिये। कभी कोई रचना समय, स्थान, सन्दर्भ या किसी अन्य कारण से बाद में भी प्रकाशित हो सकती है। यदि आपकी कोई रचना प्रकाशित नहीं होती है तो इसे आपको सकारात्मक रूप में लेना चाहिये और नई अच्छी एवं उद्देश्यपरक रचना लिखनी चाहिये। जो सम्पादक किसी कारण से स्तरहीन रचना को अपनी पत्रिका में स्थान देते हैं, वे रचनाकार, पाठक और स्वयं की पत्रिका तीनों के साथ न्याय नहीं करते हैं।

मेरी यह भावना रहती है कि नई पीढ़ी में मूल्यपरक और मौलिक लेखन करने वाले रचनाकार तैयार हों। आपके प्रश्न में आपके लेखक/लेखिका बनने की प्रशस्त और अनुमोदनीय भावना छिपी हुई है। आप लिखें, अच्छा से अच्छा लिखें, प्रकाशन की चिन्ता नहीं करें। विश्वास रखें कि आपकी रचनाएँ अवश्य प्रकाशित होंगी। स्मरण रखें कि लेखन एक कला है और कला साधना मांगती है। साधना से कला में निखार आता है। एक बढ़िया लेखक/लेखिका बनने के लिए निम्नाङ्कित बातों को आप जीवन से जोड़ें :-

1. अच्छे लेखकों/ कवियों को पढ़ना
2. जिस विषय पर लिखना हो उस विषय की समुचित जानकारी होना

3. अच्छा शब्द सामर्थ्य व भाषा पर अधिकार
4. अध्ययनशीलता (स्वाध्यायवृत्ति)
5. अनुभव तथा अनुप्रेक्षा (चिन्तन-मनन)
6. विनय, सदाचरण व सत्यनिष्ठा
7. लेखन में ईमानदारी और मौलिकता कायम रखना।
8. रचना लिखकर ध्यानपूर्वक पढ़ना और आवश्यक हो तो पुनर्लेखन करना।
9. सतत अभ्यास

लेखन कला विकसित करने का एक अनुभूत उपाय और बताता हूँ। आप दैनिक समाचार पत्र के सम्पादकों के नाम प्रासंगिक एवं रोजमर्रा के विषयों पर उद्देश्यपूर्ण पत्र लिखें। 'सम्पादक के नाम पत्र' कॉलम में पाठकों के विचार सप्ताह में छह दिन प्रकाशित होते हैं। उनमें शीघ्र स्थान मिल जाता है। लेकिन स्थान पाने के लिए अपने जीवन के आदर्शों के विपरीत कभी नहीं लिखें। अखबार में हिंसा के पक्ष में कोई बात छपी हो तो उसका विरोध करें और अहिंसा, संयम आदि के पक्ष में कोई बात हो तो उसके समर्थन में पत्र लिखें। इससे आपकी लेखन क्षमता, प्रतिकार क्षमता और विश्लेषण क्षमता का विकास होगा तथा जिनवाणी जैसी श्रेष्ठ पत्रिकाओं के लिए जो लेखन आप करेंगी, उसमें ताजा सन्दर्भों का समावेश होगा।

ये सूत्र सामान्य तौर पर श्रेष्ठ लेखन में सहायक बनते हैं। लेखन की अनेक विधाएँ होती हैं। मुख्य रूप से उन्हें गद्य और पद्य में विभाजित किया जाता है। अच्छे साहित्यकारों की कविता, कहानी, निबन्ध, संस्मरण, शोधालेख आदि को ध्यानपूर्वक पढ़कर उनके शिल्प, उनके पीछे लगे श्रम तथा उनके प्रभाव का आकलन आपको करना चाहिये। लेखक बनने पर कई प्रकार के दायित्वों का निर्वहन करना होता है। मेरे मत में यदि आप उपर्युक्त बातों का ध्यान रखेंगी तो आपकी रचनाएँ जिनवाणी में अवश्य प्रकाशित होंगी। अन्य पत्र-पत्रिकाओं में भी प्रकाशित होंगी।

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

पुराण साहित्य में जीवन मूल्य-डॉ. पी.सी जैन, ***प्रकाशक*** - जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर-322003, ***पृष्ठ***-496+12, ***मूल्य***-850 रुपये, ***संस्करण***-सन् 2008

पुराण साहित्य में जीवन मूल्यों का अद्भुत संकलन है, यह तथ्य इस पुस्तक से ज्ञात होता है। अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह आदि सार्वभौमिक मूल्यों के साथ पुराणों में अनाग्रह, वैचारिक उदारता, समता, विनय, स्वाध्याय, दान आदि मानवीय जीवन मूल्यों पर विस्तृत प्रकाश प्राप्त होता है। पुस्तक के सम्पादक डॉ. पी.सी. जैन ने अपने अथक प्रयास से तीन जैन पुराणों और 20 वैष्णव पुराणों से मूल्यपरक सूक्तियों का संकलन कर शोधार्थी एवं पाठकों के लिए इसे अधिक उपादेय बनाया है। इसके अतिरिक्त संगृहीत 46 लेखों में से दो लेख डॉ. पी.सी. जैन द्वारा लिखित एवं अन्य 44 लेख प्रबुद्ध लेखकों की रचनाएँ हैं। अधिकांश लेख जैन पुराणों में वनस्पतियों का वैज्ञानिक अध्ययन, जीवन मूल्य, संगीत, राजतंत्र और शासन व्यवस्था, नैतिक मूल्य, वस्त्राभूषण, आचार-व्यवहार, सामाजिक जीवन, श्रावकाचार आदि विषय पर लिखे गए हैं। कुछ लेख वैष्णव पुराणों पर आधृत हैं। जैन पुराण और वैष्णव पुराणों की सामग्री एक साथ उपलब्ध होने से तुलनात्मक अध्ययन में इस पुस्तक की उपयोगिता सिद्ध होती है।

नाड़ी तंत्र एवं मांसपेशियों का उपचार- डॉ. चंचलमल चोरडिया, ***प्रकाशक***-कल्याणमल चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट, चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003, ***पृष्ठ***-16, ***सहयोग राशि***-15/- रुपये, ***संस्करण***-सन् 2009

साइटिका, स्लिप डिस्क, घुटने का दर्द, स्पोन्डोलायटिस आदि रोगों के कारणों का विश्लेषण करते हुए लेखक ने पैरों को संतुलित करने की विधि, मेरुदण्ड की क्षमता के परीक्षण और संतुलित करने की विधि का उल्लेख सचित्र किया है। मेरुदण्ड के घुमावदार व्यायाम, व्यायाम करते समय ध्यान रखने योग्य सावधानियाँ, माँसपेशियों का प्रभावशाली उपचार, अंग व्यायाम, कपिंग

चिकित्सा, खिंचाव के अन्य उपकरण- इन शीर्षकों के अन्तर्गत प्रभावी उपचार का निर्देश किया गया है।

संघ द्वारा विभिन्न श्रेणियों में सम्मानार्थ प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान

जैन आगम, जैन दर्शन तथा जैन जीवन पद्धति के क्षेत्र में लेखन,शोध व जैन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान।

युवा प्रतिभा शोध सम्मान (उम्र 45 वर्ष अधिकतम)

प्रशासनिक चयन-राज्य स्तरीय एवं केन्द्रीय प्रशासनिक सेवा, न्यायाधिपति आदि विशिष्ट पदों पर चयन।

प्रोफेशनल विशिष्ट- डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउन्टेट, कम्पनी सचिव, एम.बी.ए. तथा अन्य प्रोफेशनल कोर्स में योग्यता सूची में स्थान पाने पर।

शोध- वैज्ञानिक खोज (अहिंसा व जैन सिद्धान्तों को पुष्ट करने वाली)।

संघ सेवा- चतुर्विध संघ सेवा, विशेष धार्मिक अध्ययन, धार्मिक लेखन आदि।

विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान (एक श्राविका,एक युवा,एक वरिष्ठ स्वाध्यायी)

कम से कम 10 वर्ष स्वाध्यायी (पर्युषण पर्वाराधना) के रूप में सक्रिय सेवा।

युवा स्वाध्यायी के लिए आवश्यक होने पर सेवा वर्ष में छूट दी जा सकती है।

गुणी अभिनन्दन

तपस्या- कम से कम पाँच वर्ष तक एकान्तर, दीर्घ तपस्या, दीर्घ संवर-साधना या अन्य विशिष्ट तप।

अन्य- सेवा, साधना, संघ उन्नयन में योगदान, चतुर्विध संघ-सेवा, विद्वान्।

नोट- कृपया अपनी प्रविष्टियाँ 31 जुलाई,2009 तक भिजवावें।

-नवरतन डागा, महामंत्री

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर

रत्नसंघ के सन्त-सतियों के चातुर्मास

(विक्रम संवत् 2066, ईस्वी सन् 2009)

(1) पालड़ी–अहमदाबाद(गुजरात)

- **परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.**
- महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.
- सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनि जी म.सा.
- तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.
- श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.
- श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा.
- श्रद्धेय श्री बलभद्रमुनि जी म.सा.
- श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा.
- श्रद्धेय श्री मोहन मुनिजी म.सा ठाणा 9

चातुर्मास स्थल- श्री एलिसब्रिज स्थानकवासी जैन संघ, जेठा भाई पार्क, बस स्टेण्ड के पास, नूतन नागरिक बैंक के सामने,हनुमान जी के मंदिर के पास, नारायणनगर रोड़, पालड़ी-अहमदाबाद-380007 (गुजरात)

फोन : 079-26611448

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री पदमचन्द जी कोठारी, 37-न्यू क्लॉथ मार्केट, अहमदाबाद-380002 (गुजरात) फोन : 079-22160675/ 094293-03088
2. श्री चेनराज जी कोठारी - 094270-11111
3. श्री मृगेश जी कोठारी - 094280-55555
4. श्री कन्हैयालाल जी हिरण - 099043-74734
5. श्री ललित जी गोलेच्छा - 093281-50900, 097266-22333
6. श्री संजय जी कोठारी - 094277-11111
7. श्री शीतल जी कोठारी - 094270-70707

आवागमन के साधन-अहमदाबाद देश का विकसित एवं औद्योगिक क्षेत्र है। रेलवे स्टेशन से एस.टी. बस स्टेण्ड जमालपुर चार रास्ता, सरदार पटेल ब्रिज, एन.आई.डी सर्कल होते हुए नारायणनगर रोड़ पर उपाश्रय है। स्टेशन से दूरी लगभग 6 कि.मी. है। एस.टी. बस स्टेण्ड से लगभग 4 कि.मी है। एयरपोर्ट से शाही बाग, गिरधर नगर, ईदगाह ब्रिज

रेलवे स्टेशन होते हुए दूरी लगभग 15 कि.मी. है। राजस्थान से सड़क मार्ग द्वारा साबरमती आश्रम रोड़ होते हुए पालड़ी, मुम्बई से नारोल सर्किल, विशाला होटल होते हुए पालड़ी पहुँच सकते हैं।

(2) ब्यावर (जिला-अजमेर) राज.

- 卐 **परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.**
- 卐 मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रमुनि जी म.सा.
- 卐 नवदीक्षित श्रद्धेय श्री दर्शनमुनि जी म.सा.
- 卐 नवदीक्षित श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनि जी म.सा. ठाणा 6

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, पिपलिया बाजार, ब्यावर-305901,जिला-अजमेर (राज.) फोन : 01462-255899

आवास-निवास स्थल- सूरज भवन, मेवाड़ी गेट के बाहर, सब्जी मण्डी के पास, ब्यावर-305901,जिला-अजमेर(राज.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री महेन्द्र जी गोलेच्छा-मंत्री, श्री स्थानकवासी जैन वीर संघ, म.नं.-10,मालियान हथाई गली, ब्यावर-305901, जिला-अजमेर(राज.) फोन : 01462-258052, 94136-95252, 92522-72867
2. श्री शांतिलाल जी सुराना, खजांची गली, ब्यावर-305901, जिला-अजमेर (राज.) फोन : 01462-255890, 94140-03494, 94145-55420
3. श्री मिलापचन्द जी बुरड़, बुरड़ निवास, लालन गली, ब्यावर-305901, जिला-अजमेर (राज.) फोन : 01462-258481, 93515-42233
4. श्री लक्ष्मीचन्द जी भड़ारी, नया बास, ब्यावर-305901, जिला-अजमेर (राज.), फोन : 94142-89111

आवागमन के साधन- राजस्थान के सभी प्रमुख शहरों से बस अथवा रेल सेवा उपलब्ध है। जयपुर, जोधपुर, अजमेर, पाली, नागौर, चित्तौड़, भीलवाड़ा, इन्दौर आदि स्थानों से सीधी बस सेवा उपलब्ध है। रोडवेज बस स्टेण्ड एवं रेलवे स्टेशन से स्थानक की दूरी लगभग 2 कि.मी है।

(3) घोड़ों का चौक-जोधपुर (राज.)

- 卐 **साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.**

- **महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा.**
- **महासती श्री शशिकला जी म.सा.**
- **महासती श्री उषा जी म.सा.**
- **महासती श्री निरंजना जी म.सा.**
- **महासती श्री सुव्रतप्रभा जी म.सा. ठाणा 6**

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.) फोन : 0291-2636763, 2633613

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री कनकराज जी कुम्भट, कुम्भटों का बास, महामन्दिर, जोधपुर-342010 (राज.) फोन : 0291-2546226 (निवास), 97848-03000 (मोबाइल)
2. श्री नरपतराज जी चौपड़ा, सी-82, धर्मनारायण जी का हत्था, पावटा, जोधपुर-342001, (राज.) फोन : 0291-2545265/2547462, 94604-22134

आवागमन के साधन- जोधपुर राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा शहर है, जो रेल, सड़क एवं हवाई मार्ग से देशभर से जुड़ा हुआ है। घोड़ों का चौक स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन मुख्य रेलवे स्टेशन से 1 कि.मी. एवं पावटा स्थित राइकाबाग रेलवे स्टेशन एवं बस स्टेण्ड से 3 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

(4) भकरी-नागौर (राज.)

- **सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा.**
- **व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा.**
- **महासती श्री कौशल्या जी म.सा.**
- **महासती श्री पुनीतप्रभा जी म.सा ठाणा 4**

चातुर्मास स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, पोस्ट-भकरी-341522, तहसील-परबतसर, जिला-नागौर (राज.)

सम्पर्क सूत्र-

1.श्री रतनलाल जी सुराना-अध्यक्ष, पोस्ट-भकरी-341522, तहसील-परबतसर, जिला-नागौर (राज.) फोन : 01589-274013, 99832-55315

2. श्री गणपतराज जी सुराना-मंत्री, पोस्ट-भकरी-341522, तहसील-परबतसर, जिला-नागौर (राज.) फोन : 01589-274019, 93090-38162

आवागमन के साधन- जयपुर-जोधपुर से सीकर व परबतसर जाने वाली बस में बीच में भकरी ग्राम आता है। डेगाना रेलवे स्टेशन से भकरी हेतु नियमित बस सेवाएँ उपलब्ध हैं। अजमेर से भकरी 60 कि.मी. एवं डेगाना से 25 कि.मी. की दूरी पर है।

(5) वर्द्धमान नगर–नागपुर (महाराष्ट्र)

- **व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा.**
- व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलता जी म.सा.
- महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री पुष्पलता जी म.सा.
- महासती श्री स्नेहलता जी म.सा.
- महासती श्री मंजूलता जी म.सा.
- महासती श्री चैतन्यप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री यशप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री पद्मप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री भक्तिप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री ज्योतिप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री दिव्यप्रभा जी म.सा. ठाणा 12

चातुर्मास स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, वर्द्धमान कॉलोनी, वर्द्धमान नगर, नागपुर-440008(महाराष्ट्र)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, महावीर भवन, इतवारी, नागपुर(महा.) फोन : 0712-2767283
2. श्री राजेन्द्र प्रसाद जी वैद-अध्यक्ष, फोन : 099606-95111(मोबाइल)
3. श्री दिलीप भाई शाह-महामंत्री, फोन : 094221-05432 (मोबाइल)
4. श्री महेन्द्रकुमार जी कटारिया, 107 'ए' कल्पवृक्ष, वर्द्धमान नगर कॉलोनी, नागपुर-440008(महा.) फोन : 2764715(कार्यालय), 2680176(निवास), 094224-59676, 098503-45615 (मोबाइल)
5. श्री नरेन्द्रकुमार जी कटारिया, संयोजक- चातुर्मास व्यवस्था समिति फोन : 094218-03875 (मोबाइल)

आवागमन के साधन- देश के प्रमुख शहरों से सीधी रेल सेवा उपलब्ध है। पुना, जलगाँव, इन्दौर आदि विभिन्न स्थानों से बस सेवा भी उपलब्ध है। मुख्य रेलवे स्टेशन से स्थानक की दूरी लगभग 6 कि.मी. है।

(6) लक्ष्मीनगर–जोधपुर

- तत्त्वचिंतिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा.

卐 महासती श्री दर्शनलता जी म.सा.

卐 महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा.

卐 महासती श्री समता जी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास स्थल- कांकरिया पौषधशाला, पावटा 'बी' रोड़, लक्ष्मीनगर, जोधपुर (राज.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री कुशलचन्द जी बाफना- फोन : 0291-2544718, 93147-13918
2. श्री मोहनलाल जी जीरावला- फोन : 0291-3203654, 93147-14045

आवागमन के साधन- लक्ष्मीनगर स्थित कांकरिया पौषधशाला जोधपुर रेलवे स्टेशन से लगभग 5 कि.मी. एवं राइकाबाग रेलवे स्टेशन एव बस स्टेण्ड से लगभग 3 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(7) एवर साईन नगर, मलाड(पश्चिम)-मुम्बई

卐 **विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा.**

卐 व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा.

卐 महासती श्री विनयप्रभा जी म.सा.

卐 महासती श्री सुयशप्रभा जी म.सा.

卐 महासती श्री प्रभावती जी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास स्थल- श्री एवरसाईन नगर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, 1/2, नीरज बिल्डिंग ग्राऊण्ड फ्लोर, उष्मानगर, एवरसाईन नगर, मलाड (पश्चिम) मुम्बई-400064 (महा.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री बसन्त के. जैन, ई-301, प्लेजेन्ट पार्क, मुवी टाईम सिनेमा के सामने, कंचापाड़ा, लिंक रोड़, एवरसाईन नगर, मलाड़ (पश्चिम) मुम्बई-400064 (महा.) फोन : 022-28810702 (निवास) 22018793 (ऑफिस) 98203-50814 (मो.)
2. श्री दलपत के. जैन, फोन : 022-28825513, 98209-58928
3. श्री दुलीचन्द जी भण्डारी, फोन : 022-28885499 (निवास), 98208-77554

आवागमन के साधन- मुम्बई सेण्ट्रल लोकल ट्रेन से मलाड़ स्टेशन तक (पश्चिम) 35 कि.मी., दादर लोकल ट्रेन से मलाड़ स्टेशन तक (पश्चिम) 25 कि.मी., बान्द्रा लोकल ट्रेन से मलाड़ स्टेशन तक (पश्चिम) 20 कि.मी., बोरीवली स्टेशन से मलाड़ चातुर्मास स्थल लगभग 7 कि.मी. है।

(8) कोटा (राज.)

- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा.
- महासती श्री सुश्रीप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री शारदा जी म.सा.
- महासती श्री लीलाकंवर जी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्री संघ, कोतवाली के सामने की गली, रामपुरा बाजार, कोटा (राज.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री राजेन्द्रसिंह जी मेहता-अध्यक्ष, फोन : 0744-2380271
2. श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन-मंत्री,वर्द्धमान नमकीन, गुमानपुरा, मेन रोड़, कोटा-324001 (राज.) फोन : 0744-2391759, 2382832(निवास), 94141-77139
3. श्री उत्तमचन्द जी जैन-संयोजक, चातुर्मास व्यवस्था समिति । फोन : 0744-2383897, 9414938875 (मोबाइल)

आवागमन के साधन- नई दिल्ली-मुम्बई रेलवे मार्ग पर स्थित बड़ा स्टेशन है जहाँ पर सभी गाड़ियों का ठहराव है। राजस्थान के सभी प्रमुख शहरों से रेल अथवा बस सेवा उपलब्ध है। स्थानक मुख्य रेलवे स्टेशन से लगभग 7 कि.मी. एवं नयापुरा बस स्टेण्ड से 2 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(9) पालड़ी-अहमदाबाद (गुजरात)

- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा.
- सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा.
- महासती श्री इन्दिराप्रभा जी म.सा.
- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री रक्षिता जी म.सा.
- महासती श्री रुचिता जी म.सा.
- महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री उदितप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री परागप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री संयमप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री वृद्धिप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री ऋद्धिप्रभा जी म.सा. ठाणा 12

चातुर्मास स्थल- श्री एलिसब्रिज स्थानकवासी जैन संघ, कामधेनु सोसायटी, ऋतुराज फ्लेट के सामने, प्रभुदास ठक्कर कॉलेज रोड़, पालड़ी अहमदाबाद-380007 (गुजरात)

सम्पर्क सूत्र एवं आवागमन के साधन- क्रम संख्या 1 के अनुसार।

(10) जयपुर (राज.)

- **व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा.**
- व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री देवांगना जी म.सा.
- महासती श्री अंजना जी म.सा.
- नवदीक्षिता महासती श्री सुभद्रा जी म.सा.
- नवदीक्षिता महासती श्री सिन्धुप्रभा जी म.सा. ठाणा 7

चातुर्मास स्थल- महावीर भवन,बारह गणगौर का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, लाल भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर(राज.) फोन : 0141-2312414, 93140-12414
2. श्री विमलचंद जी डागा-मंत्री, फोन : 0141-2576152, 98290-11588
3. श्री सुरेश जी कोठारी-सहमंत्री, फोन : 0141-2222810, 93145-01627

आवागमन के साधन- मुख्य रेलवे स्टेशन से 4 कि.मी. एवं रोड़वेज बस स्टेण्ड से स्थानक लगभग 3 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(11) मणिनगर-अहमदाबाद (गुजरात)

- **व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा.**
- महासती श्री समर्पिता जी म.सा.
- महासती श्री जागृतिप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री सिद्धिप्रभा जी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास स्थल- श्री राजस्थान एस.एस. जैन संघ, 9, हरिनगर सोसायटी, जूना ढ़ोर बाजार, मनन ओटो मोबाइल के पास, कांकरिया,मणिनगर, अहमदाबाद-380028 (गुजरात) फोन : 079-25390530

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री पुखराज जी बोथरा-अध्यक्ष, फोन : 079-25430939(नि.) 093270-00858
2. श्री विनोद जी मुणोत-मंत्री, फोन : 079-25469289 (नि.), 093270-50135

आवागमन के साधन- अहमदाबाद देश का विकसित एवं औद्योगिक क्षेत्र है। सभी क्षेत्रों से रेल, बस तथा हवाई सम्पर्क है। चातुर्मास स्थल अहमदाबाद रेलवे स्टेशन से 5 कि.मी. एवं मणिनगर रेल्वे स्टेशन से लगभग 3 कि.मी. है।

(12) शांतिनगर-बैंगलोर (कर्नाटक)

- **卐 व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.**
- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा.
- 卐 महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा.
- 卐 महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभा जी म.सा.
- 卐 महासती श्री निष्ठाप्रभा जी म.सा.
- 卐 महासती श्री संगीता जी म.सा.
- 卐 महासती श्री भावना जी म.सा. ठाणा 7

चातुर्मास स्थल- श्री वर्द्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ (शान्तिनगर) बैंगलोर, श्रीमती भीखी बाई पूनमचन्द जी लुणावत जैन स्थानक, 146/153, 8th, क्रोस, लुणावत भवन, लक्ष्मी रोड़, शान्तिनगर, बैंगलोर-560027 (कर्नाटका)
फोन : 080-42114031

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री मोहनलाल जी मूथा-अध्यक्ष, फोन : 093428-63447
2. श्री छगनमल जी लुणावत-मंत्री, फोन : 098450-05130

आवागमन के साधन- सिटी रेलवे स्टेशन से शान्ति नगर स्थानक लगभग 5 किलोमीटर है।

(13) पीपाड़शहर, जिला-जोधपुर (राज.)

- **卐 व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा.**
- 卐 महासती श्री श्रुतिप्रभा जी म.सा.
- 卐 महासती श्री मतिप्रभा जी म.सा.
- 卐 महासती श्री भव्यप्रभा जी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास स्थल- श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत स्वाध्याय भवन,कालाभाटा,पीपाड़ शहर-342601, जिला-जोधपुर (राज.)

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री हस्तीमल जी बोहरा-अध्यक्ष, फोन : 02930-233661, 94606-83334
2. श्री सुमतिचन्द जी मेहता, सदर बाजार, पीपाड़ शहर-342601, जिला-जोधपुर (राज.) फोन : 02930-233069(का.), 233842 (निवास) 94144-62729

आवागमन के साधन- जोधपुर जिलान्तर्गत पीपाड़शहर जोधपुर, मेड़ता सिटी, अजमेर, जयपुर, बिलाड़ा, पाली,ब्यावर जैसे समीपवर्ती शहरों से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। जोधपुर से पीपाड़ हर आधे घण्टे के अन्तराल पर रोड़वेज एवं प्राइवेट बसे उपलब्ध रहती हैं।

समाचार-विविधा

पालड़ी, अहमदाबाद में आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का मंगल-प्रवेश

आचार्यप्रवर एवं वरिष्ठ प्रवर्तक श्री रूपचन्द जी म.सा. आदि संत मुनिराजों का आत्मीयता पूर्वक मिलन

परमाराध्य परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 9 अहमदाबाद के प्रवेश द्वार मणिनगर से पावन मंगल विहार कर सारंगपुर होते हुए 23 मई को अहमदाबाद के हृदय स्थल शाही बाग के ओसवाल भवन में पधारे। शाहीबाग वासियों की अपूर्व भक्ति से आचार्यप्रवर ने 29 मई तक विराज कर उन्हें प्रमुदित किया। व्रत-नियम, त्याग-प्रत्याख्यान आदि में शाहीबागवासियों ने बढ़कर भाग लिया। यहाँ पर श्री चंदनमल जी विनायकिया-शाहीबाग, श्री गौतमचन्द जी मुणोत-चेन्नई तथा श्री उत्तमचन्द जी मेहता-आंबावाड़ी ने सदार आजीवन शीलव्रत ग्रहण किये। 30 मई को आचार्यप्रवर यहाँ से विहार कर तेरापंथ भवन विराजे तथा 31 मई को राजस्थानी उपाश्रय में पधारे। यहाँ सामूहिक दयाव्रत की साधना का आयोजन हुआ। 1 जून को सांचोरी स्थानक विराजकर 2 जून को आचार्यप्रवर का नारंगपुरा में पदार्पण हुआ। यहाँ पर साधुमार्गी सम्प्रदाय के आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री पुनीता श्री जी म.सा. आदि ठाणा 4 ने प्रवचन, शास्त्रवाचनी, दर्शन-वन्दन तथा तत्त्व चर्चा का लाभ लिया तथा श्री धनपतराज जी चौरडिया-चेन्नई ने आजीवन शीलव्रत ग्रहण किया। 7 जून तक आचार्यप्रवर यहाँ विराजे। 8 जून को विहार कर नवरंगपुरा में विराजे, जहाँ श्री प्रवीण जी बोरदिया-वस्यापुर (अहमदाबाद) वालों ने आजीवन शीलव्रत ग्रहण किया। यहाँ दरियापुरी परम्परा की महासती श्री मधु जी, श्री प्रवीणा जी आदि ठाणा आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ पधारीं। 10 जून को आम्बावाड़ी पधारने पर श्री धीरजभाई मारु ने आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से शीलव्रत ग्रहण किया। 11 जून को बिहार कर आचार्यप्रवर सेटेलाइट पधारे, यहाँ पर बरवाला सम्प्रदाय की महासती श्री गीता जी म.सा. आदि ठाणा दर्शन-वन्दन एवं तत्त्व-चर्चा हेतु पधारे। यहाँ से विहार कर

आचार्यप्रवर 12 जून को वस्त्रापुर पधारे, यहाँ श्री सुरेश जी बोरदिया ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। 14 जून को आचार्यप्रवर के शायोना सिटी (घाटलोडिया) पधारने पर श्री प्रवीण भाई शाह ने आजीवन शीलव्रत ग्रहण कर अपनी श्रद्धा-भक्ति की अनुपम भेंट अर्पित की। 15 जून को नयावाड़ज होते हुए आचार्यप्रवर का 16 जून को साबरमती पदार्पण हुआ।

यहाँ राजस्थान से चातुर्मासार्थ अहमदाबांद पधारे श्रमण संघ के वरिष्ठ **प्रवर्तक श्री रूपमुनि जी म.सा.'रजत', उपप्रवर्तक श्री सुकनमुनि जी म.सा.** ने आचार्यप्रवर की सेवा में समाचार कहलवाये कि हम साबरमती में आपश्री से मिलना चाहते हैं। वरिष्ठ प्रवर्तक का आचार्यप्रवर के प्रति आत्मीयता-अपनत्व का भाव है, इसलिए मिलन की भावना को साकार करने के लक्ष्य से पूज्य आचार्यप्रवर साबरमती विराजमान रहे।

आषाढ़ शुक्ला द्वितीया, बुधवार, 24 जून को प्रवर्तक श्री, उपप्रवर्तक श्री आदि संत मुनिराज प्रातः लगभग 7.30 बजे हिराणी नगर सोसायटी (साबरमती स्थानक) पधारे। प्रवर्तक श्री ऊपर चढ़ने में अशक्त हैं, यह ज्ञात होने से आचार्यप्रवर नीचे पधारे। सामान्य सुख-शान्ति पृच्छा कर आचार्यप्रवर अपने स्थान पर लौट गए तथा प्रवर्तक श्री आदि संत निर्धारित बंगले में पधारे। संघ का अत्याग्रह होने पर भी आचार्यप्रवर ने विगत दिवस ही स्पष्ट कर दिया था कि कल हमारा प्रवचन नहीं होगा, मारवाड़ की परम्परा बाद में आने वाले संतों के द्वारा प्रवचन देने की है। प्रवर्तक श्री, उपप्रवर्तक श्री के प्रवचन के पश्चात् उपप्रवर्तक श्री सुकन मुनि जी म.सा. ऊपर पधारे और प्रवर्तक श्री की भावना का आचार्य श्री को निवेदन किया। उनकी भावना के अनुरूप आचार्य श्री नीचे पधारे एवं उपप्रवर्तक श्री के अनुरोध से पाट पर बिराजे। प्रवर्तक श्री स्वास्थ्य की विवशता से कुर्सी पर विराजमान थे। दोनों संतों का 14 वर्ष पूर्व पीपाड़ में मिलन हुआ था उसके पश्चात् अत्यन्त आत्मीयता एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में मिलन हुआ, जो राजस्थान के बाहर प्रथम ही था। 83 वर्ष की आयु में भी तीव्र मेधा शक्ति से प्रवर्तक श्री ने 14 वर्षों के अपने स्वास्थ्य सम्बन्धी घटना क्रम में अनेक गणमान्य व्यक्तियों, स्थलों आदि का जिक्र करते हुए आचार्यप्रवर के भी स्वास्थ्य की जानकारी ली।

पूज्य आचार्यप्रवर 29 जून तक यहाँ विराजे। पूज्य भगवन्त ने 30 जून को प्रातः विहार किया, लेकिन भक्तों की भावना से प्रवचन का लाभ प्रदान करने के

लिए तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. को वहाँ प्रवचन फरमाने का संकेत किया। व्याख्यात्री महासती मण्डल का विचरण भी पूज्य आचार्य भगवन्त श्री के आगे-पीछे चल रहा था। विहार कर आचार्यप्रवर आरचिड ग्रीन, गिरधर नगर विराजे तथा 1 जुलाई को मणिनगर पधारे। यहाँ प्रवचन के समय आचार्यप्रवर ने फरमाया कि कल का प्रवचन पालड़ी में फरमाने की भावना है तब कहीं जाकर ज्ञात हुआ कि पूज्य आचार्यप्रवर का प्रवेश 2 जुलाई को होने की संभावना है।

2 जुलाई को प्रातः लगभग 6 बजकर 25 मिनट पर पूज्य **आचार्य भगवन्त आदि संतवृन्द** मणिनगर से पालड़ी के लिये ज्योंहि आगे बढ़े, जयनिनाद का उद्घोष प्रारम्भ हो गया। ज्यों-ज्यों पूज्यश्री के श्रीचरण आगे बढ़ते गए त्यों-त्यों संख्या बढ़ती गई। 7 बजकर 20 मिनट पर पालड़ी के स्थानक भवन में आचार्यप्रवर का मंगलमय कल्याणकारी प्रवेश हो गया।

गुरु भगवन्त द्वारा शांति प्रभु का भजन फरमाया गया। शांति पाठ के पश्चात् मांगलिक प्रदान की गई। कुछ समय पश्चात् **व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा 12 का भी पदार्पण हुआ। 9.15 बजे प्रवचन प्रारम्भ हुआ। पूज्य आचार्य भगवन्त सहित सभी संतमुनिराज एवं महासतीवृन्द विराजमान थे। बहिन चन्द्रिका बेन मेहता ने पूज्य गुरु भगवन्त के पदार्पण पर श्रद्धाभक्ति के साथ भजन व स्वागत गीत के माध्यम से गुणगान किया। सभा का संचालन श्री रमणिककान्त भाई ने करते हुए स्थानकवासी संघाध्यक्ष **श्री धनकुमार जी पारिख** को आमंत्रित किया। संघाध्यक्ष जी ने कहा कि भाई श्री पदमचन्द जी कोठारी के सद्प्रयासों से यह चातुर्मास हमें मिला है। पूज्य आचार्य भगवन्त ज्ञानी, ध्यानी संत हैं, आपकी पावन सन्निधि में तप-त्याग की झड़ी लगेगी। संचालन करते हुए **रमणिककान्त भाई** ने उपस्थित श्रद्धालुओं से जिनवाणी का पूरा-पूरा लाभ लेने की प्रेरणा की।

रत्नसंघ के **राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा** ने वन्दन-नमन कर कहा कि अहमदाबाद संघ वर्षों से चातुर्मास की विनति कर रहा है, विगत वर्ष भी लाभ नहीं मिल पाया। इस साल आपकी पुण्यवानी प्रबल थी, लाभ मिल गया, यों कह दूँ कि घर बैठे गंगा आ गई है। आप सभी सामायिक-स्वाध्याय के साथ बोर्ड

की परीक्षाओं में भाग लेते हुए शंकाओं का समाधान प्राप्त करें।

श्री हँसमुख भाई ने गुरु भक्ति के दोहों की प्रस्तुति के साथ 'वन्दे साहूणं' भावविभोर होकर सुनाया। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के **कार्याध्यक्ष श्री आनन्द जी चौपड़ा**-जयपुर ने कहा कि पालड़ी संघ का सौभाग्य है कि सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र के प्रतिपालक यहाँ पधारे हैं। धर्म-क्रिया का सामान्य ज्ञान हम सबको है, पर गुरु भगवन्त के मार्गदर्शन में ज्ञानवृद्धि कर, शंकाओं का निवारण कर हम जीवन उज्ज्वल बनायें, हम सभी अच्छे श्रावक/श्राविका बनें। **बहिन नेहाजी एवं रवि जी गांधी** ने कहा कि गुरु ज्ञान का प्रकाश प्रदीप्त कर अंधकार का विनाश करने आये हैं। माता-पिता के रूठने पर भगवान् की शरण मिल जाती है लेकिन गुरु के रूठने पर कहीं जगह नहीं मिलती है। सच्चे गुरुओं की हमें शरण मिली है, गुरु हस्ती के रत्नों को वंदन है अभिनन्दन है।

श्रावक/श्राविकाओं की भावाभिव्यक्ति के पश्चात् महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. ने गुरुदेव के पावन चरणों में वंदन कर फरमाया कि गुरु का आगमन संसार का अनागमन है। आज का दिन पालड़ी संघ के लिए हर्ष का दिन है। मन में बहुत वर्षों से जो इनके अरमान थे, आज सफलीभूत हो गये हैं। आचार्य भगवन्त अंतःकरण जगाने, वासना को विराम देने, सोयों को जगाने, मोह की निद्रा को हटाने आये हैं। गुरु का पदार्पण जीवन को उन्नत बनाने के लिये होता है। हम सब तत्त्व की जानकारी करें। 12 सतियों का पदार्पण आप सभी श्रावकों को बारहव्रतों के पालन का संकेत कर रहा है।

परमश्रद्धेय पूज्य आचार्यप्रवर ने पावन वाणी फरमाते हुए कहा कि तीर्थंकर भगवान् ने जीवन चलाने एवं जीवन बनाने के लिये दो वस्तुओं की उपयोगिता बतलाई- जीवन चलाने के लिए पानी की और जीवन बनाने के लिए वीतराग वाणी की। इन दो से जीवन चलता भी है और बनता भी है। अहमदाबाद वालों को मालूम है, कुछ दिन वर्षा में देरी होने पर तपन का अहसास, प्यास एवं पसीने वाली स्थिति महसूस हो रही है। नगरी की शोभा जल, वन, वनस्पति से है तो जीवन की शोभा उच्च आचार व सम्यक् विचार से है। जीवन निर्माण के लिए वीतराग वाणी जरूरी है, अर्जुनमाली जैसा हत्यारा, प्रभव जैसा चोर, कोशा जैसी वेश्या, चण्डकौशिक जैसे क्रोधी आदि भी जीवन का मैल धोकर तिर गये। अहमदाबाद

संघ को यह लाभ शेष काल में मिलता रहता है। आने वाले संत अपनी-अपनी व्याख्यान शैली से वाचना देते हैं। अब वर्षावास में आपको निरन्तर एक शास्त्र की अनुभवगम्य वाणी को सुनने का अवसर प्राप्त होगा। यह वाणी पाप का कलुष धोने एवं जीवन को ऊँचा उठाने का प्रयास करेगी। चातुर्मास काल में दान-शील-तप-भावना व ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप की साधना आराधना कर पापों का शमन कर, निर्दोष सेवा का लाभ लेकर जीवन को ऊँचा उठायें।

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का चातुर्मासार्थ ब्यावर में मंगल-प्रवेश

निमाज में नवदीक्षित संत-सतियों की बड़ी दीक्षा सम्पन्न

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 6 के पावन सान्निध्य में दिनांक 4 जून 2009 को श्री किशन भवन, निमाज में बड़ी दीक्षा सम्पन्न हुई। उपाध्याय प्रवर के मुखारविन्द से नवदीक्षित संत-सती छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ हुए। इस अवसर पर देश के विभिन्न क्षेत्रों से सैकड़ों दर्शनार्थी बन्धु उपस्थित हुए।

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर ने दशवैकालिक सूत्र के प्रथम अध्ययन का मूल, अर्थ एवं भावार्थ रूप में समझाते हुए धर्म के स्वरूप और उसकी महिमा का परिचय दिया। "धर्म की दीप्तिमान आराधना कामनामुक्त साधक कर सकता है" भगवान् की वाणी के माध्यम से उपाध्यायप्रवर ने उसका हार्द समझाया। बावन अनाचारों से बचने के साथ अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि पाँच महाव्रतों का सम्यक् पालन कैसे करना, इसका स्वरूप भी समझाया। षट्काय के जीवों के रक्षण हेतु पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय की हिंसा टालने की प्रतिज्ञा करवाते हुए जीवन में अब तक हुई विराधना का प्रतिक्रमण, आत्मसाक्षी से निन्दा, गुरु साक्षी से गर्हा करवाते हुए नवदीक्षित संत-सती को कष्ट आने पर नहीं घबराने की प्रेरणा की।

नवदीक्षित संत-सतियों को महाव्रतों में आरोहण के अनन्तर उपाध्यायप्रवर ने परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की अनुज्ञा से नवदीक्षित संत-सतियों के नाम निम्न प्रकार घोषित किये

श्री दुलीचन्द जी म.सा. - श्री दर्शनमुनि जी म.सा.

श्री जितेन्द्रमुनि जी म.सा. – श्री जितेन्द्रमुनि जी म.सा.

महासती श्री मैनाजी म.सा. – महासती श्री सुभद्रा जी म.सा.

महासती श्री सिन्धु जी म.सा. – महासती श्री सिन्धुप्रभा जी म.सा.

श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. ने बड़ी दीक्षा का महत्त्व समझाते हुए कहा कि आज नवदीक्षित संत-सती संयम मार्ग पर विधिवत् आरुढ़ हुए हैं जिसका हमें प्रमोद है। जिस उत्तम भावना से आपने संयम अंगीकार किया है उसी उत्तम भावना से संयम का पालन हो, ऐसी अपेक्षा है। मुनिश्री ने संयम की महत्ता को प्रदर्शित करने वाली गीतिका प्रस्तुत की, जिसके बोल थे-

संयम का पाठ पढ़ा है, अभी चलना है बाकी।
मुमुक्षु भूल न जाना, अभी मंजिल है बाकी॥

इस अवसर पर बोहरा परिवार की पुत्रवधूओं ने 'संयम सुख रो कई केणो, जिनवर आज्ञा में रेणो' नामक गीतिका प्रस्तुत की। बड़ी दीक्षा निमाज में होने के उपलक्ष्य में संघ के उपाध्यक्ष श्री गणेशमल जी भण्डारी ने गजेन्द्रनिधि का ट्रस्टी बनने की स्वीकृति प्रदान की। वीरपिता श्री शांतिलाल जी लुणावत (महासती श्री ऋद्धिप्रभा जी म.सा. के सांसारिक पिता) ने जीवनपर्यन्त जूते-चप्पल पहनने का त्याग कर संयमी महापुरुषों के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति की। संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने इस अवसर पर अपने प्रेरक विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री गणेशमल जी भण्डारी-बैंगलोर एवं श्री सुमतिचन्द जी मेहता-पीपाड़ सिटी ने किया।

निमाज बड़ी दीक्षा तक विराजने के पश्चात् उपाध्यायप्रवर ने जैतारण की आग्रह भरी विनति को ध्यान में रखते हुए जैतारण पधारे। यहाँ से निमाज, सेन्दड़ा होते हुए ब्यावर की ओर कदम बढ़ाए। उपाध्यायप्रवर आदि संतप्रवरों ने अनन्य गुरु भक्त श्री विनयचन्द जी डागा के समधिप्रवर श्रावकरत्न श्री कुशलचन्द जी मेड़तवाल के नवरंग नगर स्थित निवास स्थान से 25 जून को प्रातः 6.15 बजे विहार किया। मार्ग में अनेक श्रद्धालुजन भगवान् महावीर, जैन धर्म, आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि की जय-जयकार करते हुए चल रहे थे। विहार में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्वाध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, शासन सेवा समिति के सदस्य श्री ताराचन्द जी सिंघवी, श्री विमलचन्द जी डागा, संघसेवी श्री विनयचन्द जी डागा आदि प्रमुख श्रावक भी साथ थे। जयपुर,

जोधपुर, पाली, बालोतरा, बाड़मेर, दिल्ली, विजयनगर, अजमेर आदि ग्राम-नगरों से पधारे दर्शनार्थियों ने भी चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश के अवसर पर विहार सेवा का लाभ लिया। प्रातः 6.45 बजे उपाध्यायप्रवर आदि ठाणा 6 का पीपलिया बाजार स्थित जैन स्थानक में चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हुआ। स्थानक में पदार्पण के अनन्तर शान्ति भगवान् की प्रार्थना की गई। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। श्रीमती उषा जी मोदी, श्री कैलाशचन्द जी हीरावत ने संतों से चातुर्मास में लाभ उठाने हेतु प्रेरणा की। श्री विमलचन्द जी डागा ने सन् 2010 का चातुर्मास आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर का संयुक्त रूप से किये जाने हेतु विनति प्रस्तुत की। साधुमार्गी जैन संघ के मंत्री श्री गौतमचन्द जी चौधरी-ब्यावर, रूपासती मण्डल की स्वीटी मेहता, पीपाड़ संघ के मंत्री श्री सुमतिचन्द जी मेहता, ब्यावर के प्रमुख कार्यकर्ता श्री हस्तीमल जी गोलेछा ने भी अपने विचार व्यक्त किये। संघमंत्री श्री महेन्द्र जी गोलेछा ने आगन्तुकों का आभार प्रकट किया।

जोधपुर में साध्वीप्रमुखा जी का मंगल प्रवेश

साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा जोधपुर के उपनगर सरदारपुरा के कुम्भट भवन में ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी 6 जून को पधारे। वहाँ महान् क्रियोद्धारक पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. की 164वीं पुण्यतिथि साध्वीप्रमुखा के सान्निध्य में विशेष धर्माराधना तप-त्याग के साथ सम्पन्न हुई। वहाँ से 10 जून को महासती जी का कोठारी भवन में पदार्पण हुआ। यहाँ आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती संत श्री धर्मेश मुनि जी म.सा. के दो व्याख्यान भी हुए। 24 जून को साध्वीप्रमुखा जी के 76वें जन्म-दिवस के शुभ अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं ने दया, संवर, पौषध, उपवास आदि यथायोग्य व्रत कर अपनी श्रद्धाभक्ति की अभिव्यक्ति दी। जन्मदिन के अवसर पर घोड़ों का चौक विराजित महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. भी कोठारी भवन पधारीं। 15 दिन कोठारी भवन विराजकर महासती जी 26 जून को विहारकर मेहता भवन पधारीं। वहाँ दो रात्रि रहकर बाई जी के तालाब स्थित महादेव जी के मन्दिर के पास ठाकुर साहब के मकान पर रूकीं। यहाँ श्री मनपतराज जी सिंघवी ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। बाई जी के तालाब से 30 जून को आचार्य भगवन्त के

निर्देशानुसार 10.15 बजे विहारकर 11 बजे घोड़ों का चौक स्थानक में चातुर्मासार्थ विशाल जनमेदिनी के जय-जयकारों की ध्वनि के साथ प्रवेश किया। भगवान शांतिनाथ की प्रार्थना से प्रारम्भ कर साध्वीप्रमुखा जी ने ओजस्वी वाणी में उद्‌बोधन दिया। तत्पश्चात् मंत्री श्री नरपतराज जी चौपड़ा ने व्यवस्था सम्बन्धी निर्देश दिए।

तत्त्वचिन्तिका श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ने गुरुणी जी म.सा. का घोड़ों का चौक में प्रवेश करवाकर 1 जुलाई को पावटा होते हुए लगभग 8.15 बजे लक्ष्मीनगर स्थित स्थानक में चातुर्मासार्थ प्रवेश किया।

जयपुर में उच्च शिक्षा हेतु प्रवेश का स्वर्णिम अवसर

राजस्थान एवं अन्य क्षेत्रों से कक्षा दसवीं एवं बारहवीं परीक्षा 60 प्रतिशत से अधिक अंकों से उत्तीर्ण होने वाले छात्रों को श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान में निःशुल्क प्रवेश देकर उन्हें उच्चस्तरीय जैन विद्वान बनाने की योजना है।

जो छात्र प्रवेश के इच्छुक हों वे अपने सम्पूर्ण दस्तावेज/प्रमाण पत्र साथ में लेकर शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क करें- *विजय मेहता-अधिष्ठाता, श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, आचार्य हस्ती भवन, दैनिक भास्कर कार्यालय के पास, जे.एल.एन.रोड़, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान) फोन : 0141-2174883, 9462322197*

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी वर्ष में कर्म सिद्धान्त वारिधि द्विवर्षीय पाठ्यक्रम प्रारम्भ

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा विगत 9 वर्षों से भगवान् महावीर की वाणी को परीक्षाओं के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया जा रहा है। पूर्व में 1 से 14 की परीक्षाएँ आयोजित की जाती थीं। अब स्वाध्याय-सामायिक के प्रबल प्रेरक पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में कर्म सिद्धान्त वारिधि द्विवर्षीय पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया जा रहा है। इस पाठ्यक्रम के द्वारा कर्म सिद्धान्त सम्बन्धी पाठ्यपुस्तकों का गहन अध्ययन-अध्यापन कराने वाले अध्यापक तैयार हो सकेंगे, ऐसा दृढ़ विश्वास है। कर्म सिद्धान्त वारिधि पाठ्यक्रम सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण जानकारी इस प्रकार है-

1. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम को चार सेमेस्टर (छह माही) में विभक्त किया गया है।

प्रत्येक सेमेस्टर में दो-दो प्रश्नपत्र रहेंगे।

2. प्रथम सेमेस्टर के पाठ्यक्रम की परीक्षा जनवरी 2010 में आयोजित होगी।
3. इस पाठ्यक्रम में इस संस्था की चौदहवीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण किये हुए अथवा किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से संस्कृत/जैन दर्शन में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण किए हुए भाग ले सकेंगे।
4. प्रथम सेमेस्टर का पाठ्यक्रम इस प्रकार रहेगा-

प्रथम प्रश्नपत्र : द्रव्यानुयोग कर्म अध्ययन	35 अंक
कर्मग्रन्थ भाग-1	30 अंक
कर्मग्रन्थ भाग-2	35 अंक

शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 19 जुलाई को आयोजित

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 14 तक की परीक्षा 19 जुलाई 2009, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जा रही है।

1. 19 जुलाई 09 की परीक्षा से रोल नं. व स्थायी पंजीयन संख्या अलग-अलग नहीं होगी। रोल नम्बर ही स्थायी पंजीयन संख्या होगी।
2. परीक्षा के दिन नये रोल नं. नहीं दिये जायेंगे। अतः जो भी परीक्षा में भाग लेना चाहें, वे निर्धारित समय में आवेदन-पत्र भरकर शिक्षण बोर्ड कार्यालय में तुरन्त जमा करवायें।
3. सभी को रोल नं. भेजे जा चुके हैं, यदि किन्हीं को प्राप्त नहीं हुए हों तो तुरन्त बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करें।
4. कक्षा 10 व 11 के प्राकृत व्याकरण सम्बन्धी पाठ्यक्रम में संशोधन किया गया है। संशोधित पाठ्यक्रम सम्बन्धित परीक्षार्थियों को भेजा जा चुका है। यदि किसी को प्राप्त न हुआ हो तो वे शिक्षण बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करें।
5. कक्षा 10 व 11 में प्राकृत व्याकरण के अंक पूर्व में 20 थे। अब संशोधित कर 10 अंक किये गये हैं। पूर्व में प्राकृत पाठ भी 10-10 थे, उन्हें भी संशोधित कर 5-5 पाठ किये गये हैं।
6. 4 जनवरी 2009 की परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन

पुरस्कार शीघ्र ही भिजवाने की व्यवस्था की जा रही है।

7. सभी परीक्षार्थियों से निवेदन है कि परीक्षा के दिन उपस्थिति पत्रक में अपने नाम, रोल नं. आदि के आगे हस्ताक्षर करें, वहाँ अपना मोबाइल नम्बर भी अवश्य लिखें। जो परीक्षार्थी परीक्षा परिणाम सम्बन्धी तथा अन्य महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ सीधे ही बोर्ड कार्यालय से तुरन्त प्राप्त करना चाहें, वे अपने मोबाइल नम्बर उपस्थिति पत्रक में अवश्य लिखें।
8. परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन ऑनलाइन भी किया जा सकता है। इसके लिए वेबसाइट www.jainratnaboard.com का प्रयोग करावें।
9. शिक्षण बोर्ड से कोई सूचना प्राप्त करनी हो अथवा आप कोई सूचना शिक्षण बोर्ड को भेजना चाहते हों तो Email : absjrasboard@yahoo.com पर भेज सकते हैं।
10. केन्द्राधीक्षकों एवं निरीक्षकों से निवेदन है कि वे अपना ई-मेल पता शिक्षण बोर्ड कार्यालय में शीघ्र प्रेषित करावें ताकि उन्हें समय-समय पर परीक्षा सम्बन्धी नवीनतम जानकारी उपलब्ध करायी जा सके।

-सुशीला बोहरा, संयोजक, फोन नं. 0291-2630490, 9414133879

शिविर समाचार

जोधपुर में स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा दिनांक 13 से 18 जून तक स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में जयपुर, जोधपुर, सवाईमाधोपुर, कुशतला, चौथ का बरवाड़ा, अलीगढ़ (टोंक), आलनपुर, बजरिया, हिण्डौन सिटी आदि क्षेत्रों के 70 युवा स्वाध्यायियों ने भाग लिया। नये स्वाध्यायियों के लिए आयोजित इस शिविर में स्वाध्यायियों को विशिष्ट विद्वानों द्वारा पर्युषण पर्व के अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में क्या-क्या कार्यक्रम किस प्रकार आयोजित किए जाएँ, इसकी पूर्व तैयारी करवाई गई। प्रातःकाल विशिष्ट साधक एवं वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री फूलचन्द जी मेहता का प्रेरणादायी उद्‌बोधन एवं चंचलमल जी चोरडिया की स्वास्थ्य विषयक जानकारी शिविरार्थियों ने प्राप्त की। तत्पश्चात् चार कालांशों के माध्यम से वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर, श्री रंगरूपमल जी डागा-जोधपुर, श्री प्रकाश जी सालेचा-

जोधपुर, श्री त्रिलोकचन्द जी जैन-जयपुर ने अन्तगड़ सूत्र वाचन, विभिन्न विषयों पर वक्तृत्व कला का अभ्यास, प्रार्थना, मंगलाचरण, भजन का चयन आदि विषयों पर शिविरार्थियों को प्रेक्टिकल अभ्यास करवाया। दोपहर के समय प्रतिदिन सामूहिक कक्षा आयोजित हुई, जिसमें क्रमशः संयोजक श्री चंचलमल जी चोरडिया ने स्वाध्यायी की दिनचर्या को समझाते हुए स्वाध्यायियों को कार्यालय से निरन्तर सम्पर्क बनाए रखने की प्रेरणा की। संघ कार्याध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने अन्तगड़ सूत्र की विशेष व्याख्या करते हुए उसको रोचक बनाने की कला बताई। विशिष्ट साधक श्री फूलचन्द जी मेहता एवं प्रकाश जी सालेचा ने स्वाध्यायियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया तथा आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द जी जैन ने प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान आदि विषयों के सैद्धान्तिक पक्ष पर प्रकाश डाला तथा प्रश्नों का समाधान किया। शिविर काल में विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। शिविर का समापन कार्यक्रम 18 जून को आयोजित हुआ।

जयपुर में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के तत्त्वावधान में ग्रीष्मावकाश में जयपुर के सुबोध स्कूल, महावीर नगर, श्यामनगर, मालवीय नगर, तिलक नगर, विद्याधर नगर, नित्यानन्द नगर, जवाहर नगर एवं लालकोठी इन 9 स्थानों पर दिनांक 24 मई से 14 जून तक बालक-बालिकाओं के धार्मिक शिक्षण शिविर लगाये गए। सुबोध स्कूल में यह शिविर 16 मई से प्रारम्भ कर दिया गया था। इन शिविरों में लगभग 800 बालक-बालिकाओं ने भाग लेकर अनुभवी अध्यापकों द्वारा विभिन्न कक्षाओं में धार्मिक, नैतिक एवं संस्कार निर्माण से सम्बन्धित शिक्षा ग्रहण की। शिविर का समापन समारोह 28 जून को रामबाग सर्किल स्थित सुबोध पब्लिक स्कूल के सभागार में आयोजित किया गया। समारोह के अध्यक्ष अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के निदेशक श्री अशोक जी कवाड़ एवं समारोह के मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री मनीष जी भण्डारी, न्यायाधीश राजस्थान उच्च न्यायालय थे। समारोह में अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा एवं अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के कार्याध्यक्ष श्री प्रमोद जी हीरावत भी उपस्थित थे। इस अवसर पर सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में विशिष्ट सेवाएँ

प्रदान करने के लिये न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा एवं वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा का अभिनन्दन किया गया। न्यायमूर्ति श्री मनीष जी भण्डारी ने अपने उद्‌बोधन में बालक-बालिकाओं में धार्मिक संस्कार के बीज प्रस्फुटित करने के लिए इस प्रकार के धार्मिक शिविर के आयोजन करने हेतु युवक परिषद् की सराहना की। अध्यक्षीय भाषण में अशोक जी कवाड़ ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वे ही समाज का भविष्य हैं तथा बच्चों को प्रतिज्ञा करवाई कि वे जीवन में ऐसा कोई कार्य नहीं करेंगे, जिससे उनके माता-पिता को शर्मिन्दगी उठानी पड़े। शिविरार्थियों ने भी अपनी प्रस्तुतियाँ दीं।

-प्रशान्त कर्नावट, शाखा सचिव

जोधपुर में श्राविका मण्डल का शिविर सम्पन्न

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर के तत्त्वावधान में 18 से 24 जून तक ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 152 बहनों ने भाग लिया। शिविर में आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की पहली से दसवीं कक्षा के पाठ्यक्रम का अध्यापन कराया गया। शिविर में श्री धर्मचन्द जी जैन, श्री प्रकाश जी सालेचा, श्रीमती सुशीला जी बोहरा, श्रीमती रतन जी चोरडिया, श्री रंगरूपमल जी डागा, श्रीमती अकलकंवर जी मोदी ने अध्यापन कार्य करवाया। शिविर में 5 बहिनें स्वाध्यायी बनीं तथा अधिकांश बहनों ने शिक्षण बोर्ड की परीक्षा के फार्म भरे।

चेन्नई में नैतिक शिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री जैन संघ कालाडिपेट एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद चेन्नई शाखा द्वारा दिनाँक 17 मई से 22 मई, 2009 तक कालाडिपेट, चेन्नई में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 90 शिविरार्थियों ने भाग लिया। इन्हें 6 विभागों में विभाजित कर प्रातः 7 से 8 बजे तक एवं दोपहर 2 से 3.30 बजे तक, 18 वर्ष से ऊपर सभी श्रावक-श्राविकाओं को विशिष्ट विद्वानों के द्वारा उद्‌बोधन के माध्यम से धर्म से जोड़ने एवं जागृत करने का प्रयास किया गया। प्रातः 9 बजे से 3.30 बजे तक बच्चों के लिए सामायिक विधि सहित, प्रतिक्रमण, 25 बोल, 24 तीर्थंकर आदि का अध्ययन कराया गया। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन बालक-बालिकाओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन कर उन्हें प्रोत्साहित किया गया। शिविर का संचालन जैन रत्न युवक

परिषद्, चेन्नई शाखा के अध्यापक श्री सुरेशकुमार जी हींगड़ एवं विनोदकुमार जी जैन ने बखूबी किया। प्रत्येक कक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई शाखा के सचिव श्री अशोक कुमार जी लोढ़ा ने पुरस्कार प्रदान कर विद्यार्थियों का बहुमान किया। शिविर में अध्यापन कार्य में सहयोग प्रदान करने वाले अध्यापक तथा स्थानीय स्वाध्यायिओं का सम्मान श्री जैन संघ, कालाड़ीपेट द्वारा किया गया।

अन्य शिविर

अलसूर(बैंगलोर)- उपाध्याय श्री पार्श्वचन्द्र जी म.सा., डॉ. श्री पदमचन्द जी म.सा. के सन्निध्य में श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, अलसूर के तत्त्वावधान में 12 से 19 अप्रेल, 2009 को शिक्षण संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

राजानांदगाँव- आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के सान्निध्य में दस दिवसीय जैन धार्मिक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 650 से अधिक शिविरार्थियों ने भाग लिया।

मदनगंज-किशनगढ़- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के तत्त्वावधान में धार्मिक शिक्षण शिविर 10 से 17 जून तक आयोजित किया गया। शिविर में प्रतिदिन प्रातःकालीन सत्र में लगभग 125 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। दोपहर के सत्र में लगभग 50 महिलाओं ने भाग लिया। कुल 10 कक्षाओं में अध्यापन किया गया। रात्रिकालीन सत्र में धार्मिक प्रश्नोत्तर, वक्तृत्व कला, प्रतिभा निखार आदि के कार्यक्रम आयोजित किये गए।

समग्र जैन चातुर्मास सूची 2009 का प्रकाशन

समग्र जैन समाज की एकता, समन्वय और संगठन की एकरूपता उत्पन्न करने हेतु समग्र जैन समुदायों (श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी एवं दिगम्बर समुदायों) के लगभग 14 हजार से अधिक जैन साधु-साध्वियों के चातुर्मासों की सूची का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस वर्ष 'समग्र जैन चातुर्मास सूची-2009' मुंबई स्थानकवासी जैन चातुर्मास सूची (गुजराती-पाकेट बुक) एवं रंगीन चार्ट का त्रिदशाब्दी वर्ष अंक का प्रकाशन करने का निश्चय किया गया है।

अतः आपसे नम्र निवेदन है कि आपके गाँव/शहर/कस्बे/उपनगरों में जिन पूज्य जैन आचार्यों, साधु-साध्वियों के 2009 वर्ष के चातुर्मास स्वीकृत हुए हैं, उन सभी संत-सतियों के पूरे ठाणाओं के नाम, समुदाय का पूरा नाम, चातुर्मास स्थल का नाम, सम्पर्क सूत्र, फोन नम्बर, नई दीक्षा एवं महाप्रयाण की सूची आदि की जानकारियाँ शीघ्र भिजवाने की कृपा करावें, ताकि चातुर्मास प्रारम्भ होने तक इनका प्रकाशन किया जा सके। सम्पर्क सूत्र- **श्री बाबूलाल जैन 'उज्जवल'**, संपादक, 105 तिरुपति अपार्टमेन्ट, आकुर्ली क्रोस रोड़ नं. 1, रेलवे स्टेशन के पास, कांदिवली(पूर्व) मुंबई-400101, टेलीफैक्स : 022-28871278, मोबाइल : 093245-21278

विधवाओं एवं जरूरतमन्दों को आर्थिक सहयोग

श्वेताम्बर जैन ओसवाल समाज की विधवाएं एवं जरूरतमन्द परिवार जिनको जीवन यापन में कठिनाई है, जिन्हें कहीं से भी सहयोग नहीं मिल रहा हो और मासिक आय रुपये 1500/- से अधिक न हो, आर्थिक सहयोग प्राप्त करने के लिए अपना फोन, मोबाइल नं., नाम, पूरा पता मय पिन कोड, दो लिफाफों पर लिखकर प्रत्येक पर 5/-रु. का डाक टिकट लगाकर दोनों लिफाफों को पत्र में रखकर, आवेदन पत्र मंगाने के लिए निम्न पते पर भेजें- *गोठी चेरिटेबल ट्रस्ट, श्री लाभचन्द जी कोठारी, डी-120, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड़, बापू नगर, जयपुर-302015-07, फोन: 93140-03536 (मोबाइल)*

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन

श्वेताम्बर जैन समाज के जरूरतमन्द परिवारों के मेधावी, होनहार, प्रतिभावान छात्र-छात्राएँ, जिन्होंने 8वीं एवं इससे उच्च कक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की है। जिनके परिवार की मासिक आय रुपये 8500/- से अधिक नहीं है। छात्रवृत्ति के लिये आवेदन पत्र मंगाने के लिए, अपना फोन, मोबाइल नं., नाम, पूरा पता मय पिन कोड, दो लिफाफों पर लिखकर प्रत्येक पर $/-$ रु. का डाक टिकट लगाकर दोनों लिफाफों को पत्र में रखकर, निम्न पते पर भेजें - *सन्तोक तारा जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, श्री लाभचन्द जी कोठारी (एम.ए.), डी120, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड, बापू नगर, जयपुर-302015, मोबाइल नं. 93140-03637*

ग्रीष्मकालीन प्राकृत भाषा एवं साहित्य की अध्ययनशाला सम्पन्न

भोगीलाल लहेरचन्द संस्कृति संस्थान, दिल्ली के द्वारा अखिल भारतीय ग्रीष्मकालीन प्राकृत भाषा एवं साहित्य की अध्ययनशाला 11 मई से 31 मई तक आयोजित की गई। प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आचार्य हेमचन्द्र के व्याकरण के सूत्रों द्वारा अध्ययन-अध्यापन कराने वाली पूरे भारत में यह एकमात्र संस्था है। 31 मई को आयोजित समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए हिन्दी साहित्य के सुविख्यात समालोचक प्रो. नामवर सिंह ने कहा कि यदि जैन समाज प्रयास करे तो प्राकृत भाषा एक जीवन्त भाषा हो सकती है। उन्होंने प्रतिभागियों को आह्वान किया कि आप लोग प्राकृत भाषा का देश-देशान्तर तक प्रचार करने में सहयोग दें। कार्यशाला में प्रारम्भिक एवं एडवान्स दो पाठ्यक्रम संचालित हुए, जिनमें 52 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। श्रेष्ठ प्रतिभागियों को परीक्षा के पश्चात् पुरस्कृत किया गया। पाठ्यक्रम में प्रो. सुरेशचन्द्र पाण्डे, डॉ. दीनानाथ शर्मा, प्रो. जगतराम भट्टाचार्य, प्रो. फूलचन्द जैन आदि ने अध्यापन कार्य किया।

संक्षिप्त समाचार

चेन्नई- अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अन्तर्गत चेंन्नई में गठित श्री जैन रत्न युवती मण्डल द्वारा प्रत्येक शनिवार धार्मिक एवं संस्कारों की वृद्धि हेतु कक्षा का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें विशिष्ट श्रावक-श्राविकाओं का मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। साथ ही प्रति सप्ताह परीक्षाओं का आयोजन भी किया जा रहा है।

मुरादाबाद- तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय (राष्ट्रीय स्तरीय शैक्षणिक संस्थान) की स्थापना का एक वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर त्रिदिवसीय भव्य आयोजन मुरादाबाद में सम्पन्न हुआ, जिसमें प्रो. के.के अग्रवाल, पूर्व कुलपति, गुरु गोविन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, डॉ. के.सी. चक्रवर्ती एवं मैनेजिंग डायरेक्टर, पंजाब नेशनल बैंक आदि का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

दिल्ली- प्रसिद्ध समाजसेवी श्री हरकचन्द जी नाहटा की स्मृति में भारतीय डाक विभाग ने 5 रुपये का डाक टिकट जारी किया है। वे खरतरगच्छ महासंघ के अध्यक्ष थे तथा फिल्म निर्माण के क्षेत्र में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान था।

चेन्नई- मद्रास विश्वविद्यालय में एम.ए. जैनॉलोजी पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित हैं। इस पाठ्यक्रम में जैन इतिहास, नीतिशास्त्र, तत्त्वमीमांसा, योग और साधना, व्यक्तित्व विकास, पर्यावरण चेतना और जैन विद्या के प्रश्नपत्र होते हैं। अब तक इस विश्वविद्यालय से 70 छात्र-छात्राओं ने एम.ए. तथा 30 छात्र-छात्राओं ने पी-एच्.डी. एवं एम.फिल परीक्षाएँ उत्तीर्ण की हैं।

गाजियाबाद- श्री कमलेश मुनि 'कमलेश' ने गाय को राज्य पशु घोषित किये जाने की मांग उठाई है।

बधाई/चुनाव

चेन्नई- सुश्री प्रज्ञा चोरडिया सुपौत्री श्री चंचलमल जी चोरडिया एवं सुपुत्री श्री

अशोक जी चोरडिया ने IIT-JEE 2009 परीक्षा उत्तीर्ण कर रुड़की के आई. आई.टी. कॉलेज में प्रवेश लिया है। आपने सामायिक, प्रतिक्रमण एवं 25 बोल कण्ठस्थ किये हैं। प्रतिवर्ष दीपावली के उत्सव पर आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में आप तेले के तप की आराधना करती हैं।

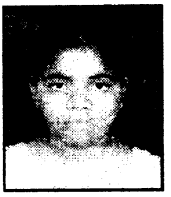

हैदराबाद- सुश्री कोमल छाजेड़ सुपुत्री श्री संदीप के. छाजेड़ ने 10 वीं कक्षा में 92 प्रतिशत अंक प्राप्तकर विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। आप वरिष्ठ स्वाध्यायी स्व. श्री किशोरचन्द जी छाजेड़ की सुपौत्री हैं।

नसीराबाद- श्री प्रतीक जैन (मुणोत) सुपुत्र श्री मनीषकुमार जैन ने बारहवीं कक्षा (वाणिज्य) में 93.8 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। प्रतिभाशाली बालक को हार्दिक बधाई।

मुम्बई- श्री रवि बुबकिया पुत्र श्री प्रकाश जी बुबकिया (पाली मारवाड़) ने

इंजीनियरिंग कर इन्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ फोरेन ट्रेड, नई दिल्ली से 82 प्रतिशत अंकों से एम.बी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की है। आपकी नियुक्ति बिजनस कन्सलटेंट के पद पर बैंगलोर में हुई है। आपकी धार्मिक अध्ययन में भी रुचि है।

भटिण्डा- श्री एस.एस. जैन सभा, भटिण्डा की कार्यकारिणी में शिवकुमार जैन को प्रधान चुना गया है। धनराज जैन एवं विजय कुमार जैन को उपप्रधान, उमेश कुमार जैन को महामंत्री, महेश जैन को सचिव, विजय कुमार जैन को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया है।

श्रद्धाञ्जलि

अयनावरम्- सुश्रावक श्री सम्पतराज जी रांका सेठिया का 26 अप्रेल, 2009 को

64 वर्ष की आयु में प्रभुस्मरण एवं आत्मालोचन करते हुए समाधिपूर्वक मरण हो गया। कुछ समय से अस्वस्थ होते हुए भी वे विभिन्न प्रकार के त्याग, प्रत्याख्यान एवं सामायिक-स्वाध्याय में रत रहते थे। आप अनेक धार्मिक व सामाजिक संस्थान से जुड़े हुए थे।

नवसारी- श्री अंकित मुणोत पुत्र श्री ज्ञानेश कुमार जी मुणोत का 16 वर्ष की लघुवय में 21 मई, 2009 को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। मरणोपरान्त आपके चक्षु नेत्र विभाग को दान कर दिये गये।

विजयनगर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मैनादेवी जी सांड धर्मपत्नी स्व. श्री

जोरावर मल जी सांड का 84 वर्ष की उम्र में 21 जून, 2009 को स्वर्गवास हो गया। आप मिलनसार, हँसमुख और सरल-स्वभावी थीं। आप कई वर्षों से रात्रि-चौविहार का प्रत्याख्यान करती थीं। प्रतिदिन सामायिक व प्रतिक्रमण करना, पर्व तिथियों पर हरी सब्जी का त्याग, संत-सतियों की सेवा करना आपकी प्रमुख विशेषता थी। आप स्वावलम्बी और पुरुषार्थी थीं। आपका पूरा परिवार धार्मिक संस्कारों से ओत-प्रोत है।

- छगनलाल लोढ़ा, पाली

जोधपुर- जुहू मुंबई निवासी-दृढधर्मी सुश्राविका श्रीमती रुकमा देवी धर्मपत्नी

स्व. श्री भंवरलाल जी गुंदेचा का स्वर्गवास 78 वर्ष की आयु में 22 मई, 2009 को जोधपुर में हो गया। आपने अपने जीवन काल में वर्षीतप, मासक्षपण, अठाइयाँ, सिद्धि तप, तेले, बेले एवं अनेक उपवास की तपस्याएँ कीं। आपके अनेक नियम थे, आप शालीनता, मृदुता, सहजता आदि गुणों से सम्पन्न थीं। आपकी आचार्यप्रवर

एवं संत-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति थी। आप पुत्र श्री अशोक जी गुंदेचा एवं श्री प्रकाश जी गुंदेचा, तीन पुत्रियाँ एवं उनका भरा पूरा परिवार छोड़कर गयी हैं। आपके पुत्र श्री अशोक जी गुंदेचा गजेन्द्र निधि के ट्रस्टी तथा भारत जैन महामंडल के आजीवन सदस्य हैं एवं सभी धार्मिक कार्यो में विशेष रुचि रखते हैं।

दिल्ली- सुश्रावक श्री केसरीचन्द जी पालावत का मार्च माह में देहावसान हो गया। वे धर्मनिष्ठ एवं सामाजिक कार्यों के प्रति समर्पित व्यक्तित्व थे। आपकी सहृदयता, आतिथ्य सत्कार एवं सरल स्वभाव का अपना प्रभाव था।

मुम्बई- जुहू निवासी धर्मनिष्ठ, सुश्राविका श्रीमती वसु गुंदेचा धर्मपत्नी श्री अशोक

जी गुंदेचा का 5 जून को जोधपुर में स्वर्गवास हो गया है। आप प्रियधर्मी, दृढधर्मी तथा जीवदया प्रेमी, मृदुभाषी, सरल सुश्राविका थीं। आप प्रतिदिन पोरसी करती थीं एवं अनेक नियम रखती थीं। आपकी गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति अटूट आस्था एवं श्रद्धा भक्ति थी। आपके पति श्री अशोक जी गुंदेचा सामाजिक-धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि रखने वाले सरलमना सुश्रावक हैं, आप गजेन्द्रनिधि के ट्रस्टी तथा भारत जैन महा मंडल के आजीवन सदस्य हैं।

भेडोला-सवाईमाधोपुर- श्री बाबूलाल जी जैन का 23 मई 2009 को देवलोक

गमन हो गया। आपने 15 वर्षों पूर्व शीलव्रत ग्रहण कर लिया था। प्रतिदिन सामायिक और संवर की साधना जीवनभर करते रहे। स्वाध्याय संघ, जोधपुर के स्वाध्यायी के रूप में आपने वर्षों तक सेवाएँ प्रदान कीं।

मुम्बई- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री कल्याणमल जी कांकरिया सुपुत्र स्व. श्री विजयराज

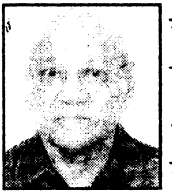

जी कांकरिया का 74 वर्ष की वय में 2 जून 2009 को स्वर्गगमन हो गया। आपकी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धाभक्ति थी। जीवनपर्यन्त आपने अपने नित्यनियम का पालन किया। धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न अपने पीछे भरापूरा सुसंस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

2500/- साहित्य की आजीवन सदस्यता हेतु

685 श्री अजय जी बोथरा, कोलकाता (प.ब.)

686 श्री भुवनेश कुमार जी मानावत, कानोड़-उदयपुर (राज.)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

12035 Shri Kamal Chand ji Nahar, Chennai (Tamilnadau)

12036 Shri Gajendera ji Gang, Maninagar, Ahmedabad(Gujrat)

12037 Shri J. Ganpath Raj ji Abad (Jain), Raichur(Karnataka)

12038 Shri Deep Chand ji Gandhi, Mysore(Karnataka)

12039 Shri ChetanSingh ji Dabaria, Clerk Colony, Indore(M.P.)

12040 Shri AshokKumar ji Mehta,Mishrilal Nagar,Dewas (M.P.)

12041 Dr. Kailash Chand ji Jain, Tonk-Khurd, Dewas (M.P.)

12042 Shri Sunil D. Jain, 43/2,Karve Road,Eronwonde,Pune (M.S.)

12052 Shri S. Lalchand ji Jain, Bangalore (Karnataka)

12054 Shri Hem Chand ji Nahata, Gali Gasiram, Hauzkazi, Delhi

12055 श्री राजेन्द्र जी जैन, वरुणी अपार्टमेन्ट, 285-286, आदर्शनगर, जयपुर (राजस्थान)

12056 श्री प्रेमचन्द जी चौपड़ा, रत्नज्योति अपार्टमेन्ट, घुड़दौड़ रोड़, सूरत (गुजरात)

12057 श्री यशपालसिंह जी जैन, हरिभाऊ उपाध्याय नगर, सिनेवर्ल्ड के पीछे, अजमेर (राज.)

12060 श्री मोतीलाल जी चौपड़ा, मालगोदाम रोड़, बाड़मेर-344001 (राजस्थान)

12061 श्री मदनलाल जी लूँकड़, बाड़मेर कलेण्डर रोड़, बालोतरा, बाड़मेर (राजस्थान)

12062 श्री राजेन्द्र जी ओस्तवाल,होटल राजमहल के पास,सेन्दड़ा रोड़, ब्यावर,अजमेर (राज.)

12063 Shri C. Bhanwarlal ji Jain, Adyar, Chennai (Tamilnadu)

12065 श्री दिनेशराज जी भंडारी, पेटी का नोहरा, मोती चौक, जोधपुर (राजस्थान)

12066 श्री धीरज कुमार जी जैन, डी 336, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान)

12072 श्री वीरेन्द्र कुमार जी जैन, सिद्धार्थ नगर, बोरिवली, मुम्बई (महाराष्ट्र)

12073 श्री भुवनेश कुमार जी मानावत, धीगों की घाटी, कानोड, उदयपुर (राजस्थान)

500/- श्री डी. बोहरा परिवार, चेन्नई के सौजन्य से

12043 श्री राजेन्द्र जी चोरड़िया, शेतकी भंडार, मेन रोड़, हिंगनघाट, वर्धा (महाराष्ट्र)

12044 श्री मनोजकुमारजी जैन,नारायणी स्कूल के पास,मकान नं.43/47,आगरा (उत्तरप्रदेश)

12045 श्री जम्बूकुमारजी कांकरिया,पोकरण हाऊस के पास,यू.आई.टी.चौराहा,जोधपुर (राज.)

12046 डॉ. रेखा जी भंडारी, भंडारी हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर, जयपुर (राजस्थान)

12047 श्री कन्हैयालाल जी जैन, जगदम्बा कॉलोनी, हेमन्त हॉस्पिटल के पास, जयपुर (राज.)
12048 कांकरिया सबमर्सिबल एण्ड स्पेअर्स, जलते दीप भवन, जालोरी गेट, जोधपुर (राज.)
12049 श्री सुरेश जी हिंगड, ग्राम–पहुँना, जिला–चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
12050 श्री रमेश जी मरलेचा, वर्धमान नगर, मंडिया रोड़, पाली (राजस्थान)
12051 Shri A.K. Nalwaya ji, Church Ke Pass, Indore (M.P.)
12053 Shri Shrikant ji, Near Big Postoffice, Chennai (Tamilnadu)
12058 श्रीमती संगीता जी नागौरी, 218, वकील कॉलोनी, भीलवाड़ा (राजस्थान)
12067 श्री धर्मचन्द जी जैन (करेला वाले), ट्रांसफॉर्मर के पास, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
12068 श्री राजमल जी जैन (करेला वाले), गुरु द्वारा रोड़, शहर सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
12069 श्री पुष्पराज जी भंडारी, हॉस्पिटल के सामने, पीपाड़सिटी, जोधपुर (राजस्थान)
12070 श्री मोतीलाल जी मेहता, चौपाटा बाजार, पीपाड़सिटी, जोधपुर (राजस्थान)
12071 श्रीमती इन्द्रा बाई जी जैन, पटवा गली, छीतर चौराहा, शहर सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
12074 श्रीमती संगीता जी भंसाली, जोशियों की गली, गुंदी का मौहल्ला, जोधपुर (राजस्थान)
12075 श्री भंवरलाल जी बाफणा, कुड़ी, जोधपुर (राजस्थान)

250/- श्री व्ही पारस भय्या, उज्जैन के सौजन्य से

12059 श्री दीपकजी छाजेड़, स्वागत, कलेक्टर पथ,जैन स्थानक,सटाणा रोड़,मालेगाँव (महा.)
12064 श्री गिरीश जी प्रजापति, 1 व 8, दादाबाड़ी, कोटा (राजस्थान)

जिनवाणी हेतु साभार

15000/- श्री महावीरचन्द जी बाफणा, चेन्नई, बाल स्तम्भ पुरस्कार राशि हेतु भेंट।

11000/- श्री अशोक कुमार जी, मुकेश कुमार जी गुंदेचा, जुहु-मुम्बई, श्रीमती वशु जी धर्मपत्नी श्री अशोक कुमार जी गुंदेचा के 15 जून 2009 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

5000/- श्री अशोक कुमार जी, मुकेश कुमार जी गुंदेचा, जुहु-मुम्बई, पूज्य माताजी रूकमादेवी धर्मपत्नी स्व. श्री भवरलाल जी गुंदेचा के 22 मई, 2009 को देवलोकगमन होने की पुण्य स्मृति में भेंट।

2000/- शा. गौतमचन्द जी, नवरतनचन्द जी, अजीतराज जी, डॉ. राकेश कुमार जी, मनीष कुमार जी ओस्तवाल (भोपालगढ़ वाले), बैंगलोर अपने पूज्य पिताजी श्री राजमल जी ओस्तवाल का 87 वर्ष की आयु में पीपाड़शहर में स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1101/- श्रीमती उर्मिला जैन धर्मपत्नी श्री सोहनलाल जैन (अलीगढ़-रामपुरा वाले)जयपुर, सुपुत्र शुभांशु जैन C.B.S.E. की दसवी परीक्षा में 91% एवं केन्द्रीय विद्यालय नं. 1 में तीसरा स्थान आने की खुशी में भेंट।

1101/- श्री मूलचन्द जी जैन (अलीगढ़-रामपुरा वाले) सुपौत्र क्षितिज जैन सुपुत्र श्री ताराचन्द जी जैन, कोटा के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

1101/- श्री ओमप्रकाश जी बिलोपा वाले, नवसारी (गुजरात), अपने सुपुत्र दीपू (टिकम) का शुभ विवाह सौ. का. कविता सुपुत्री श्री रमेशचन्द्र जी जैन अलीगढ़ (टोंक) के संग 8 जून को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- डॉ.धर्मचन्द जी, ऋषभचन्द जी जैन, जोधपुर (राज.), सौभाग्यकांक्षिणी कनीनिका सुपुत्री श्रीमती मधुजी-डॉ.धर्मचन्द जी जैन का मंगल-परिणय 26 जून,2009 को चि. अमित सुपुत्र श्रीमती ललिता जी एवं श्री सुरेशचन्द जी जैन, हा.बोर्ड, सवाईमाधोपुर के संग सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री कुशलचन्द जी जैन, कैलाशचन्द जी जैन, नई दिल्ली, स्व. श्री केशरीचन्द जी पालावत की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती शिवानी जी-सुरेश जी कोठारी, जयपुर अपने पुत्र चि. शैलेश जी (बैंकाक)-श्रीमती नेहा जी कोठारी के पुत्र रत्न प्राप्ति के अवसर पर सप्रेम भेंट।

1100/- कोठारी ज्वेलर्स, नागपुर (महा.) द्वारा पीपाड़ में चार मुमुक्षु भाई-बहिनों की दीक्षा महोत्सव के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री संदीप एवं सिद्धार्थ जी सुराणा सुपुत्र श्री राजेन्द्र कुमार जी सुराणा, मुम्बई (महा.) द्वारा पीपाड़ में चार मुमुक्षु भाई-बहिनों की दीक्षा महोत्सव के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री रामदयाल जी, उम्मेदचन्द जी जैन (सवाईमाधोपुर वाले), कोटा चि. रितेश जी जैन के विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती जे. मनोहरबाई जी धर्मपत्नी स्व. श्री जवरीलाल जी लूणिया, पल्लीपेट पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन दर्शन, वंदन नारायणपुर-अहमदाबाद में करने के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री चिरंजीलाल जी, धर्मेन्द्र कुमार जी, नितिन कुमार जी सांड, विजयनगर-अजमेर, श्रीमती मैनादेवी जी सांड धर्मपत्नी स्व. श्री जोरावरमल जी सांड का स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1001/- श्रीमती लाडदेवी जी धर्मपत्नी श्री मांगीलाल जी कोठारी, चेन्नई साध्वी प्रमुखा, शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 76 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1001/- श्री दिलीप जी भंडारी (जोधपुर वाले), रत्नागिरी, श्रीमती कमला देवी जी धर्मपत्नी श्री सुगनचन्द जी भंडारी की पुण्य स्मृति में भेंट।

1000/- श्री नौरतन जी गांग, सूरत, अपनी पुत्रवधू श्रीमती शशि जी गांग धर्मपत्नी श्री प्रवीण जी गांग व सुपौत्री अमिता गांग सुपुत्री श्री प्रवीण जी गांग की प्रथम पुण्य तिथि की स्मृति में भेंट।

501/- श्री प्रकाश जी बुबकिया, मुम्बई श्री रवि जी बुबकिया (कंकू चौपड़ा) सुपुत्र श्री प्रकाश जी बुबकिया ने बी.ई. (ई एण्ड सी) में एवं बी.ए. (आई.बी.) आई.आई.एफ.टी. दिल्ली से 82% में उत्तीर्ण कर शिक्षण सानन्द सम्पन्न करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री विनयचन्द जी, महेशचन्द जी जैन, आलनपुर-सवाईमाधोपुर चि. जितेश जी जैन के

17 जून को सम्पन्न विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्रीमती विमलादेवी, भूपेन्द्र कुमारजी-कुसुम जी कटारिया (पुत्र-पुत्रवधू), चिराग, आयुषी जी कटारिया, अजमेर, पूज्य माताजी श्रीमती उमरावबाई जी एवं पूनमचन्द जी मुणोत की 18वीं पुण्यतिथि 25 मई 2009 के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री मनीष जी, संदीप जी लोढ़ा, जोधपुर, अपने माता-पिता (श्रीमती उषाजी एवं श्री माधोमल सा लोढ़ा) की दिनांक 4 जुलाई, 2009 को शादी की 40 वीं वर्षगाठ हेतु सप्रेम भेंट।

500/- श्री ज्ञानचन्द जी, विनोद कुमार जी रांका सेठिया, चेन्नई, अपने पूज्य पिताजी श्री सम्पतराज जी रांका सेठिया अयनावरम-चेन्नई वालों की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री देवेन्द्र कुमार जी श्रीमती कनक जी बडेर, दिल्ली, अपने सुपुत्र अंशुज जैन के विवाह उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री पन्नालाल जी, बादलचन्द जी, राजेन्द्र जी कुम्भट, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री दीपचन्द जी कुम्भट की पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्रीमती कमला जी धर्मपत्नी श्री अमरलाल जी मेहता, जोधपुर, साध्वी प्रमुखा शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 76 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल हेतु साभार

1101/- श्री ज्ञानचन्द जी मुणोत, हुबली, बेंगलूरु में दिनांक 25-26 जनवरी की कार्यशाला के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री प्रकाशचन्द जी खारीवाल, बेंगलूरु, सुपुत्र श्री गौरव संग सौ.कां. स्वप्ना के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री देवराज जी, किरणराज जी चौपड़ा, शूले-बेंगलूरु, सौ. स्वप्ना सुपुत्री श्री निर्मल कुमार जी संग श्री गौरव जी से शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

जीवदया हेतु साभार

501/- श्रीमती उषाजी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री माधोमल सा लोढ़ा, जोधपुर, दिनांक 4 जुलाई, 2009 को अपनी शादी की 40 वीं वर्षगाठ के उपलक्ष्य में जीवदया हेतु भेंट।

500/- श्रीमती मंजू जी सिंघवी धर्मपत्नी श्री संतोषचन्द जी सिंघवी, जोधपुर, अपनी माताजी स्व.श्रीमती मीमकंवर जी मोहनोत धर्मपत्नी स्व. श्री पूनमचन्द जी मोहनोत की प्रथम पुण्य तिथि दिनाँक 31/05/2009 के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री पन्नालाल जी, बादलचन्द जी, राजेन्द्र जी कुम्भट, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री दीपचन्द जी कुम्भट की पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार सहयोग

2100/- श्री गौतमचन्दजी, नवरतनचन्द जी, अजीतराज जी, डॉ. राकेशकुमार जी, मनीषकुमार जी ओस्तवाल (भोपालगढ़ निवासी), चेन्नई, अपने पूज्य पिताजी श्री राजमल जी

ओस्तवाल की पावन स्मृति में भेंट।

2100/- श्री रतनलाल जी कवाड़, जोधपुर द्वारा सहायतार्थ।

1105/- श्री भंवरलाल जी दिलसुख राज जी, दीपककुमार जी, दफतरी (चोरडिया), हैदराबाद द्वारा सहायतार्थ।

1100/- श्री ओमप्रकाश जी बिलोपा वाले, नवसारी (गुजरात) अपने सुपुत्र दीपू (टिकम) का शुभ विवाह सौ. कां. कविता सुपुत्री श्री रमेशचन्द्र जी जैन अलीगढ़ (टोंक) के संग 8 जून को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती मोहनकंवर जी मेहता, जोधपुर द्वारा सहायतार्थ हेतु।

स्वाध्याय संघ, बजरिया शाखा को प्राप्त साभार

501/- श्री विनयचन्द जी, महेशचन्द जी जैन, आलनपुर-सवाईमाधोपुर,चि. जितेश जी जैन के 17 जून को सम्पन्न विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

2,52000/- श्री महावीरचन्द जी, राकेशचन्द जी ललवानी, चेन्नई (तमि.)

2,52000/- श्रीमती कंचनबाई जी,पदमचन्द जी पींचा , चेन्नई (तमि.)

1,20000/- श्री सम्पतराज जी चौधरी, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 28 मई, 2009 को पीपाड़ सिटी में हुई दीक्षा के उपलक्ष्य में भेंट।

1,20000/- श्री पदमचन्द जी ललितकुमार जी बाघमार, चेन्नई (तमि.) द्वारा अपने पुत्र श्री गजेन्द्र कुमार के विवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

60,000/- श्री सागरमल जी, महावीर जी, राजेश जी छाजेड़, चेन्नई (तमि.) द्वारा दिनांक 28 मई, 2009 को पीपाड़ सिटी में हुई दीक्षा के उपलक्ष्य में भेंट।

36,000/- श्री नवरतनमल जी, अनिल कुमार जी भंसाली, बैंगलोर द्वारा दिनांक 28 मई, 2009 को पीपाड़ सिटी में हुई दीक्षा के उपलक्ष्य में भेंट।

36,000/- श्रीमती शान्तिलाल जी चौधरी, चेन्नई (तमि.)

24,000/- श्रीमती कमलादेवी श्री लालराज जी चौधरी, मुम्बई द्वारा दिनांक 28 मई, 2009 को पीपाड़ सिटी में हुई दीक्षा के उपलक्ष्य में भेंट।

24,000/- श्रीमती शोभादेवी गौतमचन्द जी कवाड़, चेन्नई (तमि.) द्वारा दिनांक 28 मई, 2009 को पीपाड़ सिटी में हुई अपनी पुत्री सिन्धु जी कवाड़ की दीक्षा के उपलक्ष्य में भेंट।

12,000/- श्री पदमराज जी मेहता, बैंगलोर द्वारा दिनांक 28 मई, 2009 को पीपाड़ सिटी में हुई दीक्षा के उपलक्ष्य में भेंट।

12,000/- श्री मांगीलाल जी, राधा बाई जी कोठारी, चेन्नई (तमि.) द्वारा दिनांक 28 मई, 2009 को पीपाड़ सिटी में हुई दीक्षा के उपलक्ष्य में भेंट।

12,000/- श्री धर्मीचन्द जी, किशोरचन्द जी तातेड़, मिलादुधुरइ(तमि.) द्वारा दिनांक 28 मई, 2009 को पीपाड़ सिटी में हुई दीक्षा के उपलक्ष्य में भेंट।

12,000/- श्रीमती सूरजदेवी गौतमचन्द जी मुणोत, चेन्नई (तमि.) द्वारा दिनांक 28 मई, 2009 को पीपाड़ सिटी में हुई दीक्षा के उपलक्ष्य में भेंट।

12,000/- श्री भीकमचन्द जी, पृथ्वीचन्द जी गोलेछा, जोधपुर (राज.) द्वारा दिनांक 28 मई, 2009 को पीपाड़ सिटी में हुई दीक्षा के उपलक्ष्य में भेंट।

12,000/- श्रीमती चन्द्रकांता जी मदनलाल जी बाघमार (कोसाना वाले), चेन्नई (तमि.) द्वारा दिनांक 28 मई, 2009 को पीपाड़ सिटी में हुई दीक्षा के उपलक्ष्य में भेंट।

12,000/- श्री रमेशकुमार जी चौधरी, मैसूर द्वारा श्रीमती संतोष बाई जी चौधरी के वर्षीतप पारणे के उपलक्ष्य में भेंट।

12,000/- श्री उगमचंद जी मुणोत, चेन्नई (तमि.)

12,000/- श्रीमती पुष्पा जी मुणोत, चेन्नई (तमि.)

12,000/- श्री अशोक कुमार जी छाजेड़, चेन्नई(तमि.)

12,000/- श्रीमती इन्दु देवी जी छाजेड़, चेन्नई (तमि.)

12,000/- श्री मांगीलाल जी राजेशकुमार जी, महेन्द्र जी चोपड़ा, पाली (राज.)

12,000/- श्री मोहनराज जी रणजीतराज जी मेहता, जोधपुर (राज.)

12,000/- श्री महावीर जी छाजेड़, चेन्नई (तमि.)

12,000/- श्रीमती मंजू जी कोठारी, जयपुर (राज.)

12,000/- श्री रवीन्द्र जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)

12,000/- श्रीमती सागरमल जी, प्रकाशदेवी जी छाजेड़, चेन्नई (तमि.)

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़,* 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

श्रावण कृष्णा 8	बुधवार,	15.07.2009	अष्टमी
श्रावण कृष्णा 14	मंगलवार,	21.07.2009	चतुर्दशी, पक्खी
श्रावण कृष्णा 30	बुधवार,	22.07.2009	पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा.की 83 वीं पुण्य तिथि।
श्रावण शुक्ला 8	बुधवार,	29.07.2009	अष्टमी
श्रावण शुक्ला 14	मंगलवार,	04.08.2009	चतुर्दशी
श्रावण शुक्ला 15	बुधवार,	05.08.2009	पक्खी

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 65 से भी अधिक वर्षों से सन्त–सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त–सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 17 अगस्त से 24 अगस्त 2009 तक रहेंगे। अतः देश–विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 25 जुलाई 2009 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहरका नाम.....जिला.....प्रान्त.....
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता.....
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं.....
.....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं.....
.....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन.....
.....
6. समस्त जैन घरों की संख्या.....
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.....
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव.....
10. अन्य विशेष विवरण.....

आवेदन करने का पता–संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 2624891, 2633679, फैक्स- 2636763, मोबाइल-94141-26279

विशेष– दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- सूरजमल जी भंडारी, फोन नं. 25295143 (स्वाध्याय संघ), 25381001, मो.9443336674

स्वाध्यायियों के लिये आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायी बन्धुओं से निवेदन है कि आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधारकर अपनी अमूल्य सेवायें संघ को प्रदान करावें। बाहर गाँव पधारने से आपकी धर्म-साधना तो सुचारु रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे। आप अपनी पर्युषण स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय, जोधपुर- के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अनूठा दान छात्रवृत्ति का
जीवन बनता एक विद्यार्थी का

Surana TMT - A perfect vaccination for your constuctions.

• Excellent Bond Strength • Greater resistance to Corrosion • Superior Weldability • Excellent Ductility and High Bendability • Uniform properties throughout length • Enhanced Resistance to Fire • Ability to withstand Earthquakes • Bigger savings in steel consumption (almost 18%) • Available in Fe 415 / 500 / 550 / 600 grades with IS 1786 standard

For marketing enquiries, contact : 91-44-2855 0715 / 2855 0736

Corporate Head Office :
29, Whites Road, Second Floor, Royapettah, Chennai - 600 014.
Phone : 91-44-2852 5127 (3 Lines) / 2852 5596 Fax : 91-44-2852 0713
E-mail : steelmktg@surana.org.in / silimited@surana.org.in
Website : www.surana.org.in

Surana TMT - *Lifeline of every Construction...*

IS:1786 ISI

SURANA™ yes, the best TMT RE-BARS

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयपुरी हस्ती जयपुरी हीरा जयपुरी मोती

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का॥

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

N0. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

ज्ञान का एक दीया जलाइये
सहयोग के लिए आगे आइए
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का
लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बन्धुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए Rs. 12,000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) से निम्नांकित पते पर भेंजे, पुण्यधन कमाइऐं।

Ashok Kavad
PRITHVI EXCHANGE
33, Montieth Road, Egmore, CHENNAI-600008
Tele Fax 044-43434249, 09381041097

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)

098407 18382

2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 66 ★ अंक : 7 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जुलाई, 2009 ★ श्रावण 2066

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

KALPATARU
RIVERSIDE
Old Mumbai - Pune highway, Panvel

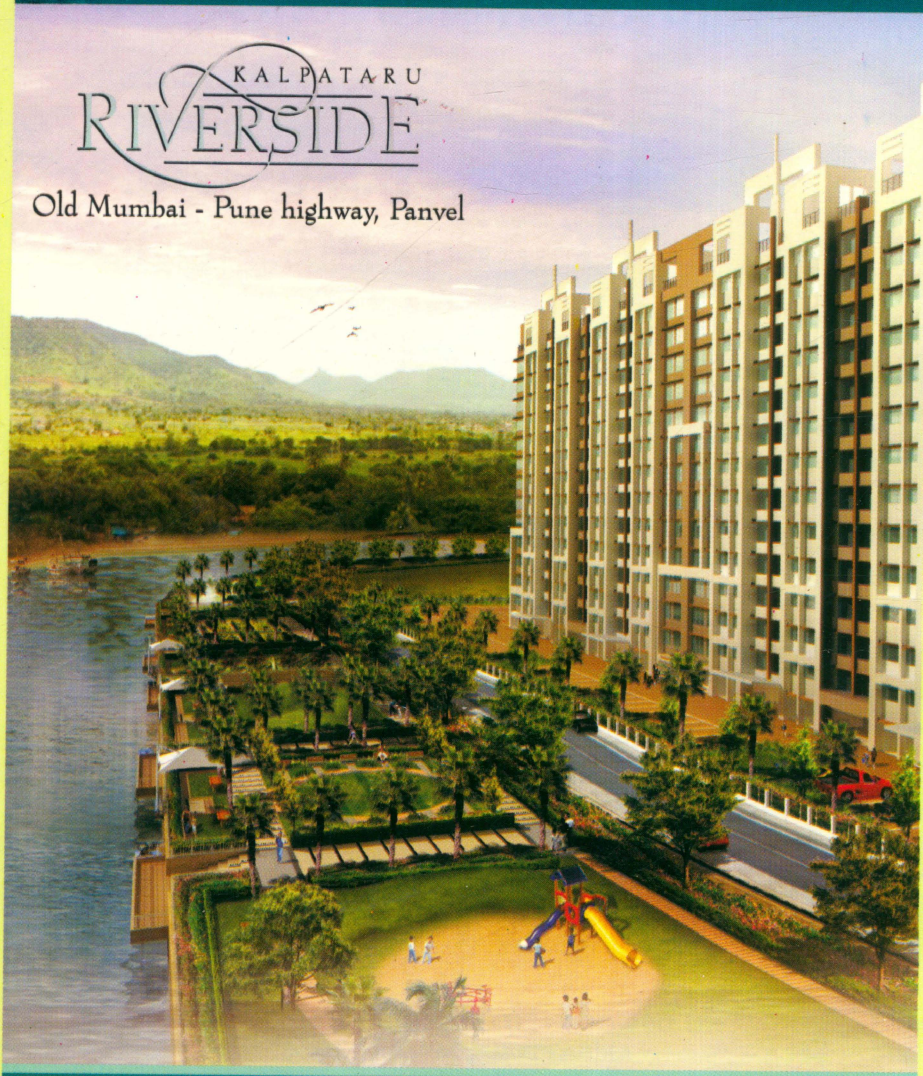

KALPA-TARU®
101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East),
Mumbai - 400 055. ● Tel.: 3064 3065, 98339 45470 ● Fax: 3064 3131
Website: www.kalpataru.com

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।